बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

हिन्दी (50 अंक) (Hindi – 50 Marks)

Set - 1-10

सेट -1 (प्रश्न)

हिंदी (50 अंक)

समय : 1 घंटा 37.5 मिनट पूर्णांक:50

परीक्षार्थी के लिए निर्देश:

Instructions to the candidate:

1.परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

Candidates are required to give their answer in their own words as far as practicable.

2.दाहिनी ओर हाशिये पर दिए हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

Figures in the right hand margin indicate full marks.

3.परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

Right question number with every answer.

1.संक्षेपण करें:- 05

मेरा यह मतलब कदापि नहीं कि हमें विदेशी भाषाएं सीखनी ही नहीं चाहिए। नहीं, आवश्यकता, अनुकूलता, अवसर और अवकाश होने पर हमें एक नहीं अनेक भाषाएं सीख कर ज्ञानार्जन करना चाहिए। ज्ञान कहीं भी मिलता हो उसे ग्रहण कर लेना चाहिए। परंतु यह अपनी भाषा और उसी के साहित्य की उन्नति से हो संभव सकता है। ज्ञान, विज्ञान, धर्म और राजनीति की भाषा सदैव लोकभाषा ही होनी चाहिए। अतएव अपनी भाषा के साहित्य की सेवा और अभिवृद्धि करना, सभी दृष्टियों से हमारा परम धर्म है।

2.भावार्थ लिखें:- 7.5

नाद रीझि तन देत मृग, नर धन हेतु-समेत।
ते रहीम पसु ते अधिक, रिझेहु कछु न देत।।

अथवा

रवि जग में शोभा सरसाता सोम सुधा बरसाता।
सब हैं लगे कर्म में कोई निष्किय दुष्ट ना आता ।
है उद्देश्य नितांत तुच्छ तृण के भी लघु जीवन का।
उसी पूर्ति में वह करता है अंत कर्ममय तन का।

3. 'गौरा' शीर्षक रेखाचित्र का सारांश प्रस्तुत कीजिए। 7.5

अथवा

"रवींद्र नाथ ठाकुर महान पुरुष हैं।" स्पष्ट करें।

4. मिलान करें:- 5x1=5

1. जीवन का झरना	(क)प्रेमचंद
2. गौरा	(ख)आरसी प्रसाद सिंह
3. मंगर	(ग)सुमित्रानंदन पंत
4. भारतमाता ग्रामवासिनी	(घ)महादेवी वर्मा
5. पंच परमेश्वर	(ड़)रामवृक्ष बेनीपुरी

5.विलोम शब्द लिखें:- 5x1=5

(क) सार्थक (ख) पाताल (ग) रक्षक (घ) अदृश्य (ड़) प्रेम

6.पर्यायवाची शब्द लिखें:- 5x1=5

(क)अग्नि (ख)सरस्वती (ग)नयन (घ)पर्वत (ड़)शिव

7. मुहावरों से वाक्य बनाकर अर्थ स्पष्ट करें:- 5x1=5

1. हाथ पर हाथ धरकर बैठना
2. सिर पर सवार होना
3. रंगे हाथों पकड़ ना
4. बाल बांका न होना
5. पेट में चूहे कूदना

8. किसी एक पर निबंध लिखें:- 10

1. नशाबंदी
2. छात्र और राजनीति
3. प्रदूषण
4. समाचार पत्र
5. दिवाली

सेट -1 (उत्तर)

हिंदी (50 अंक)

1. **शीर्षक**--ज्ञानार्जन

हमें ज्ञानार्जन के लिए किसी भी भाषा को सीखने से परहेज नहीं करना चाहिए। सभी भाषाओं से ज्ञान संग्रह उपयोगी हैं। परंतु किसी राष्ट्र का कल्याण उसकी भाषा से ही संभव हैं, अतः अपनी भाषा में साहित्य और ज्ञान की वृद्धि करनी चाहिए ।

2. प्रस्तुत पंक्तियाँ विद्वान कवि रहीम द्वारा रचित हैं। इसमें उन्होंने धन के लिए हाय-हाय करने वाले लोभी व्यक्तियों को पशुओं से भी अधिक निकृष्ट माना है। कवि कहते हैं कि मधुर संगीत सुनकर हिरण अपने प्राण दे देता है। लेकिन धन का लालची व्यक्ति प्रसन्न होकर भी कुछ नहीं देता है।

अथवा

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि रामनरेश त्रिपाठी कहते हैं कि सूर्य इस संसार को शोभा प्रदान करता है और चंद्रमा अमृत की वर्षा करता है। अपने-अपने काम में सभी लगे हुए हैं। कोई भी आलसी होकर बैठा हुआ नहीं रहता है। अत्यंत तुच्छ घास के इस छोटे से जीवन का भी उद्देश्य दिखलाई पड़ता है और उसी उद्देश्य की पूर्ति में वह अपने कर्तव्यमय जीवन का अंत कर देती है।

3. प्रस्तुत रेखाचित्र में महादेवी वर्मा ने अपनी छोटी बहन से प्राप्त गाय (गौरा) का अदभुत वर्णन किया है। साथ ही गौरा की निर्मम मृत्यु के परिप्रक्ष्य में मानव की स्वार्थ लिप्सा का रहस्योद्घाटन किया है।

गौरा, एक सफेद, चमकदार रोमों वाली बाछी थी। उसे सफेद-लाल गुलाबों की माला पहना कर, माथे पर टीका लगाकर और आरती उतार कर स्वागत किया गया। उसका नामकरण भी हुआ, 'गौरांगिनी' या 'गौरा' के नाम से वह प्रसिद्ध हो गई।

गौरा केवल देखने में सुंदर नहीं थी, बल्कि उसका स्वभाव भी अच्छा था, अन्य पालतू पशु-पक्षियों के साथ घुल-मिल गई। कुत्ते-बिल्लियाँ उसके पेट के नीचे

और पैरों के बीच में खेलते रहते हैं, जिनका संपर्क सुख पाकर वह अपनी आंखें मूंदे खड़ी रहती हैं।

गौरा लेखिका के यहां रहते-रहते सभी लोगों के पैरों की आहट पहचानती थी। गौरा 1 वर्ष के बाद मां बनी और लाल रंग के बच्चे को जन्म दी, जिसका नाम लालमणि रखा गया। वह प्रतिदिन 12 सेर दूध देने लगी थी। लालमणि के लिए कई सेर दूध छोड़कर जो दूध होता उससे आस-पास के बाल-गोपाल से लेकर कुत्ते बिल्ली सभी तृप्त होते।

जब गौरा के दुग्ध दोहन की समस्या खड़ी हुई तब उसके लिए ग्वाले को ही नियुक्त कर दिया गया, जो पूर्व में दूध दे जाता था।

किंतु गौरा ने दो-तीन महीने के बाद दाना-चारा खाना ही बंद कर दिया, परिणामस्वरुप वह कमजोर होती चली गई। डॉक्टर से उसे दिखलाया गया, एक्सरे से यह पता चला कि उसे सुई खिला दी गई है। इसका प्रमाण तो नहीं था कि किसने खिलाई है, लेकिन ग्वाले के भाग जाने से यह विश्वास हो गया था कि यह ग्वाले का ही कारनामा है। आखिरकार गौरा मृत्यु के साथ संघर्ष करती हुई एक दिन मर गई। उसकी मृत्यु का दुख सहना लेखिका के लिए बहुत कठिन हो गया।

अथवा

कविवर 'रवींद्रनाथ ठाकुर'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित एक अत्यंत प्रेरक निबंध है। इसमें बाबू की महानता को रेखांकित किया गया है।

'होनहार वीरवान के होत चिकने पात' कहावत के अनुसार रवींद्र बाबू बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे।

रवींद्र बाबू देश के बड़े भक्त थे। स्वदेश-भक्ति पर उन्होंने अनेक कविताएं लिखी हैं। मातृभूमि के वे पक्के आराधक थे। उनकी स्वदेश भक्ति संकीर्ण नहीं थी।

रवींद्र बाबू की महानता का आधार समर्पित भाव से साहित्य साधना थी। सरस्वती की आराधना करके वह महान बने हैं। बंगाल ने उनके प्रति यथेष्ट सम्मान भी प्रकट किया है। हाथी दांत पर खचित अभिनंदन पत्र रजत-अर्ध्यपात्र, सोने का एक कमल और एक माला उन्हें भेंट की गई। वस्तुतः सरस्वती का ही यह सम्मान है। सरस्वती मंदिर का वह पुजारी सचमुच धन्य है जिसे सम्मान अपने देश और जाति वालों से प्राप्त होता है।

विश्वकवि के गौरव से विभूषित रवींद्रनाथ ठाकुर अपने बहुआयामी व्यक्तित्व के कारण महान हैं। साहित्य की साधना उन्होंने जिस सेवा-भाव से की, वह सेवा उनके द्वारा मनुष्यता की सेवा की दृष्टि-पथ में रखकर ही की गई है जिस कारण उनकी आज अद्वितीय कवि, लेखक और महान पुरुष के रूप में पहचान है।

4. जीवन का झरना- आरसी प्रसाद सिंह
गौरा- महादेवी वर्मा
मंगर- रामवृक्ष बेनीपुरी
भारतमाता ग्रामवासिनी- सुमित्रानंदन पंत
पंच परमेश्वर- प्रेमचंद

5. सार्थक- निरर्थक
पाताल- आकाश
रक्षक- भक्षक
अदृश्य- दृश्य
प्रेम- घृणा

6. अग्नि- पावक, अनल
सरस्वती- शारदा, वीणापाणि,
नयन- आंख, नेत्र,
पर्वत- पहाड़, शैल,
शिव- शंभु, महादेव,

7.

(क) काहिल होकर बैठना- परीक्षा में पास होना चाहते हैं तो मेहनत कीजिए, हाथ पर हाथ धरे बैठने से काम नहीं चलेगा।

(ख) बुरी तरह से पीछे पड़ना- मैंने तुम्हें थोड़ी शह क्या दी कि तुम मेरे सिर पर सवार हो गए।

(ग) अपराध करते समय ही पकड़ना- वह चोरी करने निकला था पर मैंने रंगे हाथों पकड़ लिया।

(घ) जरा भी हानि ना होना- भगवान की कृपा रही तो मेरा बाल भी बाँका नहीं होगा।

(ड़) भूख लगना- मां मुझे जल्दी खाना दीजिए मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं।

8.

1. **नशाबंदी**

आज के युग में मद्य सेवन का प्रवेश हो गया है। लेकिन ऐसा नहीं है कि मद्य सेवन की प्रवृत्ति आज की देन ही है। अपितु मद्य सेवन की प्रवृत्ति दो शताब्दियों पूर्व की है। हमारे प्राचीन धर्म ग्रंथों में भी 'सोम' और 'सुरा' शब्दों का उल्लेख हुआ है। जो इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि हमारे पूर्वज मादक पदार्थों के प्रेमी थे, और इसका सेवन खुले रुप में किया करते थे। यह भी सत्य है कि आज की तरह सोमरस पान के लिए बड़े बड़े संकट मंडराते थे। मद्य सेवन का प्रभाव उत्तेजना प्रदान कर बकवास और मुसीबतों को आमंत्रित करता हैं।

मादक मद्य द्रव्य का सेवन निरंतर क्यों बढ़ रहा है? जबकि इसके परिणाम केवल भयानक ही नहीं अपितु प्राणहारी भी हैं। मादक मद्य सेवन के प्रमुख कारण एक नहीं अनेक हैं। कुछ तो कारण ऐसे हैं जो यथार्थ और स्वाभाविक लगते हैं जैसे निरंतर दुख, अवसाद, पीड़ा और उलझन के कारण परेशान और लाचार होकर मन की शांति के लिए नशा का सेवन किया जाता है। कुछ ऐसे भी कारण है जो अस्वाभाविक और असंगत

लगते हैं, जैसे शौकवश किसी की नकल करके इसकी लत में पड़ जाना। मद्य सेवन के कारण जो भी हो इससे किसी प्रकार का कल्याण संभव नहीं है। इसके सेवन से गरीबी, निराशा, तनाव,बेरोजगारी, हीनभावना, कुंठा, अभाव, अवसाद, व्याकुलता, शोक आदि से मुक्ति मिल नहीं सकती है । मादक द्रव्यों या पदार्थों के सेवन करने का एक मुख्य कारण है समाज की विषमता। समाज में सभी एक समान नहीं है, कहीं अमीरी है तो कहीं गरीबी, और कहीं साक्षरता है तो कहीं निरक्षरता है। दूसरी और धनी और संपन्न वर्ग निम्न और अभावग्रस्त व्यक्तियों का शोषण करते हैं। वह गरीब और दीन-दुखी कर्जदार व्यक्तियों को तनाव और अशांति के घेरे में डालकर मादक द्रव्यों का सेवन करने के लिए विवश कर देते हैं।

मद्य सेवन की दुष्प्रवृत्ति को रोकने के लिए व्यापक स्तर पर सामाजिक जागृति आवश्यक है। यह व्यक्तिगत, संपर्क आकाशवाणी, दूरदर्शन, समाचार-पत्रों सहित अनेक प्रकार के इश्तिहारों के द्वारा अधिक सफलता के साथ कार्यान्वित की जा सकती है। इसके साथ ही साथ काव्य-गोष्ठियों, नाटकों, कवि-सम्मेलनों सहित जागृति के शिविरों द्वारा भी नशाबंदी की दुष्प्रवृत्ति को रोका जा सकता है।

2.**छात्र और राजनीति**

आधुनिक काल में राजनीतिक का अर्थ कहीं अधिक व्यापक हो गया है। आज राजनीति शब्द राज्य के सत्ता संबंधी समस्त गतिविधियों का परिचायक हो गया है। सरकार निर्माण से लेकर सरकार के विभिन्न अंगों द्वारा किए जाने वाले समस्त कार्य राजनीति के अंतर्गत आते हैं। स्पष्ट है कि राजनीति आधुनिक जीवन की एक अनिवार्यता बन गई है।

क्या विद्यार्थियों को भी इस में भाग लेना चाहिए? यह आज का एक ज्वलंत प्रश्न है। विगत कुछ वर्षों में विद्यार्थियों ने राजनीति में सक्रिय भाग लिया है, जो युगीन जागरूकता का परिचायक है। विद्यार्थियों का पढ़ाई त्यागकर हड़ताल, पथराव ,आगजनी और नारेबाजी में संलग्न होना-यह उस प्रश्न को अत्यंत महत्वपूर्ण बना देता है कि विद्यार्थी को राजनीति में भाग लेना चाहिए अथवा नहीं?

कुछ लोग विद्यार्थियों के राजनीति में भाग लेने के विरोधी हैं। उनके अनुसार राजनीति धूर्तता की क्रीड़ा भूमि है। विद्यार्थियों को इस दूषित वायु से दूर रखने का

यथासंभव प्रयास किया जाना चाहिए। कुछ लोगों का विचार है कि विद्यार्थियों को राजनीति में भाग लेना चाहिए, ताकि विद्यार्थी जीवन में ही इस क्षेत्र में निपुणता प्राप्त करके एक आदर्श नागरिक के रूप में अपने राजनीतिक कर्तव्यों का निर्वाह कर सकें। एक तीसरे विचार के अनुसार विद्यार्थियों को राजनीतिक सिद्धांतों का अध्ययन तो करना चाहिए किंतु उन्हें व्यावहारिक राजनीतिक में भाग लेने की अनुमति नहीं प्रदान की जानी चाहिए।

निष्कर्षतः विद्यार्थियों द्वारा राजनीति में भाग लेना न केवल भविष्य के लिए उपयोगी है, बल्कि वर्तमान के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। यह वर्तमान समय की माँग भी है।

3.**प्रदूषण**

आज संपूर्ण विश्व के लिए जो सर्वाधिक चिंता का विषय है उसे हम पर्यावरण की समस्या कहते हैं। इसके कारण मानव का अस्तित्व खतरे में पड़ता जा रहा है। हम जिस प्राकृतिक वातावरण में रहते हैं, अर्थात हमारे आसपास चारों ओर जो प्राकृतिक आवरण है, उसे हम पर्यावरण कहते हैं। वायुमंडल, वन, पर्वत, नदियाँ, जल आदि इसके अंग कहलाते हैं। मानव ने अपनी सुख-सुविधा के लिए जो कुछ किया है, उसी से पर्यावरण प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हो गई है।

पर्यावरण के घटकों के संतुलन बिगड़ने को ही पर्यावरण प्रदूषण कहा जाता है। पर्यावरण प्रदूषण के कई रुप हैं- वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, मृदा (मिट्टी) प्रदूषण, रेडियोधर्मी प्रदूषण आदि। प्रदूषण के कई कारण हैं। सर्वप्रथम वृक्षों की कटाई ही इसका बड़ा कारण है। वैध अथवा अवैध तरीकों से बड़े पैमाने पर जंगलों की कटाई के कारण पर्यावरण-संतुलन में बाधा उत्पन्न हुई है। पेड़-पौधे वायुमंडल के कार्बन का अवशोषण करते हैं। इससे एक ओर वायुमंडल अर्थात वायु की स्थिति सामान्य बनी रहती है तथा दूसरी ओर इससे वर्षा भी होती है। इसी तरह इंधन के रूप में लकड़ी का प्रयोग, बढ़ती हुई गाड़ियों के प्रयोग से धुआँ तथा बड़े पैमाने पर जहरीले और हानिकारक गैसों के वातावरण में मिलने से वायु प्रदूषण हो रहा है। बड़े-बड़े नगरों और औद्योगिक कारखानों से निकलनेवाले अवशेष नदियों में गिराए जा रहे हैं। इससे जल प्रदूषण का खतरा उत्पन्न हो गया है। वाहनों और कल-कारखानों से होनेवाली तेज आवाज के कारण

ध्वनि प्रदूषण की समस्या बढ़ रही है। इसी तरह रसायनिक और कीटनाशक औषधियो के प्रयोग से मिट्टी भी प्रदूषित हो रही है।

पर्यावरण प्रदूषण से ओजोन संकट उत्पन्न हो रहा है। धरातल से लगभग 25 किलोमीटर ऊपर एक 20 किलोमीटर का गैस आवरण है, जिससे धरती की सुरक्षा होती है। इस आवरण को ओजोनमंडल कहा जाता है। इससे धरती के ऊपर के वायुमंडल की सुरक्षा होती है तथा सूर्य की किरणों को इसे पार करना पड़ता है। जिससे उसकी हानिकारक किरणें धरती पर नहीं आ पाती हैं। आज ओज़ोन मंडल में छेद हो गया है। धरती पर फैले पर्यावरण प्रदूषण के कारण ओजोन हमारी सुरक्षा करने में असमर्थ हो रहा है। इसी तरह अन्य तरह के प्रदूषण से मानव और प्रकृति उत्पादों पर खतरा उत्पन्न हो रहा है। खतरा तो यहां तक बढ़ गया है कि तेजाबी वर्षा का भय उत्पन्न हो रहा है।

पर्यावरण प्रदूषण से बचाव हो सकता है। मानव ने ही पर्यावरण को प्रदूषित किया है। यही इसमें सुधार भी ला सकता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि अधिक से अधिक वृक्ष लगाए जाएं। वनों की सुरक्षा की जाए। अंधाधुंध वन-कटाई को रोका जाए। वाहनों और औद्योगिक संस्थानों से निकलनेवाला धुंआ हमारे वायुमंडल को प्रभावित कर रहा है। इस पर ध्यान दिया जाए। शहरों के नालों और औद्योगिक संस्थानों के मलबे को नदियों में गिरने से रोका जाए। इसी तरह अन्य उपाय भी किए जा सकते हैं।

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या विश्व-स्तर की समस्या है। इस पर संपूर्ण विश्व को सोचना होगा। यही कारण है कि सभी देशों ने अपने-अपने यहां पर्यावरण सुरक्षा को एक अभियान रूप में लिया है। इस संबंध में भारत ने इसके लिए कई कड़े कदम उठाए हैं। जैसे 1974 ईस्वी में जल प्रदूषण निवारण और नियंत्रण अधिनियम, 1986 ईस्वी में पर्यावरण संरक्षण अधिनियम आदि की व्यवस्था की गई है। इस तरह, पर्यावरण प्रदूषण निश्चय ही मानव जाति को क्या, संपूर्ण चराचर जगत के लिए चिंतनीय विषय बन गया है।

4.**समाचार पत्र**

समाचार पत्र के नाम से ही इसका स्वरूप उभर कर सामने आ जाता है। इसे आम बोलचाल की भाषा में अखबार कहते है। जिसका अभिप्राय है ख़बरों का खजाना। इन दोनों ही नामों से स्पष्ट हो जाता है कि समाचार पत्र वह पत्र है जिसमें विश्व की घटित घटनाओं का सूचना के रूप में विवरण प्रस्तुत किया जाए। आज के मानव जीवन में अखबार या समाचार पत्रों का महत्वपूर्ण स्थान है। जिस प्रकार वस्त्र और भोजन हमारे

दैनिक जीवन की प्रमुख आवश्यकताएं हैं, ठीक उसी प्रकार समाचार पत्र भी आज हमारे जीवन के अभिन्न अंग बन गए हैं।

समाचार पत्र का जन्म कब, कहां और क्यों हुआ ? यह तो दावे के साथ नहीं कहा जा सकता। फिर भी यह निश्चित है कि समाचार पत्र आधुनिक सभ्यता की देन है। जब विश्व के देश और संपूर्ण मानव समाज धीरे-धीरे वैचारिक रूप से एक-दूसरे के निकट आए, तब लोगों के मन में एक दूसरे के विषय में जानने की जिज्ञासा हुई। इन्हीं जिज्ञासाओं के परिणाम स्वरुप समाचार पत्र का जन्म हुआ। इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं। जिस विश्व में हम रह रहे हैं, वह परस्पर एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। एक के बिना दूसरे का कार्य नहीं चलता। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि हम एक दूसरे को जानें और समझें। दूर रहकर भी निकट आने का एकमात्र सस्ता माध्यम समाचार पत्र ही है। भारत में समाचार पत्र का जन्म अंग्रेजी राज्य के समय 1720 ईस्वी में हुआ।

समाचार पत्रों के कई रुप आज प्रचलित हैं। इसमें प्रमुख है- दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक। परंतु लोगों में दैनिक समाचार पत्रों के प्रति अधिक रुचि है। क्योंकि वे शीघ्रातिशीघ्र विश्व के अन्य देशो अथवा देश के अन्य भागों से अपने को जुड़ा हुआ देखना चाहते हैं। साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक पत्रों में समाचारों के अतिरिक्त अन्य उपयोगी सामग्री का भी प्रकाशन होता है। सामयिक विषयों पर सामग्री इन पत्र-पत्रिकाओं की प्रमुख विशेषता है।

समाचार पत्र के माध्यम से विश्व के देशों में बंधुत्व का भाव जागृत करने में बहुत सहायता मिली है। आज विश्व के विभिन्न देशों में जो निकटता बढ़ रही है, इसके मूल में समाचार पत्रों की भूमिका ही है। एक समय था जब लोग संकुचित राष्ट्रीयता की भावना से पढ़ते थे, परंतु आज राष्ट्रीयता की भावना के साथ लोगों में अंतराष्ट्रीयता की भावना का प्रसार व प्रचार हो रहा है। किसी भी विषय पर विश्वभर की प्रतिक्रिया समाचार पत्र एक स्थान से दूसरे स्थान तक आसानी से पहुंचा देते हैं।

विज्ञापन के क्षेत्र में समाचार पत्रों ने क्रांति ला दी है। संसार के किसी भी कोने में बननेवाली सामग्री विज्ञापन का आश्रय लेकर संपूर्ण विश्व में छा जाती है। बड़े-बड़े व्यापारी एवं उद्योगपति अपने संस्थानों के विज्ञापन पर पानी की तरह पैसा बहाते देखे जाते हैं। इस प्रकार समाचार पत्र व्यापारिक एवं व्यावसायिक क्षेत्रों के लिए अत्यंत उपयोगी साधन बन गए हैं।

समाचार पत्र गरीबों और श्रमिकों के लिए तो एक अमोघ अस्त्र तथा वरदान है। वह समाचार पत्रों के माध्यम से समय-समय पर अपनी समस्याओं को प्रस्तुत करते रहते

हैं। बड़े-बड़े आंदोलनों के पीछे समाचार पत्रों की शक्ति छिपी रही है। समाचार पत्र यदि अपनी भूमिका को उचित ढ़ंग से निभाते रहें, तो कम से कम प्रजातांत्रिक पद्धतिवाले देशों में कभी अत्याचारों को आश्रय न मिले। पर, दुर्भाग्य से समाचार पत्र अपने इस महान दायित्व को कभी-कभी भूल बैठते हैं। समाचार पत्र लोकतंत्र का हथियार माना जाता है।

समाचार पत्रों की शक्ति असीम है। शक्ति की यह असीमता प्रायः समाचार पत्रों को भटका देती है। सभी बड़े-बड़े समाचार पत्र पर आज बड़े-बड़े उद्योगपतियों का स्वामित्व है। ये उद्योगपति सरकार के परमभक्त होते हैं। इन सबों का परिणाम यह निकलता है कि जनता की आवाज दबी रह जाती है और अखबार केवल सरकार का गुणगान करने में लगे रहते हैं।

समाचार पत्र आधुनिक समाज के सच्चे साथी हैं। यह प्रजातंत्र तथा मानव अधिकारों के सजग प्रहरी है। आज हम विश्वबंधुत्व की जिस भावना को हृदय में लेकर प्रगति के जिन सपनों की ओर बढ़ रहे हैं, उनके निर्माण में समाचार पत्रों का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है।

सेट -2 (प्रश्न)

हिंदी (50 अंक)

समय : 1 घंटा 37.5 मिनट पूर्णांक:50

परीक्षार्थी के लिए निर्देश:

Instructions to the candidate:

1.परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

Candidates are required to give their answer in their own words as far as practicable.

2.दाहिनी और हाशिये पर दिए हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

Figures in the right hand margin indicate full marks.

3.परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

Right question number with every answer.

1.संक्षेपण कीजिए:- 05

आज मानव, मानव से दूर हटता जा रहा है। वह भूलता जा रहा है कि देश, धर्म, जाति या वर्ण भिन्न होते हुए भी हम सर्वप्रथम मानव है। हमारी भावनाएं एक हैं। धन, धर्म या सत्ता के मद में एक दूसरे को हेय समझने लगा है। वह भूल जाता है कि दूसरे मानव में भी स्वाभिमान है। उसे भी अपनी संतान से प्रेम है। वह भी अपने समाज और देश के लिए कुछ करना चाहता है। जिस दिन मानव यह समझ जाएगा कि एक आकाश के नीचे रहने वाला सभी मानव परस्पर भाई-भाई हैं, उसी दिन वह सच्चा मानव कहलाने का अधिकारी बन जाएगा।

2.भावार्थ लिखिए:- 7.5

रहिमन, जिह्वा बावरी, कहि गई सरग-पताल।
आपु तो कहि भीतर गयी, जूती खात कपाल ।।

अथवा

निर्झर कहता है- "बढ़े चलो!
तुम पीछे मत देखो मुड़कर।"
यौवन कहता है- "बढ़े चलो!
सोचे मत होगा क्या चलकर।"

3. 'मंगर' पाठ का सारांश लिखिए। 7.5

अथवा

अलगु और जुम्मन की मित्रता किस प्रकार टूटी? क्या अंत में दोनों की मित्रता बनी रही?

4. मिलान करें :- 5x1=5

1. सुंदर का ध्यान कहीं सुंदर	(क) राम नरेश त्रिपाठी
2. हिमालय का संदेश	(ख)हरिशंकर परसाई
3. जीवन-संदेश	(ग)गोपाल सिंह 'नेपाली'
4. कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर	(घ)रामधारी सिंह 'दिनकर'
5. ठिठुरता हुआ गणतंत्र	(ड़)हजारी प्रसाद द्विवेदी

5. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाकर लिंग स्पष्ट कीजिए:- 5x1=5

(1)आंख (2)ओस (3)कपूर (4)खीर (5)घी

6. निम्नलिखित अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए:- 5x1=5

1. जिसको किसी का भय नहीं है-
2. पीछे-पीछे चलने वाला -
3. आशा से अधिक-
4. नहीं मरने वाला-
5. जो ईश्वर में विश्वास करता है-

7. विलोम शब्द लिखिए:- 5x1=5

1. हिंसा (2) वाचाल (3) सजीव (4) जागृति (5) कृतज्ञ

8. किसी एक पर निबंध लिखिए:- 10

(1)समाज सेवा (2)शिक्षा और चरित्र निर्माण (3)आतंकवाद (4)होली (5)वर्षा ऋतु

सेट -2 (उत्तर)

हिंदी (50 अंक)

1. **शीर्षक** - सच्चा मानव

मानव मानव में कोई अंतर नहीं है। धन, धर्म और सत्ता के मद में वह भूल जाता है कि मानव अपनी संतान, देश और समाज के लिए कुछ करना चाहता है। यह समझ जिस दिन आ जाएगा उसी दिन से मानव 'सच्चा मानव' कहलाने लगेगा।

2.

प्रस्तुत पंक्तियों में रहीम कहते हैं कि जिह्वा के महत्व को समझना चाहिए। क्योंकि यह जीभ अत्यंत ही बावरी है। यह मनुष्य को अपनी उंगली पर सदैव नचाती रहती है। अच्छी और मधुर बोली हमें सम्मानित करती है। हमारी प्रतिष्ठा, हमारे भाव और भाषा से बढ़ती है। इसके विपरीत यदि कोई अपनी जिह्वा से अपशब्द निकालता है, तो ऐसे व्यक्ति को जूतों से मार 'सिर पर' पड़ती है। स्वर्ग-नरक के भेद की चर्चा मनुष्य करता है तो आपस में विवाद उत्पन्न हो जाता है। ऐसी स्तिथि में वह तो भीतर चली जाती है और उसके कपार को चोट खानी पड़ती हैं।

अथवा

प्रस्तुत पद्य पंक्तियाँ आरसी प्रसाद सिंह रचित 'जीवन का झरना' से उद्धृत हैं। कविता में कवि सतत् गतिशीलता का संदेश देते हैं। जीवन उस झरने के समान है जो अपने लक्ष्य तक पहुंचने की लगन लिए पथ की बाधाओं को पार करते हुए आगे बढ़ता है। गति ही जीवन है और स्थिरता ही मृत्यु। अतः मनुष्य को भी निर्झर के समान हमेशा गतिमान रहना चाहिए।

निर्झर 'बढ़े चलो,बढ़े चलो,' कहता है। आगे बढ़ने वाले पीछे मुड़कर नहीं देखते। युवावस्था भी 'बढ़े चलो, बढ़े चलो,' कहती हैं। आगे चलकर क्या होगा, यह सोचना नहीं है। निर्झर बहता है और निरंतर बहते हुए वह मनुष्य को भी उसी तरह आगे बढ़ते रहने को कहता है।

3.

रामवृक्ष बेनीपुरी जन-मानस के कलाकार थे। लेखक जानते थे कि भारत का जीवन गांवों में बसता है। बेनीपुरी जी ने झोपड़ियों की ओर ध्यान दिया। अब तक जिन पात्रों की अपेक्षा की गई थी, बेनीपुरी जी ने उनका उद्धार किया। मंगर एक हलवाहा है। उसके दारूण जीवन कथा को अत्यंत मार्मिक अभिव्यक्ति प्रदान की है। मंगर बाहर से भले ही काला-कलूटा हो लेकिन उसकी आत्मा को उज्ज्वलता, उसके चेहरे की कालिमा को अपूर्व आभा से आलोकित कर देती है।

'मंगर' के बहाने लेखक ने सभी श्रेणी के मजदूरों का चित्रण किया है। ऐसे मजदूरों के जीवन में अभाव रहता है वे इतने गरीब हैं कि उनकी कमर में धोती भी नहीं रहती। जीवन-भर भगवा ही पहन कर रह जाते हैं। वह अपने काम में बड़ा दक्ष था। इसलिए उसे अन्य मजदूरों से विशेष और अच्छी रोजी मिलती थी। मंगर लेखक रामवृक्ष पर स्नेह की नजर रखता था। कई बार लेखक उसके कंधे पर बैठा था। वह बाहर से सख्त मालूम पड़ता था, लेकिन अंदर से बहुत कोमल एवं भावप्रवण था।

पर्व-त्यौहार के अवसर पर मंगर के प्रति विशेष सहानुभूति दिखाई जाती थी। कभी-कभी उसे धोती भी मिलती। वह पहनता! पर भगवा पहनने के बाद भी वह सुंदर लगता था। मंगर के शरीर का गठन बड़ा ही सुव्यवस्थित और सुंदर था। लेखक को वह उसी रूप में अच्छा लगता था।

मंगर को एक दिन अधकपारी की दर्द उठी, और उसकी पत्नी भकोलिया जो कि एक आदर्श पत्नी थी, कहीं से दालचीनी ले आई और उसे पीस कर बकरी के दूध में लेप बनाकर उसके सिर पर लगा दिया। यह लेप घातक सिद्ध हुआ। जलन पैदा हो गई। जलन जख्म में बदल गई। इस घटना से उसकी एक आँख चली गई। मंगर की हालत को देखकर लेखक के हृदय में करुणा उमड़ पड़ी।

अथवा

अलगू और जुम्मन में गाढ़ी दोस्ती थी। एक दिन खालाजान ने अलगू को पंचायत में चलने की बात कही, पर वह पंचायत में जाना नहीं चाहता था। बहुत आग्रह किए जाने पर उसने पंचायत में जाना तो स्वीकार किया पर यह भी कहा कि वह वहां कुछ नहीं बोलेगा। लेकिन खालाजान ने ऐसी मर्मभेदी बात कही कि उसका हृदय तिलमिला उठा - उसने अलगू के ईमान को ललकार दिया।

पंचायत में अलगू को सरपंच बनाया गया। सरपंच बनते ही अलगू दोस्ती और दुश्मनी की भावना से ऊपर उठ गया। दोनों पक्षों की बात सुनकर अलगु ने खालाजान के पक्ष में फैसला सुनाया। फैसला सुनकर जुम्मन शेख अलगू चौधरी का दुश्मन बन गया। इस अपमान का बदला लेने का अवसर पाने की प्रतीक्षा करने लगा। इस प्रकार दोनों की मित्रता टूट गई।

कुछ ही महीने बाद समझू साहू और अलगू का मामला पंचायत के सामने आया। समझू ने जान-बूझकर जुम्मन को ही सरपंच चुना। इस आसन को ग्रहण करते ही उनके विचार में बदलाव आया व न्याय और धर्म के पक्षधर बन गए। परमेश्वर के अलौकिक प्रकाश से उसके हृदय का अंधकार दूर हो गया। वह भूल गया कि अलगू उसका दुश्मन था। उसने सत्य और न्याय का ही पक्ष लेकर अलगु चौधरी के पक्ष में फैसला सुना दिया।

जुम्मन शेख ने अलगू चौधरी को गले लगाकर यह स्वीकार किया कि "भैया, जब से तुम मेरी पंचायत की तबसे मैं तुम्हारा शत्रु बन गया था लेकिन आज मालूम हुआ कि पंच के आसन पर बैठकर न कोई किसी का दोस्त होता है और न दुश्मन। न्याय के सिवा उसे कुछ नहीं सूझता।" यह सुनकर अलगू रोने लगा। वास्तव में पंच की जुबान से खुदा बोलता है। इस प्रकार दोनों की टूटी हुई मित्रता फिर से जुड़ गई। वस्तुतः यह एक आदर्श कहानी है।

4.

1. सुन्दर का ध्यान कहीं सुंदर	(क)गोपाल सिंह नेपाली
2. हिमालय का संदेश	(ख)रामधारी सिंह दिनकर
3. जीवन-संदेश	(ग)रामनरेश त्रिपाठी
4. कविवर रवीन्द्र नाथ ठाकुर	(घ)हजारी प्रसाद द्विवेदी
5. ठिठुरता हुआ गणतंत्र	(ड़)हरिशंकर परसाई

5. (1)आंख-(स्त्री०) - उसकी आंखों में लगा काजल धुल गया।

(2)ओस-(स्त्री०) - रात भर ओस गिरती रही।

(3)कपूर- (पु०) - कपूर हवा में उड़ गया।

(4)खीर-(स्त्री०) -आज खीर अच्छी बनी है।

(5)घी-(पु०) -घी महंगा है।

6. (1) निर्भय
(2) अनुगामी
(3) आशातीत
(4) अमर
(5) आस्तिक

7. (1) हिंसा- अहिंसा
(2) वाचाल- मूक
(3) सजीव- निर्जीव
(4) जागृति- सुषुप्ति
(5) कृतज्ञ- कृतध्न

8.

1. **समाजसेवा**

जिस व्यक्ति में समाजसेवा की भावना नहीं है वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं है। समाज व्यक्तियों का उद्देश्यपूर्ण संगठन होता है। व्यक्तियों का समुचित एवं सर्वांगीण विकास समाज में ही संभव है। व्यक्ति की सारी आवश्यकताओं की पूर्ति समाज द्वारा ही होती है। समाज की सहायता के अभाव में किसी व्यक्ति का जीवन अत्यंत कठिन हो जाएगा। समाज व्यक्ति के विकास के लिए इतना करता है, तो व्यक्ति का भी कर्तव्य है कि वह समाज की प्रगति में अपना योगदान दे। समाज ने मुझे दिया है, मुझे भी समाज को देना है-जिस दिन किसी व्यक्ति में यह भाव जागृत हो जाए, तो सोचना चाहिए, उसी दिन से वह व्यक्ति समाजसेवक हो गया।

हमारे जीवन में प्रतिदिन समाजसेवा के छोटे-बड़े अवसर आते रहते हैं। हमें इन अवसरों पर अपने सामाजिक दायित्व का निर्वाह करना चाहिए। यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो हम सामाजिक प्राणी कहलाने के अधिकारी नहीं हैं। हमारा परिवार छोटा समाज है। हमें सामाजिक सेवा का स्वाभाविक प्रशिक्षण यहां मिलता है। हमारी समाजसेवा की शुरुआत अपने परिवार और पड़ोस के परिवारों से होना चाहिए। और, प्रायः ऐसा होता भी है। हमें अपने पड़ोसी के सुख-दुख में सम्मिलित होना चाहिए। हमारे जीवन में पग-पग पर समाज सेवा के अवसर आते रहते हैं। इन अवसरों पर बेझिझक हमें समाजसेवा के लिए तत्पर होना चाहिए।

ईसा मसीह ने अपने शिष्यों से 'समरीतन' की कथा सुनाई थी। रास्ते पर एक घायल पड़ा था। पुजारी, धर्मात्मा, समाजसुधारक सभी उस रास्ते से गए, पर उन्होंने उस घायल को देखते हुए भी उसकी कोई मदद नहीं की। समरीतन ने उसे देखा। वह उस घायल की दशा देखकर करुणा से भर गया। उसने उस घायल की पूरी सेवा की। सच्चे अर्थों में वही पुजारी, धर्मात्मा और समाजसुधारक था; और तो ढ़ोगीं थे। समाजसेवा में ढ़ोग नहीं चलता। समाजसेवा प्रत्येक सामाजिक व्यक्ति का कर्तव्य है। किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति की उच्चता का आधार यही है कि उस देश के नागरिक समाजसेवा में संलग्न रहें।

2.**शिक्षा और चरित्र निर्माण**

शिक्षा का अर्थ है विद्योपार्जन। सद्ज्ञान और सद्विवेक शिक्षा की देन है। यदि प्रारंभ में छात्रों के क्रियाकलापों पर गौर करें, तो पाएंगे कि प्राथमिक विद्यालय से लेकर उच्च विद्यालयों तक और महाविद्यालयों से लेकर विश्वविद्यालयों तक में अध्ययन करते हुए, जो भी 18-20 वर्ष कम-से-कम व्यतीत करते हैं, उसका लक्ष्य ज्ञानार्जन मात्र होता है। यह ज्ञानार्जन कुछ एक विषयों एवं उनके परिचायक साहित्य का होता है। आशा की जाती है कि उन विषयों का अध्ययन करते हुए वह इस योग्य बन जाएंगे कि अपना जीवन सुखपूर्वक बिता सकें।

आज की शिक्षा में चरित्र-निर्माण का कोई स्थान नहीं है, और न उसका कोई महत्व दिया जाता है। हमारी संस्कृति में गुरु और शिष्य का संबंध बहुत ही सुंदर और सुखद हुआ करता था। इसका कारण यही था कि दोनों का एक दूसरे पर विश्वास हुआ करता था। गुरु-शिष्य को पुत्रवत् मानते थे, और उस पर स्नेह रखते थे। शिष्य गुरु को

पितातुल्य और विश्वसनीय समझता था। शिष्य के जीवन पर गुरु का गहरा प्रभाव पड़ता था, और गुरु-शिष्य के बीच केवल व्यापारिक संबंध, जिसमें पैसे के बदले कुछ पुस्तक पढ़ा देना मात्र का संबंध होता है, न रहकर आध्यात्मिक संबंध हो जाता था. जो घनिष्ट हुए बिना नहीं रह सकता था। आए दिन समाचार पत्रों में छात्रों और शिक्षकों के संबंध में ऐसी शर्मनाक बातें पढ़ने को मिलती हैं। जिससे हृदय अत्यंत खिन्न हो उठता है। मेरी समझ में इसका मौलिक कारण चरित्र-गठन पर ध्यान देना और छात्रों पर शिक्षक वर्ग के नैतिक प्रभाव का न होना ही है। छात्रों के लिए सही चरित्र निर्माण के लिए न केवल उनके जीवन से जुड़ी शिक्षा अनिवार्य है, बल्कि शिक्षा-काल में हमेशा रचनात्मक कार्यक्रमों में उनका व्यस्त रहना भी अनिवार्य है पर प्रायः देखा यहीं जा रहा है कि किताबी अध्ययन के अतिरिक्त छात्रों को किसी प्रकार का न तो रचनात्मक व्यवस्था है और न उनके बारे में उन्हें सम्यक दिशा-निर्देश ही मिल पाता है।

चरित्र के अभाव में किसी देश का सम्यक विकास नहीं हो सकता। किसी देश के चरित्र का अर्थ है उसके नागरिकों का चरित्र और नागरिकों के चरित्र की बुनियाद। चरित्रवान नागरिक जब ज्ञानवान होते हैं, तभी साहित्य विज्ञान आदि क्षेत्रों में भी कुछ काम कर पाते हैं। कुछ उपलब्धियां प्राप्त कर पाते हैं, पर ज्ञानवान होना विद्योपार्जन के बिना असंभव है। विद्योपार्जन तभी संभव है जब उसकी प्राप्ति करने वाले अपने गुरुजनों के अनुशासन में रहें, उनकी सीख सुनें, उनके द्वारा बताए मार्ग पर चलें।

इस तरह चरित्र निर्माण के लिए सद्शिक्षा आवश्यक है। इसके अभाव में सच्चरित्र की कल्पना करना भी मूर्खता ही होगी। आज जरुरी है अच्छी शिक्षा व्यवस्था की, मधुर छात्र-अध्यापक संबंध कि। हमें इस विशाल राष्ट्र का प्रबुद्ध नागरिक बनना है या अपने आप में हर दृष्टि से महान काम है, और इसका दुर्बल भार चरित्रवान तथा ज्ञानवान नागरिक ही उठा सकता है। साथी चरित्र-निर्माण पारिवारिक एवं सामाजिक संतों की कुँजी है।

3.**आतंकवाद**

'आतंकवाद' नागरिकों, राज्य के विरुद्ध विभिन्न लोगों द्वारा अपने वांछित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रयोग किया जाने वाला बलपूर्वक एवं गैर-कानूनी तरीका है। 'आतंकवाद' से मिलता-जुलता एक शब्द 'उग्रवाद' है। 'उग्रवाद' में शोषण के विरुद्ध संघर्ष होता है। 'आतंकवाद' में शोषण से मुक्ति कि नहीं, अपने हट को सबके माथे पर थोपने का हिंसात्मक पाशविक कृत्य।

आतंकवाद का सबसे डरावना, घृणित पहलू यह है कि इनमें अधिकतर लोग धर्म और पंथ से प्रेरित है। यह धर्माध लोग विश्व स्तर पर सांप्रदायिक हिंसा तथा घृणा फैलाकर संसार को सांप्रदायिक आधार पर बांट देने पर तुले हैं। आतंकवाद, शासन तथा व्यवस्था दोनों के लिए गंभीर समस्या है, जो समाज को विघटन की ओर ले जा रही है- हत्या, यातना, फिरौती, लूटपाट इत्यादि घटनाएं आतंक और भय का वातावरण पैदा करती हैं।

भारत दो दशकों से आतंकवाद से जूझ रहा है। इसी 'आतंकवाद' के चलते मई 1999 में पाकिस्तान के साथ भारत कारगिल युद्ध में भिड़ा और एक 17 जुलाई को भारत ने विजय प्राप्त की 23 जुलाई को प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा - "युद्ध खत्म हो गया, पर लड़ाई जारी है।" यह लड़ाई आतंकवाद के साथ है। हमारे देश में आतंकवाद कई रूपों में देखने को मिलती है। चीनी क्रांति से प्रेरित 1967 ईस्वी में पश्चिम बंगाल के नक्सल बाड़ी नामक स्थान से शुरू हुआ नक्सलवादी आतंकवाद, को 1970 के दशक में बिहार, आंध्रप्रदेश, केरल में फैल गया।

कश्मीर को हथियाने के लिए पाकिस्तान आए दिन आतंकवादी हथकंडे अपनाता है। पाकिस्तान द्वारा छोड़े गए युद्ध का भारत ने दो बार मुकाबला किया है।

आतंकवाद मानवीय मूल्यों की पूर्णतया अवहेलना करता है। हमारा देश संकल्पित है कि वह सभी जगहों पर सभी प्रकार के आतंकवाद का विरोध करेगा। आतंकवादी संगठनों का केंद्रीय स्थल सब को ज्ञात है, पर इच्छा शक्ति के अभाव में उस पर सही समय पर आक्रमण नहीं हो पा रहा है ।

4.**होली**

मनुष्य के जीवन में सामान्य और विशेष दो प्रकार के कार्य होते हैं, दो प्रकार के दिन होते हैं। सामान्य कार और सामान्य दिन बराबर होते हैं, किंतु विशेष कार्य और विशेष दिन अपने नियत समय पर आते हैं और उनका विशेष महत्व होता है।

त्योहारों का महत्व इसलिए है कि उनमें अनेक विशेषताएं होती हैं, तथा वे विशेष समय पर आते हैं। भारतवर्ष एक ऐसा देश है जहां प्राचीन काल से वर्णाश्रम-व्यवस्था चली आ रही है। मूलतः भारतीय समाज चार वर्णों में विभाजित है। प्रायः सभी वर्ण के लोग सभी त्योहारों में भाग लेते हैं, और अपना संबंध सभी त्योहारों से मानते हैं। हिंदू धर्म की उदारता है कि किसी भी सांस्कृतिक और धार्मिक पर्व में सभी हिंदू प्रेम-पूर्वक सम्मिलित होते हैं। यह त्यौहार मनाने की प्रथा मानव समाज में अज्ञात काल से चली आ रही है।

भारत में चार त्यौहार मुख्य रूप से मनाए जाते हैं, तथा उन का व्यापक महत्व है। होली भी इसमें से एक है। फाल्गुन शुक्ल की अंतिम तिथि को इसे जलाया जाता है, तथा चैत्र कृष्ण को होलिका की धूल उड़ायी जाती है। उस दिन अच्छे-अच्छे पकवान बनते हैं। लोग आनंद से गाते-बजाते हैं। नया वर्ष नए उत्साह को लेकर आता है।

होलिका के विषय में यह कहानी प्रसिद्ध है कि हिरण्यकश्यपु का पुत्र प्रह्लाद हरि भक्त था, और वह स्वयं हरि विरोधी था। उसने एक बार होलिका को प्रहलाद के साथ अग्नि में बैठने की आज्ञा दी। हरिमाया से होलिका स्वयं जल गई और भक्त प्रह्लाद बच गया। तभी से होलिकादहन की प्रथा चल पड़ी। तभी साल भर की गंदगी उस दिन अवश्य साफ कर दी जाती है। इस त्यौहार पर रंग गुलाल छिड़का जाता है, तथा लोग परस्पर प्रेम से मिलते हैं।

कुल मिलाकर होली हर्षाभिव्यक्ति का पर्व है। यह हिंदू जाति के लिए प्रसन्नता एवं नव वर्ष आरंभ का संदेश लेकर उपस्थित होता है। इसके आगमन से लोगों में प्रसन्नता की लहर दौड़ जाती है। हमें भी चाहिए कि शुद्ध मन से प्रेम पूर्वक होली का आनंद उठाएं और हर वर्ग के साथ मिलकर सुख सौहार्द, भाईचारे का संदेश दें। तभी इस महान त्यौहार की सार्थकता होगी।

सेट -3 (प्रश्न)

हिंदी (50 अंक)

समय : 1 घंटा 37.5 मिनट पूर्णांक:50

परीक्षार्थी के लिए निर्देश:

Instructions to the candidate:

1.परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

Candidates are required to give their answer in their own words as far as practicable.

2.दाहिनी और हाशिये पर दिए हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

Figures in the right hand margin indicate full marks.

3.परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

Right question number with every answer.

1.संक्षेपण करें:- 05

धर्म को लोगों ने धोखे की दुकान बना रखा है। वे उसकी आड़ में स्वार्थ सिद्ध करते हैं। बात यह है कि लोग धर्म को छोड़कर संप्रदाय के जाल में फँस जाते हैं। संप्रदाय बाह्य कृत्यों पर जोर देते हैं। वे चिन्हों को अपनाकर धर्म के सार तत्व को मसल देते हैं। धर्म मनुष्य को अंतर्मुखी बनाता है, उसके हृदय के किवाड़ों को खोखला है, उसकी आत्मा को विशाल, मन को उदार तथा चरित्र को उन्नत बनाता है। संप्रदाय संकीर्णता सिखाते हैं, जात-पात, रूप-रंग तथा ऊँच-नीच के मत मेदभावों से ऊपर नहीं उठने देते हैं।

2.भावार्थ लिखें:- 7.5

रहिमन, पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरै, मोती मानुस चून।।

अथवा

भारत जहाँ, वहाँ जीवन-साधना नहीं है भ्रम में,
धाराओं को समाधान है मिला हुआ संगम में।
जहाँ त्याग माधुर्यपूर्ण हो, जहाँ भोग निष्काम,
समरस हो कामना, वहीं भारत को करो प्रणाम!
वृथा, मत लो भारत का नाम।

3. 'भकोलिया' का चरित्र-चित्रण अपने शब्दों में कीजिए। 7.5

अथवा

"रवींद्र नाथ ठाकुर" शीर्षक पाठ का सारांश लिखें।

4.वस्तुनिष्ठ प्रश्न:- 5x1=5

बताए किस पाठ से उद्धत है:-

(क) अच्छे कामों की सिद्धि में बड़ी देर लगती है, पर बुरे की सिद्धि में यह बात नहीं होती।

(ख) तीव्र गति में सौंदर्य है, परंतु वह मंथर गति के सुंदर को नहीं पाता।

(ग) काला-कलूटा फिर भी खूबसूरत? सैन्दर्य के रंगसाजी और नक्कासी का मिलान करें।

(घ) बंग देश की बुलबुल

(ड़) स्वतंत्रता दिवस भंगता है और गणतंत्र दिवस ठिठुरता है।

5. मुहावरों से वाक्य बनाकर अर्थ स्पष्ट करें:- 5x1=5

(क) अक्ल पर पत्थर पड़ना

(ख) ईद का चांद होना

(ग) हवा से बातें करना

(घ) दांतो तले उँगली दबाना

(ड़) गाल बजाना

6. पर्यायवाची शब्द लिखे:- 5x1=5

(क) अमृत

(ख) सोना

(ग) जल

(घ) राजा

(ड़) हाथी

7.निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाकर लिंग स्पष्ट करें:- 5x1=5

(क) आग (ख) किताब (ग) नदी (घ) शाम (ड़) जेब

8. किसी एक पर निबंध लिखें :- 10

(क) भारतीय किसान (ख) मूल्य-वृद्धि की समस्या-महंगाई (ग) भ्रष्टाचार

(घ) दुर्गापूजा (ड़) कवि - मैथिली शरण गुप्त

सेट -3 (उत्तर)

हिंदी (50 अंक)

1.

शीर्षक-धर्मांधता

धर्म को लोगों ने धोखे की दुकान बना रखा है। वे उसकी आड़ में स्वार्थ सिद्धि करते हैं। बात यह है कि लोग धर्म को छोड़कर संप्रदाय के जाल में फंस जाते हैं। धर्म मनुष्य को अंतर्मुखी बनाता है, उसके हृदय की किवाड़ों को खोलता है, उसकी आत्मा को, विशाल, मन को उदार, तथा चरित्र को उन्नत बनाता है।

2.

प्रस्तुत दोहे में महाकवि रहीम ने पानी शब्द के शि्लष्ट (अनेक अर्थो वाला) प्रयोग द्वारा उनके अर्थों में उसके महत्व पर प्रकाश डाला है। कविवर रहीम कहते हैं कि पानी का महत्व बहुत होता है। इसलिए हर मूल्य पर इसकी रक्षा की जानी चाहिए। इसके अभाव में मोती, मनुष्य और चूना के लिए तो कुछ भी नहीं बच जाता है।

मोती, मनुष्य और चूना इन तीनों के संदर्भ में पानी के अलग-अलग अर्थ निकलते हैं। मोती के संदर्भ में इसका अर्थ चमक है, जिसे आभा या उर्दू में आब भी कहते हैं। अाब पानी का ही उर्दू पर्यायवाची शब्द है। इस आब या पानी अर्थात् स्वाभाविक चमक के समाप्त हो जाने पर मोती रत्न भी सर्वथा मूल्यहीन हो जाता है। इसलिए इसकी रक्षा की जानी चाहिए।

मनुष्य के संदर्भ में पानी का अर्थ प्रतिष्ठा है। व्यक्ति की प्रतिष्ठा नष्ट हो जाने पर उसका कोई मूल्य नहीं रह जाता। उसमें निरर्थकता आ जाती है। प्रतिष्ठित व्यक्ति को पानीदार व्यक्ति भी कहा जाता है। प्रतिष्ठा चले जाने के बाद उसके पास कुछ नहीं बचा जाता। इसलिए हर मूल्य पर उसे पानी अर्थात् प्रतिष्ठा की रक्षा करनी चाहिए।

चूने के संदर्भ में पानी का अर्थ जल है। जल सूख जाने पर चुना किसी उपयोग के लायक नहीं रह जाता। उसे खाने या लगाने की उपयोगिता तभी तक रहती है जबतक उसमें पानी रहता है। पानी समाप्त हो जाने के बाद अनुंपयोगी धूल जैसा रह जाता है। इसलिए हर सूरत में उसके लिए रक्षा करनी चाहिए।

अथवा

प्रस्तुत पंक्तियों में राष्ट्र कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने भारत के आदर्शों को प्रस्तुत करते हुए यह याद दिलाया है कि भारत में विषमता, विभिन्नता के बीच एकता, अखंडता, प्रेम और अहिंसा विकसित हो रही है। भारत में जीवन साधना के आदर्श मिलते हैं। यहां भ्रम और भूल नहीं है। बल्कि त्याग, माधुर्यपूर्ण और निष्काम सेवाएँ मिलती हैं। अच्छे विचार व्यवहार भारतीयों के जीवन शैली रही है। नैतिकता का पाठ भारत से विश्व के अनेकों देशों में पहुंचा है। हमें भारत के मान-सम्मान को हमेशा बढ़ाना चाहिए।

3.

भकोलिया मंगर की पत्नी है। जैसा सीधा मंगर है, वैसी ही सीधी भकोलिया है। वह रंग साँवली है। वह मंगर से विशेष स्वस्थ है। वह कर्मठ स्त्री है। वह इधर-उधर फुटकर काम करती है और कुछ कमा लेती है। पहले भकोलिया भी मंगर की तरह तमकती थी, झिझकती थी। उसका भी स्वभाव मंगर के स्वभाव के समान ही था। पर बाद में उसने अपने आपमें सुधार लाने का प्रयास किया। मंगर तो ज्यों का त्यों रहा, पर उसने अपने को परिस्थिति के अनुकूल बना लिया। वह घर-घर जाकर कुटान-पिसान का कार्य करती थी, गोबर पाथती थी, पानी भरती थी इस प्रकार उसके स्वभाव में कोमलता आ गयी थी।

भकोलिया सेवा भाव से भरी थी। जब मंगर को अधकपारी उठी तो उसने बड़ी सेवा-भाव की। इस प्रकार हम देखते हैं कि भकोलिया सामान्य देहाती औरत से विशेषकर मजदूरों की औरतों से ऊपर उठी हुई थी।

अथवा

विश्व कवि के गौरव से विभूषित 'रवींद्रनाथ ठाकुर' अपने बहुआयामी व्यक्तित्व के कारण महान हैं। साहित्य की साधना उन्होंने जिस सेवा-भाव से की, वह सेवा उनके द्वारा मनुष्यता की सेवा को दृष्टि-पथ में रखकर ही की गई है जिस कारण उन्हें आज अद्वितीय कवि, लेखक और महान पुरुष के रूप में पहचान है।

उनका जन्म सन् 1861 ईस्वी में बंगाल के एक संभ्रांत परिवार में हुआ था जो पूर्व से ही अपनी विद्वता के लिए प्रसिद्ध रहा है। उनके पिता का नाम महर्षि देवेंद्रनाथ ठाकुर था। चूँकि अपनी माता की स्नेह-छाया बचपन से छिन गई थी इसलिए पिता द्वारा ही उनका पालन-पोषण किया गया। विद्यालयी शिक्षा उन्हें नाममात्र की ही प्राप्त हुई थी। उन्हें घर पर ही शिक्षा दिलायी गयी। अपनी कुशाग्र बुद्धि के कारण 16 वर्ष की अवस्था में ही लेखन के प्रति उनकी प्रवृत्ति भली-भाँति उजागर होने लगी। आरंभ में स्वरचित गीत वे स्वयं गाते थे। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने लेखन को जारी रखते हुए आगे अनेक गद्य पद्ध संबंधी पुस्तकें लिखी। अपनी काव्य-पुस्तक के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित होना न केवल उनकी विशिष्ट उपलब्धि मानी जाएगी अपितु यह समस्त देशवासियों के लिए गौरव की बात है।

4.

1.पंच परमेश्वर

2. गौरा

3. मंगर

4. कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर

5. ठिठुरता हुआ गणतंत्र

5.

1.अक्ल पर पत्थर पड़ना- (बुद्धि का मारा जाना) - उसे क्या समझ में आएगा, उसकी अक्ल पर तो पत्थर पड़ा है।

2. ईद का चांद होना- (कभी-कभी दिखाई देना) - आजकल तो आप बिल्कुल ईद का चांद हो गए हैं।

3. हवा से बातें करना- (बहुत तेज भागना) - मार लगते ही घोड़ा हवा से बातें करने लगा।

4.दांतो तले उंगली दबाना- (आश्चर्य प्रकट करना) - बस इतने में ही आप दांतो तले उंगली दबाने लगे।

5. गाल बजाना- (डींगे हाँकना) - गाल क्या बजाते हो? जो कहता हूं उसे सुनो।

6.

(1) अमृत - सुधा, पीयूष

(2) सोना - स्वर्ण, कनक

(3) जल - पानी, नीर

(4) राजा - नृप, भूपति

(5) हाथी - गज, कुंजर

7.

(क) आग - (स्त्री०) - आग फैल गई।

(ख) किताब - (स्त्री०) - मेरी किताब नई है।

(ग) नदी - (स्त्री०) - नदी बहती है।

(घ) शाम - (स्त्री०) - शाम ढल गई।

(ड़) जेब - (स्त्री०) - मोहन की जेब कट गई।

8.

(क) भारतीय किसान

भारतीय किसान स्वभाव से निश्छल तथा सीधे-साधे होते हैं। ईमानदारी इनकी जीवन का अलंकार है। ये ईश्वर पर अटूट विश्वास और श्रद्धा रखते हैं। इनका मानना है कि ईश्वर जिस विधि से रखे उस विधि से रहना चाहिए। इसके साथ ये यह भी मानते हैं कि घोर से घोर विपत्ति में भी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए तथा भगवान का नाम नहीं भूलना चाहिए। कर्म के साथ अध्यात्म का अपूर्व सहयोग ही भारतीय कृषक का अस्तित्व निर्मित करता है। खेती इनका यज्ञ है, खेत की धरती इनका यज्ञ मंडप है। परिश्रम इनके जीवन का सबसे बड़ा धर्म है।

भारतीय किसानों की आर्थिक स्थिति संतोषजनक नहीं है। यह कितने दुख की बात है कि सारे देश को खिलाने वाला किसान अपने बिना खाए सो जाएं। दूसरों के शरीर ढके और अपने नंगा रहे। यह सुबह से शाम तक कड़ी मेहनत करते हैं। सुबह उठे कुंट्टी काटी, नाद साफ की, गाय बैलों को दाना-पानी दिया, गाय भैंस दोहा, फिर कुछ रुखा-सुखा खाकर हल बैल लिए और खेतों की ओर चल पड़े। दोपहर तक हल

चलाते रहें। खेत में ही खाना पहुंच गया, तो वही किसी वृक्ष की छाया में बैठ कर खा लिया, नहीं तो कंधे पर हर रख बैलौं के पीछे-पीछे घर की ओर चल पड़े। बैलों को नाँद पर बांधकर, पानी पिलाया और अपने खाकर बालों को खिलाने के लिए चारा काटने लगे। सुबह से शाम तक इनका जीवन कठिन परिश्रम और कठोर साधना में बीतता है।

इतनी परेशानी, इतनी उलझन, इतनी मेहनत के बाद भी यह जो कुछ उत्पादन करते हैं ,उससे इनके परिवार की आवश्यकता पूरी नहीं हो पाती। पारिवारिक चिंता में व्यग्र ये धीरे-धीरे कृशकाय हो जाते हैं। यही भारतीय कृषक की नियति है।

अधिकतर भारतीय किसान अनपढ़ होते हैं। इनकी गरीबी का मुख्य कारण अशिक्षा भी है। यह बहुत सारी गलत रूढ़ियों के शिकार हैं। जिन्हें शिक्षा से ही दूर किया जा सकता है। इनके शिक्षा का समुचित प्रबंध कर तथा वैज्ञानिक ढंग से खेती करने की सारी सुविधाएं देकर, उनकी आर्थिक दशा में समुचित सुधार लाया जा सकता है। भारतीय किसान ऋण में ही जन्म लेता है, ऋण में ही पलता है, और ऋण में ही मर जाता है। इस भ्रामक लोकोक्ति को मिटाया जा सकता है। किसानों की खुशहाली ही देश की खुशहाली है, क्योंकि भारत किसानों का देश है 80% देश की आबादी कृषि पर ही निर्भर है।

(घ) दुर्गापूजा

भारत में शक्ति और ऐश्वर्य की पूजा प्राचीनकाल से चली आ रही है। शास्त्रबल के साथ ही भारत वासियों ने शस्त्रबल को भी अधिक महत्व दिया है। यही कारण है कि देवी दुर्गा की आराधना भारतवासी प्राचीनकाल से ही करते चले आ रहे हैं।

दुर्गापूजा को विजयदशमी के नाम से भी पुकारा जाता है। इसके भी कई कारण हैं। इस दशमी की तिथि को विजया अर्थात महाशक्ति की विधि पूर्वक आराधना एवं अनुष्ठान किया जाता है, इस कारण उसे विजयादशमी कहा जाता है। यह भी कहा जाता है कि इस तिथि को भगवान श्रीराम ने देवी दुर्गा की आराधना करके आततायी रावण पर विजय प्राप्त की थी और इसी कारण यह तिथि विजयादशमी के नाम से विख्यात हुई। एक अन्य मान्यता के अनुसार, यदि दशमी को श्रद्धा पूर्वक देवी की आराधना की जाए तो जीवन में जय अवश्यंभावी होती है। यह भी मान्यता है कि महाविद्याओं एवं इंद्रियों की

संख्या 10 है। माता की आराधना इन दसों महाविद्याओं एवं इंद्रियों पर अधिकार करने के लिए की जाती है। दुर्गा पूजा को दशहरा के नाम से भी पुकारा जाता है, क्योंकि इसी दिन दसमुख (रावण) का संहार किया गया था और उसके द्वारा उत्पन्न किए गए कष्टों का हरण किया गया था।

माता दुर्गा के पूजन का विशेष महत्व है। कहा जाता है कि माँ दुर्गा समस्त राष्ट्र शक्ति के प्रतीक हैं। अपने साधकों के हेतु वह सब कुछ करने को तैयार हैं। वह सद्वृत्तियों में लगे हुए लोगों को कल्याण करने वाली हैं। वह मनुष्य के द्वारा ही नहीं बल्कि देवताओं के द्वारा भी वंदनीय हैं।

दुर्गा पूजा महोत्सव भारत में अत्यंत धूमधाम से मनाया जाता है। औपचारिक रुप से यह उत्सव आश्विन मास की दूसरी प्रतिपदा से दसवीं तक मनाया जाता है। भारत के विभिन्न भागों में दुर्गा पूजा का आयोजन विभिन्न ढंग से होता है। ना केवल भारत अपितु विदेशों में भी जहां भारतीय मूल के निवासी हैं, वहां दुर्गा पूजा का आयोजन सोल्लास मनाया जाता है।

मां दुर्गा शक्ति की प्रतीक हैं। वह कष्टों को हरने वाली और पापों को नाश करने वाली हैं। महामोह, अविद्या और अज्ञान के बादलों को छिन्न-भिन्न करके विद्या और ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाली हैं।

सेट -4 (प्रश्न)

हिंदी (50 अंक)

समय : 1 घंटा 37.5 मिनट पूर्णांक:50

परीक्षार्थी के लिए निर्देश:

Instructions to the candidate:

1.परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

Candidates are required to give their answer in their own words as far as practicable.

2.दाहिनी और हाशिये पर दिए हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

Figures in the right hand margin indicate full marks.

3.परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

Right question number with every answer.

1.संक्षेपण करें:- 05

जो हमारे पास है उसके लिए धन्यवाद दें या जो हमारे पास नहीं है, उसके लिए शिकायत करें? मर्जी है आपकी, जो चाहे करें-चाहे शिकायत करें, चाहे धन्यवाद दें अथवा प्रशंसा करें। किंतु इतना अवश्य जान लें कि दोनों ही दशाओं में जमीन आसमान का अंतर है। शिकायत करने वाला मन धीरे-धीरे उदास, म्लान, निर्जीव, बोझिल और रोगी होने लगता है। वह पशु हो जाता है। उसमें क्रियाशीलता नहीं रहती। उसकी ताजगी नष्ट हो जाती है। इसके ठीक विपरीत धन्यवाद देने वाला मन धीरे-धीरे आशा और विश्वास से प्रफुल्ल हो उठता है। उसमें गतिशीलता और दूसरों के प्रति आत्मीयता बढ़ती है। जीवन-जगत के प्रति उसका रुझान बढ़ जाता है। वह आशा से भरकर आगे कदम बढ़ा सकता है। अतएव हर परिस्थिति में ईश्वर को, अपने साथियों को अपने परिवेश को धन्यवाद दीजिए; उसके प्रति कृतज्ञ भाव रखिए।

2.भावार्थ लिखें:- 7.5

रहिमन वे नर मर चुके, जे कहूँ माँगन जाहि।
उनते पहले वे मरे, जिन मुख निकसत नाहिं।।

अथवा

क्या उनका उपकार-भार तुम पर लवलेश नहीं है?
उनके प्रति कर्तव्य तुम्हारा क्या कुछ शेष नहीं है?
सतत ज्वलित दुख-दावानल में जाग के दारुण रन में।
छोड़ उन्हें कायर बनकर तुम भाग बसे निर्जन में।।

3.गौरा कौन थी? गौरा के संबंध में महादेवी वर्मा के विचारों को प्रस्तुत करें । 7.5

अथवा

मनुष्यों में पारस्परिक प्रीति का होना कल्याणकारी है, प्रस्तुत उदाहरण के अलोक में 'कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर' शीर्षक पाठ का सारांश लिखिए।

4.निम्नलिखित मुहावरों से वाक्य बनाकर अर्थ स्पष्ट करें:- 5x1=5

(क)आँख दिखाना
(ख)अंधे की लकड़ी
(ग)कानों पर जूँ तक न रेंगना
(घ)घी के दिए जलाना
(ड़)पेट में चूहे कूदना

5.निम्नलिखित अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखें:- 5x1=5

(क)जो ईश्वर में विश्वास करता है
(ख)जो सब कुछ जानना चाहता हो
(ग)जिसके चार पैर हैं
(घ)नगर में रहने वाला
(ड़)देखने योग्य

6.निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाकर लिंग स्पष्ट करें:- 5x1=5

(क) कोशिश (ख) चादर (ग) पानी (घ) हीरा (ड़) दही

7.पर्यायवाची शब्द लिखें:- 5x1=5

(क) स्वर्ग (ख) रात (ग) पुष्प (घ) पंक्षी (ड़) घोड़ा

8.किसी एक पर निबंध लिखे:- 10

(क) महात्मा गांधी

(ख) महिला आरक्षण

(ग) कंप्यूटर आज की जरूरत

(घ) वसंत ऋतु

(ड़) दहेज प्रथा

सेट -4 (उत्तर)
हिंदी (50 अंक)

1.

शीर्षक- संतोष का भाव

हमारे पास जो कुछ भी है, उसके लिए हमें खुश रहना चाहिए।इसके साथ-साथ जो चीजें हमें नहीं प्राप्त हैं, उसके लिए दुखी भी नहीं होना चाहिए। क्योंकि दुखी होने से मन-तन दोनों प्रभावित होता है। जो कुछ हमें प्राप्त है, उन्हीं को संतोष मानकर सबों के प्रति आभार प्रकट करना चाहिए।

2.

प्रस्तुत दोहे कवि रहीम कहते हैं कि माँगना एक अपमानजनक कार्य है। माँगने वाले व्यक्ति मृत समान होते हैं। उनमें लाज, शर्म और मर्यादा इत्यादि का अभाव होता है। असहाय, निर्बल व्यक्ति मृत समान होते हैं। उस की सेवा करना, सहयोग देना, मानव का कर्तव्य है। दया करना मानव का धर्म है। लेकिन यदि ऐसे निर्बल और असहाय माँगनेवाले व्यक्ति को दान देने से कोई हाथ खींचता है। साधन रखते हुए भी यदि कोई धनवान व्यक्ति असहाय की सेवा नहीं करता है। जो रहीम कवि कहते हैं कि असहाय और निर्बल से पहले वह धनवान मर चुका होता है जिसमें मुँह नकारात्मक शब्द निकलते हैं।

इस दोहे में दान, दया, सहयोग को उत्तम कार्य के रूप में पेश किया गया है। माँगना यदि एक सामाजिक बुराई है, तो धन रखते हुए सहयोग न देना कंजूसी या कठोरता नहीं बल्कि दयाहीनता है और ऐसा व्यक्ति वास्तव में मृत समान होता है।

अथवा

"जीवन संदेश" शीर्षक कविता, विद्वान कवि श्री राम नरेश त्रिपाठी की रचना है जो 'पथिक' खंड-काव्य से उदधृत है। कवि प्रकृति के विभिन्न रूपों की क्रियाशीलता का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए, कर्मशील रहने का संदेश दिया है। जिस पृथ्वी और मानव समाज ने हमें एक साथ मनुष्य बनने में निरंतर सहयोग किया है उस देश और समाज के प्रति भी तो हमारा कुछ कर्तव्य है। यदि उस समाज को संकट में छोड़कर हम अपनी ही दुनिया में मस्त रहते हैं तो हम निश्चित रूप से कर्तव्य विमुख और पलायनवादी कहलाएंगे।

इस पृथ्वी पर भी सभी जीवों से बुद्धिमान, बलवान और विकसित प्राणी मनुष्य है। क्या ईश्वर ने मनुष्य को उद्देश्य रहित कर्तव्य ही बनाया है? नहीं, बल्कि मनुष्य के जीवन का एक उत्तम लक्ष्य सर्वश्रेष्ठ बनकर ईश्वर के आदेश का पालन करना भी है।

3.

प्रस्तुत रेखाचित्र में महादेवी वर्मा ने अपनी छोटी बहन से प्राप्त गाय (गौरा) का अदभुत वर्णन किया है। साथ ही गौरा की निर्मम मृत्यु के परिपेक्ष्य में मानव की स्वार्थ लिप्सा का रहस्योद्घाटन किया है।

गौरा, एक सफेद, चमकदार रोमों वाली बाछी थी। उसे सफेद-लाल गुलाबों की माला पहना कर, माथे पर टीका लगाकर और आरती उतार कर स्वागत किया गया। उसका नामकरण भी हुआ 'गौरांगिनी' या 'गौरा' के नाम से वह प्रसिद्ध हो गई।

गौरा केवल देखने में सुंदर नहीं थी बल्कि उसका स्वभाव भी अच्छा था, अन्य पालतू पशु-पक्षियों के साथ घुल-मिल गई। कुत्ते-बिल्लियाँ उसके पेट के नीचे और पैरों के बीच में खेलते रहते हैं, जिनका संपर्क सुख पाकर वह अपनी आंखें मूंदे खड़ी रहती हैं।

गौरा लेखिका के यहां रहते-रहते सभी लोगों के पैरों की आहट पहचानती थी। गौरा 1 वर्ष के बाद मां बनी और लाल रंग के बच्चे को जन्म दी, जिसका नाम लालमणि रखा गया। वह प्रतिदिन 12 सेर दूध देने लगी थी। लालमणि के लिए कई सेर दूध छोड़कर जो दूध होता उसे आस-पास के बाल-गोपाल से लेकर कुत्ते बिल्ली दूध पीकर सभी तृप्त होते।

जब गौरा के दुग्ध दोहन की समस्या खड़ी हुई तब उसके लिए ग्वाले को ही नियुक्त कर दिया, जो पूर्व में दूध दे जाता था।

किंतु गौरा ने दो-तीन महीने के बाद दाना-चारा खाना ही बंद कर दिया, परिणामस्वरुप वह कमजोर होती चली गई। डॉक्टर से उसे दिखलाया गया, एक्सरे से यह पता चला कि उसे सुई खिला दी गई है। इसका प्रमाण तो नहीं था कि किसने खिलाई है, लेकिन ग्वाले के भाग जाने से यह विश्वास हो गया था कि यह ग्वाले का ही कारनामा है। आखिरकार गौरा मृत्यु के साथ संघर्ष करती हुए एक दिन मर गई। उसकी मृत्यु का दुख सहना लेखिका के लिए बहुत कठिन हो गया।

अथवा

यदि जनसामान्य की तरह साहित्य-सेवियों में पारस्परिक प्रीति हो तो इससे बढ़कर भला अच्छी बात और क्या हो सकती है? साहित्य-सेवियों द्वारा अक्सर सभा-सम्मेलनों के माध्यम से प्रायः उसके अभाव को दूर करने की चेष्टा की जाती है।

स्पष्ट है कि मनुष्य में पारस्परिक प्रीति अपेक्षित है पर इससे रचना-कार्य में कोई सुविधा मिलती हो ऐसा रवि बाबू नहीं मानते थे। अपितु वे साहित्य-सेवी को स्वतंत्र मानकर अपनी निज प्रणाली का अनुसरण करते हुए अपनी विद्या-बुद्धि के अनुसार सरस्वती-सेवा करने वाला बताते हैं। जैसे कि उनकी स्वीकारोक्ति है- "यह नहीं कहा जा सकता कि लेखक लोग यदि एक-दूसरे को प्यार करें, तो इससे उनके रचना-कार्य में भी विशेष सुभीता हो अथवा लेखकों का इससे कोई विशेष उपकार है। व्यवसाय की दृष्टि से प्रत्येक साहित्य-स्वतंत्र हैं। लोग परस्पर परामर्श करके, सम्मिलित भाव से, अपना-अपना काम नहीं करते। प्रत्येक लेखक अपने निजी प्रणाली का अनुसरण करके, अपनी-अपनी विद्या- बुद्धि के अनुसार सरस्वती की सेवा करता है।"

4.का उत्तर -

1. आंख दिखाना- (क्रोध करना) - तुम्हारी आंख दिखाने से मैं डरने वाला नहीं।
2. अंधे की लकड़ी- (एक मात्र सहारा होना) - इकलौते पुत्र की मृत्यु ने उस अंधे की लकड़ी भी छीन ली।

3. कानों पर जूं तक न रेंगना- (बार-बार कहने पर भी न सुनना) - कितनी बार कहा, पर उनके कान पर जुएँ तक न रेंगी।
4. घी के दिए जलाना- (खुशियां मनाना) - सेठ जी के यहां तो रोज ही घी के दीए जलाए जाते हैं।
5. पेट में चूहे कूदना- (खूब भूख लगना) - पेट में चूहे कूद रहे थे, पर चूल्हा ठंडा पड़ा था।

5.का उत्तर -

1.आस्तिक

2.सर्वज्ञ

3.चौपाया

4.नागरिक

5.दर्शनीय

6.का उत्तर -

1. कोशिश- (स्त्री०) -मैंने कोशिश की।
2. चादर- (स्त्री०) -मैनें चादर ओढ़ ली।
3. पानी- (पु०) -पानी खारा है।
4. हीरा - (पु०) -हीरा चमकता है।
5. चिट्ठी- (स्त्री०) -मैंने चिट्ठी लिखी।

7.का उत्तर -

1. पुस्तक -ग्रंथ , किताब ।
2. रात - निशा , रात्रि ।
3. पुष्प - फूल , सुमन ।
4. पक्षी - चिड़िया , खग ।
5. घोड़ा - अश्व , तुरग ।

8.का उत्तर -

1.राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

दुबली-पतली काया , खद्दर की लँगोटी में लिपटा हुआ वह सेवाग्राम का संत, संपूर्ण भारत की दिव्य आत्मा था। वह भारत का ज्योतिषमान भव्य भाल था। वह इस निर्धन, पीड़ित, शोषित देश की जनता का हृदय-सम्राट था। छोटी-छोटी चमकती आँखें, चेहरे पर खेलती हुई शुद्ध, निर्मल मुस्कान, न जाने कितने शोषित एवं प्रेरित भारतीयों को सांत्वना दे चुकी हैं। न जाने उसमें कैसा जादू था, कैसी अद्‌भुत शक्ति थी कि कितने वर्षों से निराश भारतीयों में जीवन, आत्मविश्वास, प्रेम, सद्भाव और कर्तव्यनिष्ठा को कुछ ही वर्षों में जाग्रत कर दिया।

2 अक्टूबर, 1869 ईसवी का वह पावन दिवस था जब गुजरात के पोरबंदर (काठियावाड़) की धरती पर इस महान आत्मा का अवतरण हुआ था। इनके पिता करमचंद गांधी वहां के दीवान थे। इनकी माता पुतलीबाई एक धर्मनिष्ठ महिला थीं। गांधी जी एक साधारण विद्यार्थी थे, पर शुरू से ही सत्य के प्रति उनकी अटूट निष्ठा थी। पिता की मृत्यु के बाद बैरिस्टर पढ़ने इंग्लैंड गए। बैरिस्टर बनकर इंग्लैंड से लौटने के बाद एक मुकदमे के सिलसिले में उन्हें दक्षिण अफ्रीका जाना पड़ा। वहां भारतीयों की दुर्दशा देखकर उन्हें बड़ी वेदना हुई। उन्हें मानवोचित अधिकार दिलाने के लिए उन्होंने वहां अहिंसक आंदोलन छेड़ा जिसके आगे वहां के गोरे शासकों को झुकना पड़ा।

दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद सदस्यों की दशा सुधारने एवं अंग्रेजों के शोषण का अंत करने में वे लग गए। यहाँ उनके सत्याग्रह आंदोलन का प्रथम कार्यक्षेत्र बना चंपारण, जहाँ निलहे गोरों का अत्याचार अपनी पराकाष्ठा पर था। और, इसके बाद तो देश का हर गाँव, हर नगर उनका कार्यक्षेत्र बन गया। सत्य और अहिंसा उनके अस्त्र थे। कांग्रेस का नेतृत्व उनके हाथों में आ गया। आजादी के लिए उन्होंने सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरु किये और, उसके आगे अंग्रेज टिक न सके। अंततः 15 अगस्त, 1947 ईस्वी को हमारा देश स्वतंत्र हुआ।

महात्मा गांधी जीवनभर आध्यात्मिक मूल्यों के पक्षधर रहे। सारे राष्ट्र ने उन्हें राष्ट्रपिता का सम्मान दिया और वह 'बापू' कहलाए। वस्तुतः महात्मा गाँधी की देन आज भी प्रासंगिकतापूर्ण है

5.दहेज प्रथा

हमारे वर्तमान सामाजिक जीवन की सर्वाधिक असाध्य व्याधि है- दहेज-प्रथा। दहेज मातृ-शक्ति की विराटता के समक्ष भयंकर प्रश्न चिंह है। सदियों से शोषित नारी आज तक वास्तविक मूल्यवत्ता से वंचित है। दहेज उसकी उदात्त अभिव्यक्तियों का उपहासात्मक पुरस्कार है। आदि- शक्ति दुर्गा, विद्या-दातृ सरस्वती और दान-दातृ लक्ष्मी को आहत करने वाली यह विषैली प्रथा बहुत बड़ी चुनौती है।

आरंभ में यह प्रथा कन्या-पक्ष के प्रेम-प्रदर्शन के रूप में प्रकट हुई। आगे यह अपनी वास्तविक चेतना खो बैठी। इसने झूठी सामाजिक प्रतिष्ठा का रुप ले लिया। अधिकाधिक दहेज लेना शान की बात समझी जाने लगी।

वस्तुतः दहेज-प्रथा का विरोध वाणी से नहीं कर्म से हो और वह भी सामूहिक स्तर पर हो तो निश्चित ही सफलता मिलेगी। दहेज प्रथा के दुष्परिणाम अनगिनत हैं। अल्प वित्तीय परिवार की रूपवती, शीलवती एवं गुणवती कन्याएँ भी दहेज के अभाव में गदहों के गले बाँध दी जाती हैं। दहेज रोग वर-कन्या के मिलन मार्ग की सबसे बड़ी बाधा है। कन्याओं का आत्मदाह, अनुचित असामाजिक वृत्तियों का अवलंबन दहेज प्रथा का प्रतिफल है।

यह प्रथा नारी की अस्मिता के अवमूल्यन की ओर संकेत करती है। अतः यदि तमाम माताएँ अपने पुत्रों की शादियाँ बिना दहेज लिए करने का संकल्प कर सकेगी तो अवश्य ही समाज को इस कुष्ठ से त्राण मिल सकेगा। सच्चाई तो यह है कि बहुओं को तिलक दहेज के लिए सास और ननद के ही विष भरे ताने सहने पड़ते हैं ,पति और ससुर की झिड़कियाँ कम सुननी पड़ती है। हमारे समाज की धमनियों में पूरी तरह दहेज का जहर फैल चुका है।अस्तु तमाम नर-नारियों के दृढ़ संकल्प ही इस विषयुक्त परंपरा को नष्ट कर पाएंगे। कन्याओं को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर एवं मानसिक दृष्टि से सशक्त बनाना होगा, दहेज माँगने वालों को निर्भीकतापूर्वक बहिष्कृत और तिरस्कृत करना पड़ेगा।

निष्कर्षतः दहेज प्रथा भारतीय समाज के समुन्नत ललाट पर ऐसा रिसता हुआ घाव है जिसके लिए उत्तरदायी पुरुष और नारी- दोनों वर्ग ही हैं और समाधान सामूहिक संकल्प से ही संभव हो सकेगा।

सेट -5 (प्रश्न)
हिंदी (50 अंक)

समय : 1 घंटा 37.5 मिनट पूर्णांक: 50

परीक्षार्थी के लिए निर्देश:

Instructions to the candidate:

1.परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

Candidates are required to give their answer in their own words as far as practicable.

2.दाहिनी और हाशिये पर दिए हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

Figures in the right hand margin indicate full marks.

3.परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

Right question number with every answer.

1. संक्षेपण करें :- 05

भारत में अतिथि सत्कार की एक अद्भुत और गौरवमयी परंपरा रही है। इतिहास साक्षी रहा है की अतिथि प्राण से भी प्यारे होते हैं। 'साधु न भूखा जाए' यहां का गृह-सत्कार मंत्र रहा है। गृह स्वामिनी द्वार पर आए अतिथि को अपना पेट काटकर भी खिलाती है। उसके हृदय की विशालता और उदारता भारत की धरोहर है। अतिथियों को यहां देवता माना गया है। "अतिथि देवो भवा" यहाँ का जीवन मंत्र है। अतिथियों के जूठन के कण गृहस्वामी और गृहस्वामिनी के लिए गंगा के समान पवित्र माने गये हैं भारत का गांव अथवा शहर इस आत्मीय भाव से भरा रहा हैं, वे इस परंपरा की अवहेलना नहीं करते हैं, भूखे रह कर भी अपने अतिथि को संतुष्ट करते रहते हैं। भारतीय संस्कृति की विशालता और उदारता विश्व में अकेली परंपरा है।

2.भावार्थ लिखें:- 7.5

धनि रहीम जल पंक को, लघु जिय पियत अघाई।
उदधि बड़ाई कौन है, जगत पियासे जाई।।

अथवा

लहरें उठती हैं, गिरती हैं,
नाविक तट पर पछताता है।
तब यौवन बढ़ता है आगे,
निर्झर बढ़ता ही जाता है। निर्झर में गति ही जीवन है,

3.'पंच परमेश्वर' कहानी का सारांश लिखें।
7.5

अथवा

'गौरा' की मृत्यु का कारण क्या था? यह रहस्य कैसे उदघाटित हुआ?

4.मिलान करें:- 5x1=5

(1)नगर शोभा	(क) सुमित्रानंदन पंत
(2)पथिक	(ख) तुलसीदास
(3)कला और बूढ़ा चांद	(ग) रहीम
(4)रश्मिरथी	(घ) रामनरेश त्रिपाठी
(5)रामचिरत्रमानस	(ड़) रामधारी सिंह दिनकर

5.मुहावरों से वाक्य बनाकर अर्थ स्पष्ट करें:- 5x1=5

(क) आंखें चार होना

(ख) कमर कसना

(ग) चैन की बंसी बजाना

(घ) दाल भात में मूसलचंद

(ड़) नौ दो ग्यारह होना

6. विलोम शब्द लिखे:- 5x1=5

(क) उन्नति (ख) दृश्य (ग) स्तुति (घ) विष (ड़) शांत

7.पर्यायवाची शब्द लिखें:- 5x1=5

(क) आकाश (ख) कपड़ा (ग) पवन (घ) महादेव (ड़) हाथ

8. किसी एक पर निबंध लिखें:- 10

(क) दूरदर्शन (ख) प्रिय कवि

(ग) दहेज प्रथा (घ) छात्र और अनुशासन

(ड़) शरद ऋतु

सेट -5 (उत्तर)
हिंदी (50 अंक)

1.

अतिथि सत्कार

भारत में अतिथि सत्कार की पुरानी और गौरवमयी परंपरा रही है। अतिथि को देवता माना गया है। उनके जूठन को गंगा के पवित्र जल की तरह पवित्र कहा गया है। यह अतिथि सत्कार की परंपरा भारतीय संस्कृति की विशालता एवं उदारता का परिचायक है।

2.

प्रस्तुत दोहे में कवि रहीम ने उस शासन व्यवस्था की प्रशंसा की है जो चंद्रमा के समान सबको सुख प्रदान करती है। उस सूर्य की क्या प्रशंसा करें जो अपने ताप से लोगों को जलाता है। बड़े सरल ढंग से कवि मानवीय दृष्टि और जीवन का रहस्य समझाया है। कवि कहते हैं कि पंक में संग्रहित जल धन्य है क्योंकि उसके जल को पशु, पक्षी और सभी जीवधारी उपयोग करते हैं और अपनी प्यास बुझाते हैं। लेकिन वह सूर्य जो बड़ा है उसके ताप से पंक का जल सूख जाता है। ऐसी स्थिति में धरती के जीव प्यासे रह जाते हैं। अतः सुख पहुचाने वाला बड़ा होता है दुख देने वाला नहीं।

अथवा

प्रस्तुत पंक्तियाँ आरसी प्रसाद सिंह द्वारा रचित है। इन पंक्तियों में कवि ने बतलाया है कि नाव खेनेवाला मल्लाह लहरों को उठते-गिरते देखकर पछताता रहता है।लेकिन युवावस्था कुछ और ही बात कहती है। यौवन आगे बढ़ता ही रहता है। उसी तरह निर्झर भी बढ़ता ही जाता है। यौवन चुनौतियों से लड़ते रहने का संदेश देता है।

3. अलगू चौधरी और जुम्मन शेख नामक दो मित्र थे। दोनों की मित्रता गाढ़ी थी। जुम्मन शिक्षित था,अलगू धनवान्। जुम्मन की एक बूढ़ी मौसी विधवा थी। वह नि:संतान थी, पर थी मिल्कियत वाली। उसने चारों ओर आँख उठाकर देखा, जुम्मन के सिवा कहीं उसका कोई अपना नजर न आया। मौसी ने जुम्मन के नाम अपनी मिल्कियत रजिस्ट्री कर दी।

जुम्मन ने वादा किया था कि वह आजीवन मौसी को खाना-कपड़ा देगा। रजिस्ट्री होते ही जुम्मन ने रंग बदला। वह मौसी जो पहले सर पर बैठी थी, अब पैरों तले कुचली जाने लगी। बूढ़ी मौसी ने समझा कि वह सब जुम्मन की पत्नी की बदमाशी है। उसने जुम्मन से शिकायत की। पर जुम्मन चुप रहा।

तब मौसी का माथा ठनका। उसने जुम्मन को पंचायत की धमकी दी। बूढ़ी मौसी हाथ में लकड़ी लिये आस-पास के गांवों, पंचों के पास दौड़ती रही। सबके सामने उसने दुख के आँसू बहाए। अलगू इस झगड़े से अलग रहना चाहता था। पर, बूढ़ी मौसी उसे इस बीच घसीटना चाहती थी। अलगू ने मौसी से कहा, " जुम्मन मेरा मित्र है, उससे बिगाड़ नहीं कर सकता।" मौसी ने कहा, "तो क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?"इस ललकार को सुनकर अलगू के भीतर सोया हुआ धर्म ज्ञान जाग पड़ा। उसने पंचायत में सम्मलित होने की स्वीकृति दे दी। प्रश्न उठा कि पंच किसे बनाया जाए। मौसी ने अलगू को पंच बनाया। लोगों ने समझा, अब जुम्मन की विजय निश्चित है। अलगु जुम्मन का मित्र है और जुम्मन के पक्ष में फैसला करेगा। पर, सरपंच के पद पर बैठते ही अलगू का उत्तरदायित्व ज्ञान जाग पड़ा। वह भूल गया कि जुम्मन उसका दोस्त है। उसने सत्य और न्याय का पक्ष लिया। उसका फैसला बूढ़ी मौसी के पक्ष में हुआ। जुम्मन और अलगू की मित्रता सत्य के इस धक्के को न सह सकी, उसकी नींव हिल गई ।

कुछ दिनों के बाद अलगु के बैलों की जोड़ी में से एक मर गया। अलगू को संदेह था कि जुम्मन ने बैलों को विष दिया है। अलगू ने सोचा, एक बैल से खेती होना मुश्किल है। इसलिए उसने समझू साहू को बैल बेच दिया। कुछ दिन बाद वह बैल भी मर गया। गुस्से में आकर समझू साहू ने पंचायत बुलाई और जुम्मन को सरपंच बनाया। लोगों ने समझा कि अलगू की हार निश्चित है। पर, जुम्मन जब सरपंच के आसन पर बैठा तो उसका उत्तरदायित्व ज्ञान जाग बढ़ा और उसने सत्य का पक्ष लिया। उसका फैसला अलगू के पक्ष में हुआ। जिसके बाद जुम्मन और अलगू की पुरानी मित्रता फिर से गहरी हो उठी, क्योंकि दोनों सत्य से परिचित हो चुके थे।

अथवा

'गौरा' के दूध देने से पूर्व जो ग्वाला महादेवी वर्मा के घर पर दूध देता था। उसने आग्रह करके गौरा का दूध दूहने का कार्यभार संभाल लिया था। लेकिन उसके मन में एक चोर छिपा हुआ था।यह गौरा का आना सह नहीं पाया, क्योंकि उसके कारण उसकी आर्थिक हानि हो रही थी। अवसर मिलते ही गुड़ में लपेटकर सुई उसे खिलाकर उसकी असमय मृत्यु निश्चित कर दिया। ताकि गाय के मर जाने पर वह पुनः दूध देने लगे। गाय के बीमार हो जाने पर चिकित्सकों ने यह रहस्य, निरीक्षण, परीक्षण, एक्स-रे

इत्यादि के आधार पर किया था। ग्वाला भी संदेह के बाद भाग निकला था। अतः गौरा की मृत्यु ग्वाला के कारण हुई थी।

4.

(1)नगर शोभा	(ग) रहीम
(2)पथिक	(घ) रामनरेश त्रिपाठी
(3)कला और बूढ़ा चांद	(क) सुमित्रानंदन पंत
(4)रश्मिरथी	(ड़) रामधारी सिंह दिनकर
(5)रामचरितमानस	(ख) तुलसीदास

5.

(क) आंखें चार होना-(प्यार होना) - सर्वप्रथम पुष्प वाटिका में राम-सीता की आंखें चार हुई थी।

(ख) कमर कसना-(तैयार होना) - जब हम लोगों ने कमर कस ली है, तो बाजी भी हमारी ही होगी।

(ग) चैन की बंसी बजाना-(शांत और सुखमय जीवन बिताना) - उनके यहां हमेशा चैन की बंसी बजती रहती है।

(घ) दाल -भात में मूसलचंद-(बेमतलब बीच में टपक पड़ना) - अपने काम से मतलब रखो, निरर्थक दाल -भात में मूसलचंद बनने आ गए हो।

(ड़) नौ-दो ग्यारह होना-(भाग जाना) - पुलिस को देखकर चोर नौ-दो ग्यारह हो गए।

6.

(1)अवनति (2)अदृश्य (3)निंदा (4)अमृत (5)अशांत

7.

(क) आकाश- नभ, व्योम

(ख) कपड़ा- वसन, वस्त्र

(ग) पवन- हवा, वायु

(घ) महादेव- शंकर, शंभु

(ड़) हाथ- कर, बाहु

8.

(क) दूरदर्शन

दूरदर्शन मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान प्रसार एवं प्रचार का महत्वपूर्ण साधन है। इसका मुख्य कारण यह है कि दूरदर्शन में श्रम एवं दृश्य दोनों ही साधनों की विशेषताओं का समावेश है। यह साहित्य, नृत्य एवं कला को समन्वित रूप से प्रस्तुत करने वाला उपकरण है। इसके अविष्कार ने जीवन को एक नया आयाम प्रदान किया है। शत -सहस्र किलोमीटर की दूरी पर घटित होने वाली घटनाओं को प्रत्यक्ष देख लेना सचमुच विस्मयकारी है। भारत की लगभग 50 प्रतिशत जनता इस कौतूहलवर्धक उपकरण द्वारा लाभांवित हो रही है।

दूरदर्शन का आविष्कार सन 1944 ईस्वी में अमेरिकी वैज्ञानिक जॉन लोगी बेयर्ड ने किया था। यह रेडियो प्रणाली द्वारा वस्तुओं के भेजे गए चित्रों को प्राप्त करने वाला साधन है। इसमें फोटो इलेक्ट्रिक प्रभाव द्वारा बिंबों की प्रकाश किरणों को विद्धुत तरंगों में परिवर्तित कर दिया जाता है और फिर उन्हें सुदूर स्थानों तक प्रसारित किया जाता है। यह

विद्युत तरंगें दूरदर्शन सेट पर पुनः चित्रों में बदल जाती हैं। इसी के साथ रेडियो प्रणाली द्वारा ध्वनि तरंगें भी साथ साथ काम करती हैं।

15 सितंबर 1959 ईस्वी को दिल्ली में दूरदर्शन केंद्र की स्थापना के साथ भारत में दूरदर्शन व्यवस्था का सूत्रपात हुआ। इसका औपचारिक उद्घाटन भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद ने किया था। तब से लेकर आज तक इसमें नवीन खोजों के आधार पर प्रगति होती रही है।

दूरदर्शन सेवा में द्रुतगति से होनेवाली प्रगति दूरदर्शन की सफलता एवं लोकप्रियता का स्वयंसिद्ध प्रमाण है। इसके कार्यक्रम बहुउद्देशीय एवं बहुआयामी हैं। वे जीवन के प्रयः प्रत्येक क्षेत्र एवं पक्ष को दृष्टि में रखकर आयोजित किए जाते हैं। दूरदर्शन समाज के विशाल जनसमूह को विभिन्न प्रकार से प्रभावित एवं लाभान्वित कर रहा है। इसके द्वारा अनेक व्यक्तियों को साक्षर एवं शिक्षित बनाया जा रहा है।

उच्च शिक्षा, कृषि दर्शन, मौसम विज्ञान संबंधी जानकारी, देश विदेश के इतिहास और उनकी सभ्यता संस्कृति, खेलकूद आदि की उपलब्धियों की जानकारी प्रदान करने में दूरदर्शन समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। लेकिन, कतिपय ऐसे कार्यक्रम भी दिखाए जाते हैं जिनसे समाज की दिशा विकृत हो रही है। ऐसे में आवश्यकता इस बात की है कि इसके माध्यम से समाजोपयोगी कार्यक्रम प्रसारित किया अपना जाए।

(ख) प्रिय कवि

आधुनिक काल के हिंदी कवियों में मैथिलीशरण गुप्त का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनका जन्म चिरगांव (जिला झांसी, उत्तर प्रदेश) में सन 1883 ई0 में हुआ था। उनके पिता का नाम सेठ रामचरण था, जो एक धन-संपन्न वैष्णव थे।

मैथिलीशरण गुप्त को काव्य-प्रतिभा पैतृक संपत्ति अथवा विरासत के रूप में प्राप्त हुई, उनके पिता श्री 'कनकलता' उपनाम से कविता किया करते थे। मैथिलीशरण गुप्त को बचपन से ही कविता करने का शौक था। प्रारंभ में वह ब्रजभाषा में कविता करते थे, परंतु

बाद में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के प्रभाववश खड़ी बोली में कविता करने लगे। उनकी सरस कविताओं ने यह सिद्ध कर दिया कि ब्रज भाषा के समान खड़ी बोली में भी सरस एवं कर्णप्रिय कविता लिखी जा सकती है। सन 1906 ई0 से गुप्त जी की कविताएं आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा संपादित मासिक पत्रिका 'सरस्वती' में प्रकाशित होने लगी थी, वे अनेक मान-सम्मान प्राप्त करने के उपरांत आप सन् 1964 ईस्वी में स्वर्गवासी हुए।

गुप्त जी की प्रकाशित मौलिक रचनाओं की संख्या लगभग 52 है। इसके अलावा कई अनुवादित ग्रंथ भी है। आप की प्रसिद्ध काव्य-कृतियां है, भारत-भारती, जयद्रथ-बध, साकेत, यशोधरा, पंचवटी, द्वापर, वैतालिक, अनघ, नहुष, सिद्धराज, विकट भट तथा विष्णुप्रिया।

राष्ट्रीय भावना और भारतीय संस्कृति के प्रति अविचल निष्ठा आप की कविता की प्रमुख विशेषताएं हैं। अपनी प्रथम रचना 'भारत-भारती' द्वारा उन्होंने देशवासियों का ध्यान भारत के अतीत के गौरव एवं वर्तमान की दुर्दशा की ओर आकृष्ट करके पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त होने की प्रेरणा प्रदान की। उसके बाद 'वैतालिक' के गीतों द्वारा अपने एक सच्चे वैतालिक के रूप में भारतवासियों की मोहनिद्रा भंग की और उन्हें प्रगति की ओर उन्मुख किया। राष्ट्रीयता द्वारा समस्त रचनाओं के ओत-प्रोत होने के कारण सन 1936 ईस्वी में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने गुप्त जी को राष्ट्रकवि की उपाधि से विभूषित किया।

गुप्त जी की काव्य-प्रतिभा की सबसे बड़ी विशेषता है-कालानुसार काव्य सृजन की क्षमता, अर्थात् उत्तरोत्तर बदलती हुई भावनाओं और काव्य-प्रणालियों को ग्रहण करते चलने की शक्ति। समाज के दलित, शोषित, पतित एवं निम्नवर्ग की समानता एवं प्रतिष्ठा के लिए गुप्त जी की पुकार सर्वोपरि है। नारी की महत्ता और उपेक्षा के प्रति गुप्त जी की दृष्टि सदा मार्मिक रही है। इसलिए 'द्वापर' में गुप्त जी ने नारी की महत्ता को प्रतिपादित किया है तथा 'यशोधरा' में उसकी दुर्दशा पर आंसू बहाए हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि गुप्त जी के काव्य से हमें धर्म, समाज, राजनीति तथा साहित्य प्रत्येक प्रकार की युगानुकूलता के दर्शन होते हैं। इसलिए वह मेरे प्रिय कवि हैं।

प्रश्न-सेट-6

हिन्दी - 50 अंक

सभी प्रश्नों के उत्तर दें :-

1. किसी एक पर निबंध लिखें- 10

(क) आपके जीवन का लक्ष्य

(ख) भ्रष्टाचार : कारण और निवारण

(ग) आज की राजनीति

(घ) दीपावली त्योहार

(ड़) पर्यावरण-संरक्षण

2. विपरीतार्थक शब्द लिखें :- 5x1=5

(क) स्वर्ग

(ख) स्वच्छ

(ग) परतंत्रता

(घ) श्वेत

(ड़) निर्धन

3. पर्यायवाची शब्द लिखें :- 5x1=5

(क) अहंकार

(ख) मोह

(ग) निर्धन

(घ) फूल

(ड़) रात

4. 'हिमालय का संदेश' कविता का सारांश लिखें । $7^1/2$

अथवा, 'जीवन संदेश' कविता में कवि ने क्या संदेश दिया है ?

5. 'पंच परमेश्वर' कहानी का सारांश लिखें- $7^1/2$

अथवा, 'गौरा' शीर्षक पाठ का सारांश लिखें ।

6. वाक्य शुद्ध करें : 5

(क) मेरी कलम अच्छा है।

(ख) सूरज उग गयी।

(ग) मेरा पुस्तक खो गया।

(घ) चाय मीठा है।

(ङ) हवा चल रहा है।

7. संक्षेपण करें : 5

जीवन में विनम्रता का विरोध महत्त्व है। 'विनम्रता' का अर्थ है विशेष रूप से नम्र बना रहना। हम किसी से भी मिलें, बात करें, साधारण से साधारण बातचीत में नम्र बने रहना चाहिए। नम्रता एक ऐसा गुण है, जिससे हमारा चरित्र विशिष्ट बनता है। हमें चाहिए कि हम किसी से बातचीत करें, किसी के पास आएँ, घर हों, बाहर हों, ऑफिस में हों, पुस्तकालय में हों- सदैव नम्रता का परिचय देना चाहिए। नम्रता का अर्थ दब्बू बनने से नही है, बल्कि शालीन और शिष्ट बने रहने में है। हमारे पास बहुत सारा धन है, बहुत सारी शक्तियाँ हैं, तो सारा धन और सारी शक्तियाँ निरर्थक साबित होंगी। नम्रता हमारे चरित्र का उत्तरोत्तर विकास करती है। यह हमें सर्वत्र सम्मानित भी करती है।

8. पंक्ति पूरी करें : 5

(i) रवीन्द्र बाबू एक महान् ..... हैं।

(ii) सुख-दुःख के दोनों ..... से, चल रहा .....मनमानी है।

(iii) रहिमन, जिह्वा ....., कहि गयी सरग-पतार ।

(iv) मानचित्र पर जो मिलता है, नहीं देश ..... है।

हिन्दी - ५० अंक (उत्तर)

1. का उत्तर :- (क) आपके जीवन का लक्ष्य

हमारे जीवन का लक्ष्य क्या होना चाहिए ? इस पर गंभीरतापूर्वक विचार किया जाना चाहिए। हमारे जैसे हजारों-लाखों-करोड़ों छात्र जो अध्ययनरत होते हैं, उनके सामने यह तस्वीर कभी साफ नहीं रहती, कि उन्हें बड़े होकर क्या बनना है ? अथवा यह कि उनकी पढ़ाई का मूल उद्देश्य क्या है? अथवा क्या होना चाहिए ? अकसर शिक्षक कक्षा में यह सवाल रखते हैं, तो इसका उत्तर कोई डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक, समाजसेवी, नेता, आविष्कारक, वैज्ञानिक, व्यवसायी अथवा किसान आदि कहकर बातचीत समाप्त कर लेते हैं। जबकि कुछेक छात्र कहते हैं कि 'मैं एक अच्छा आदमी बनना पसंद करूँगा।

वस्तुतः आज यह सवाल हरेक छात्र एवं अभिभावक की जुबान पर रहनी चाहिए कि उनके जीवन का लक्ष्य क्या होगा? आज जिस तरह की शिक्षा पद्धति है, उस पर यह प्रश्न अकसर अनुत्तरित ही रह जाता है। एक ओर हमारे देश में सरकारी स्तर पर सस्ती शिक्षा दी जा रही है, तो दूसरी ओर महँगे प्राइवेट स्कूलों में अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा से अमीर परिवार के बच्चे लाभान्वित हो रहे हैं। ऐसे समय में यह तय नहीं हो पाता कि बच्चे जैसा बनना चाहते हैं, वैसी शिक्षा सर्वसुलभ और सस्ती होगी। बच्चे बहुत कुछ

चाहते हैं, परन्तु सरकारी सुविधाएँ नगण्य हैं, तब छात्र कैसे डॉक्टर-इंजीनियर बनने की कल्पना कर सकेगा। धनी परिवार के बच्चे तो महँगे स्कूलों एवं कोचिंग संस्थानों में पढ़ाई कर लेते हैं, लेकिन गरीब परिवार के बच्चे लाख चाहकर भी ऊँची पढ़ाई नहीं कर सकते। सरकारें न तो गरीबों को पढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं, न उन पर ध्यान हीं देना चाहती हैं। सरकार कुछ करती भी हैं, तो उनके पीछे वोट की राजनीति छिपी रहती है। ऐसे समय में गरीब छात्रों के पास ट्यूशन पढ़ाकर खुद ही पढ़ने-लिखने एवं प्रतियोगिता परीक्षाओं हेतु संघर्षशील बने रहने का रास्ता बच जाता है।

वस्तुतः आज हम छात्रों को इस प्रश्न पर गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए क्योंकि जो छात्र अपना लक्ष्य निर्धारित कर पाते हैं, कमोबेश वही आगे सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते हैं। आज के इस विषम समय में हम छात्रों का यह दायित्व बनता है कि हम आकाश की ओर देखने और ऊँची उड़ान भरने की कल्पना अवश्य करें। यही बात हमें प्रगति के पथ को आलोकित कर पाएँगी। भारत के पूर्व राष्ट्रपति डा0 कलाम ने कहा था- ' सपने वो नहीं हैं, जो हम नींद में देखते हैं, बल्कि वो हैं जो हमारी लक्ष्य को पूरा करने के लिए सतत प्रयत्नशील बने रहना चाहिए ।

2. का उत्तरः-

(क) स्वर्ग-नरक

(ख) स्वच्छ-अस्वच्छ/गंदा

(ग) परतंत्रता-स्वतंत्रता/आजादी

(घ) श्वेत-श्याम/अश्वेत

(ड़) निर्धन-धनवान/धनाढ्य

3. का उत्तर

(क) अहंकार–घमंड, अभिमान, गर्व

(ख) मोह– ममता, माया

(ग) निर्धन– गरीब, धनहीन, दीन

(घ) फूल–कुसुम, पुष्प, सुमन

(ध) रात–निशा, रात्रि, रजनी

4. का उत्तर:– 'हिमालय का संदेश' शीर्षक कविता रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित कविता है। इस कविता में यह बताया गया है कि भारत की पहचान केवल एक भौगोलिक सत्ता के रूप में नहीं है, बल्कि उसके भीतर जो प्रेम, एकता, त्याग और समर्पण की भावना प्रसारित हो रही है, उसके द्वारा भारत भूमि पहचानी जाती है।

भारत केवल मानचित्र पर स्थापित कदापि नहीं है, वह हर भारतवासी के मन–प्राणों में बसा है, यह एक ऐसा स्वप्न है, जो इस धरा को ऊपर ले जाने में सक्षम है। भारत की भूमि अपने साथ एक ऐसी विचारधारा को लेकर चली आ रही है, जो वस्तुत: 'स्वर्ग' को धरती पर लानेवाला है और उससे एक ऐसा भाव पैदा हो रहा है, जिसके माध्यम से भारतवासी अपने कर्त्तव्य के पथ पर जग जाता है, उसके भीतर कर्त्तव्य बोध पैदा हो जाता है। 'भारत एक विचार, स्वर्ग को भू पर लानेवाला। भारत एक भाव, जिसको पाकर मनुष्य जगता है।।'

भारत की धरती ही सदियों से त्याग, प्रेम, समर्पण, साधना और एकता का पावन पाठ पढ़ाता आया है। भारत के तप:पूत साधु संतो, ऋषियों–महर्षियों, विद्वानों–विचारकों ने आत्म–चिंतन एवं आत्म–मनन के नव द्वार का उद्घाटन किया है। कवि के शब्दों में–

'भारत है कल्पना मनुज को रागमुक्त करने की ।
जहाँ कहीं एकता अखंडित, जहाँ प्रेम का स्वर है।
देश-देश में खड़ा वहाँ भारत जीवित, भास्कर है।
भारत जहाँ, वहाँ जीवन-साधन नहीं है भ्रम में, '

वस्तुत: 'हिमालय का संदेश' शीर्षक कविता समरसता का संदेश देती है। यहाँ सभी धर्म, मजहब, संस्कृति, विचारधारा एवं पंथ के लोग रहते हैं, सभी आपस में प्रेम एवं भाईचारे का संदेश देते हैं। इसीलिए कवि संदेश देना चाहता है-

' समरस कर हो कामना, वहीं भारत को करो प्रणाम !
वृथा, मत लो भारत का नाम।'

5. का अथवा का उत्तर :- महादेवी वर्मा द्वारा लिखित 'गौरा' एक मार्मिक रेखाचित्र है। इसमें गौरा नामक गाय का करूणापूर्ण संस्मरण है।

लेखिका को उसकी बहन दूध प्राप्त करने के लिए एक गाय देती है। गाय बछिया के रूप में होती है, जो अपने सुझौल सुंदर शरीर, आकर्षक चाल एवं साहचर्यजनित लगाव से सबका मन मोहित कर लेती है।

महादेवी वर्मा लिखती हैं कि 'गौरा मेरी बहिन के घर पली हुई गाय की वय: संधि तक पहुँची हुई बछिया थी। उसे इतने स्नेह और दुलार से पाला गया था कि यह अन्य गोवतसाओं से कुछ विशिष्ट हो गई थी।' (प्रारंभिक अंश)

लेखिका ने बतलाया है कि उनके घर के समीप का एक ग्वाला, जो महादेवी वर्मा को गाय नहीं होने पर प्रतिदिन दूध पहुँचाया करता था, जब 'गौरा' दूध देने लायक हो जाती है और ग्वाले का दूध छुड़ा दिया जाता है, तब ईर्ष्यावश वह ग्वाला 'गौरा' को सूई खिलाने का दुष्कृत्य कर बैठता है। सूई के दुष्प्रभाव के कारण 'गौरा' बीमार पड़ जाती है और बहुत प्रयत्न के

बाद भी वह जीवित नहीं रह पाती। यह दुर्घटना लेखिका को भीतर तक आहत कर देती है। वह कहती है कि आज इंसान स्वार्थ में इतना अंधा हो गया है कि गो माता पर भी ममता नहीं रह गई है।

पूरे पाठ में एक ऐसा स्वाभाविक प्रवाह एवं लय है कि पाठक पूरा पढ़े बिना रह नहीं सकता। शब्द-संगठन एवं शब्द-संयोजन की दृष्टि से प्रस्तुत रेखाचित्र अत्यंत प्रभावपूर्ण है।

6. वाक्य शुद्ध करें :-

(क) मेरी कलम अच्छी है।

(ख) सूरज उग आया।

(ग) मेरी पुस्तक खो गई।

(घ) चाय मीठी है।

(ड़) हवा चल रही है।

7. का उत्तर:-

संक्षेपण का शीर्षक- 'नम्रता का महत्त्व'

दिए गए अवतरण की शब्द संख्या-130

संक्षेपण

जीवन में नम्रता का विशेष महत्त्व है। नम्रता से हमारा चरित्र एवं विचार सुंदर और प्रखर बनता है। हम कहीं भी रहें, किसी भी पद पर रहें, नम्रता के बगैर हमारी प्रतिष्ठा स्थिर नहीं रह सकती। यह हमें सर्वत्र सम्मानित भी करती है।

(संक्षेपण की शब्द संख्या-43)

8. का उत्तर :-

(i) कवि

(ii) तीरों, राह

(iii) बावरी

(iv) भारत

सेट–7

हिन्दी (50 अंक)

समयः 1 घंटा 37½ मिनट पूर्णांकः 50

परीक्षार्थी के लिये निर्देश :

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

2. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

3. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

प्रश्न

1. संक्षेपण करेः 5

अनुशासन की आवश्यकता छात्र जीवन के लिए सबसे अधिक जरूरी है। वे विवेक–संगत श्रृंखला में बँधे रहने की आदत डालें। उनकी अपनी कार्य क्षमता बिखरकर नष्ट न होने पाए, उनकी यह साधना के बादल बंजर व पथरीली भूमि पर न बरसें, उनकी मनोकांक्षा कलंक से युक्त किसी लक्ष्य की लालसा मात्र न बन जाए– इसके लिए छात्रों को व्यावहारिक जीवन में कठोर अनुशासन के नियमों का पालन करना परमावश्यक है। जीवन के हर क्षेत्र में अनुशासन की ही आवश्यकता पड़ती है। केवल विद्यालय में ही नहीं, वरन् परिवार एवं समाज में भी अनुशासन के नियमों का पालन करना चाहिए। उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि पूरी सृष्टि और पूरा ब्रह्माण्ड भी अनुशासन में ही बँधा हुआ है। यदि जीवन में अनुशासन न हो, तो हम अराजकता एवं अनुषासनहीनता के शिकार हो जाएँगे।

2. किसी एक विषय पर निबंध लिखिये। 10

(क) डाकिया

(ख) सार्वजनिक पुस्तकालय

(ग) कम्प्यूटर

(घ) आपका प्रिय पशु

(ड़) प्रदूषण

3. वाक्य द्वारा मुहावरों के अर्थ स्पष्ट कीजिये – 1×5 = 5

(क) आंखें चुराना (ख) कन्नी काटना

(ग) गोबर गणेश होना (घ) दम तोड़ना

(ड़) रंग चढ़ना

4. वाक्य–प्रयोग द्वारा लिंग निर्णय कीजिये । 1×5 = 5

भवन, प्राण, कलम, तलवार, शराब।

5. दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखिये । 1×5 = 5

कपड़ा, मेघ, हाथी, पुत्री, धन ।

6. अर्थ स्पष्ट कीजिये । 5

(क) रहिमन, निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय।

सुन अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहें कोय।।

अथवा

(ख) दुनिया देखी पर कुछ न मिला, तुझको देखा सब कुछ पाया

संसार–ज्ञान की महिमा से, प्रिय की पहचान कहीं सुन्दर ,

तेरी मुस्कान कहीं सुन्दर ।

7. 'मंगर' का चरित्र–चित्रण अपने शब्दों में कीजिए। 7½

अथवा

डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्यिक परिचय दीजिए।

8. सुमित्रानन्दन पंत की कविता 'भारतमाता ग्रामवासिनी' का सांराश प्रस्तुत कीजिए। 7½

अथवा

'जीवन–संदेश' कविता के उपदेशों का वर्णन कीजिये ।

सेट–7

उत्तर (50)

1. **शीर्षक–** *अनुशासन की महत्ता*

छात्रों को व्यवहारिक जीवन में अनुशासन के नियमों का पालन करना परमावश्यक है। हम जीवन के हर क्षेत्र में अनुशासन की श्रृंखला में बंधे रहकर भी अपनी सम्पूर्ण क्षमता का उपयोग कर सकते हैं और अपनी–अपनी कामनाओं की पूर्ति कर सकते हैं।

(कुल शब्द संख्या–120, संक्षेपण की शब्द–संख्या–40)

2. (क) **डाकिया**

डाकिया डाक–विभाग का एक कर्मचारी है। उसका कार्य चिट्ठी, छोटा पार्सल और मनिआर्डर बांटना है। लोग उत्सुकतापूर्वक डाकिये के आगमन की प्रतीक्षा करते हैं। जब डाकिया एक या दो पत्र लाता है, तो लोग खुश होते हैं। जब वह दरवाजे पर बिना ठहरे हुए चला जाता है तो लोग निराश हो जाते हैं।

डाकिया बड़ा महत्वपूर्ण कार्य करता है। पोस्ट ऑफिस का काम अंत में डाकिये के द्वारा ही पूरा होता है। एक व्यक्ति से दूर रहने वाले दूसरे व्यक्ति के पास पत्र, मनिआर्डर और पार्सल इत्यादि भेजवाना ही पोस्ट–ऑफिस का काम है। चिट्ठी छाँटनेवाले; डाक ढोनेवाले और किरानी केवल पहले होनेवाले कार्य संपादित करते हैं। डाकिया ही अंत में पत्र आदि वस्तुओं को उन व्यक्तियों के पास पहुँचा देता है जिनके नाम से वे चीजें भेजी जाती हैं।

डाकिया बहुत कम वेतन पाता है। फिर भी, वह अपना काम ईमानदारी से करता है। मनिआर्डर की भारी रकम, बीमा कराया हुआ पार्सल और पत्र उसे सुपुर्द किए जाते हैं। डाकिया उचित व्यक्ति को चीजें देने की चेष्टा करता है। परंतु, कभी–कभी वह गलती करता है। तब उसे घाटा होता है। उसे सच्चे हकदार की क्षतिपूर्ति भी करनी पड़ती हैं। कभी–कभी वह गलती से अधिक रूपए दे देता है। तब उसे अपनी जेब से ही क्षतिपूर्ति करनी पड़ती है।

गाँव के पोस्ट ऑफिस में प्रायः एक ही डाकिया रहता है जो सप्ताह में दो बार पत्र. आदि बाँटता है। शहरों में अधिक संख्या में डाकिये रहते हैं। इन्हें मुहल्ला बाँटा जाता है। यहाँ तक कि एक ही मुहल्ले में विभिन्न डाकिये दिन में विभिन्न समय पर आते हैं। डाकिये के सारे कार्य नियत किए रहते हैं। डाकिया चिट्ठी पानेवाले व्यक्ति की खोज करने में अधिक कष्ट उठाता है और प्राप्त करके उचित व्यक्ति को ही उसे देता है।

डाकिये का कार्य बड़ा ही उत्तरदायित्व का कार्य है। उसके ईमानदारीपूर्ण से कार्य पर बहुत–से लोगों का भाग्य निर्भर करता है। इसलिए डाकिये को बहुत ईमानदार और विवेकपूर्ण होना चाहिए।

(ख) सार्वजनिक पुस्तकालय

(1) परिचय (2) विभाग (3) उपयोगिता (4) उपसंहार

(1) पुस्तकालय एक स्थान है जहाँ पुस्तकों का एक बहुत बड़ा संग्रह रहता है। पुस्तकालय दो प्रकार का होता हैः– निजी और सार्वजनिक। कुछ लोगों को किताबों के प्रति बड़ी अनुरक्ति रहती है और वे अपने ज्ञान की तृष्णा को पूर्ण करने के लिए किताबें जमा करते हैं। कुछ लोग जैसे षिक्षक , वकील, डाक्टर आदि को अपने–अपने पेशे के संबंध में बहुत सी किताबों का अध्ययन करना पड़ता है । इसलिए वे अपने लिए पुस्तकालय रखते हैं। ये सभी निजी पुस्तकालय कहलाते हैं। जिन पुस्तकालयों में सभी को पढ़ने की सुविधा रहती हैं । वे सार्वजनिक पुस्तकालय कहलाते हैं।

(2) सार्वजनिक पुस्तकालय के प्रायः दो विभाग होते हैं। एक वाचनालय विभाग और दूसरा, पुस्तक करनेवाला विभाग । वाचनालय में तरह–तरह के समाचार पत्र, साप्ताहित पत्र और मासिक पत्रिकाएँ टेबूल पर रखी रहती हैं। कोई भी व्यक्ति वहाँ जा सकता है और उन्हें पढ़ सकता है। पुस्तकालय अध्यक्ष द्वारा किताबों की सूची रखी जाती है। हर एक व्यक्ति उस सूची को देख सकता है और वाचनालय में पढ़ने के लिए कोई भी पुस्तक ले सकता है ।

पुस्तक करनेवाले विभाग में सदस्यों की सूची रखी जाती है। सदस्यों को थोड़ा मासिक चंदा देना पड़ना है। उन्हें पुस्तकों के लिए प्रारंभिक जमानत भी देनी पड़ती है। तब वे घर पर व्यवहार के लिए पुस्तकें ले जा सकते हैं। हर पुस्तकालय में घर पर व्यवहार के लिए पुस्तकें लेने के नियमों में भेद होता है।

(3) पुस्तकालय बहुत ही उपयोगी संस्था है। हर एक विषय पर पुस्तकें खरीदना प्रत्येक व्यक्ति के लिए संभव नही होता है। पुस्तकालय में वे ही किताबें घुमकर कई व्यक्तियों के हाथों में जाती है। एक आदमी बहुत कम खर्च में या बिना खर्च के भी बहुत सी किताबें पढ़ सकता है। सूक्ष्म एवं मनोयोग्यपूर्वक अध्ययन के लिए यह उपयुक्त स्थान हैं । यहाँ कोई बाधा नहीं है और हर कोई पूर्ण ध्यान से पुस्तकों को पढ़ सकता है।

ज्ञान और शिक्षा के प्रचार में पुस्तकालय से अधिक सहायता मिलती है। बहुत सी किताबें इतनी मूल्यवान है कि औसत व्यक्ति उन्हें नहीं खरीद सकता है । ऐसी स्थिति में लोग इन किताबों को पुस्तकालय में पढ़कर इनसे लाभ उठा सकते हैं।

(4) हिंदुस्तान में बहुत कम अच्छे पुस्तकालय हैं। हर एक गाँव में पुस्तकालय खोलने की आज अधिक आवश्यकता है तभी हमारे भारतवर्ष के गाँवों में फैली निरक्षरता दूर होगी तथा साक्षरता का प्रतिशत बढेगा ।

(ग) कम्प्यूटर

आज का युग विज्ञान का युग है। एक–से–एक नए आविष्कार मानव जीवन को प्रभावित कर रहे हैं। कंप्यूटर उनमें से एक हैं । यह पूर्णतः आज्ञाकारी मशीन है जिसमें उपयोगकर्त्ता कोई भी तथ्य डालता है तो सही–सही उसका उत्तर परदे पर दे देता है।

कंप्यूटर की प्रगति–आज बैंकों, सरकारों एवं जन–प्रतिष्ठानों एवं सभी प्रकार के बड़े कार्यालयों में कंप्यूटर का उपयोग हो रहा है। कार्यालयों में सूचना की उपलब्धता एवं कार्य दोनों तेजी से एवं वैज्ञानिक ढंग से हो रहे हैं। प्रगति की रफ्तार तीव्र हो गयी है।

कंप्यूटर इंजीनियर–भारत अमेरिका को 40 प्रतिशत कंप्यूटर अभियन्ता भेज रहा है जबकि इंग्लैण्ड मात्र 16 प्रतिशत कंप्यूटर इंजीनियर ही भेज पाता है। भारत कंप्यूटर के क्षेत्र में तेजी से प्रगति कर रहा है।

चार्ल्स बेवज ने पहला–कंप्यूटर बनाया–19वीं शताब्दी में चार्ल्स बेवज ने पहला कंप्यूटर बनाया था। आज तो संसार भर के पुस्तकालय कंप्यूटर की मदद से कंप्यूटर के स्मरण–पटल पर लाए जा सकते हैं। छात्रों के लिए यह अत्यन्त उपयोगी है।

उपयोगिता– कंप्यूटर कोई गलती नहीं करता है। मानव मस्तिष्क का कार्य यह शुद्धतम रूप में करता है। इस बात की आशंका बढ़ गयी है कि कहीं मानव मस्तिष्क कंप्यूटर का दास न बन जाए।

पाँच भाग– कंप्यूटर मशीन के पाँच भाग होते हैं।– स्मरण खंड, नियंत्रण खंड, इनपुट खंड और आउटपुट खंड। सूचनाएँ कंप्यूटर में भरी जाती हैं। कंप्यूटर की भाषा पृथक् होती है। उसी भाषा में सामग्री डालकर अपेक्षित परिवर्तन किया जाता हैं स्मरण खंड में पूर्व डाली गयी सामग्री रहती है। आवश्यकता पड़ने पर इसे मुद्रित कर निकाला भी जा सकता है।

टाईपराइटर भी– कंप्यूटर एक टाईपराइटर का भी काम करता है। शोध प्रबंधन टाइपिंग का यह सुंदर काम करता है। जिस तरह के चाहें सुंदर लिपि यह निकालता है। यह इस तरह के अनेक कार्यों में मदद करता है।

परीक्षाफल निकालना आसान– विश्वविद्यालयों एवं लोक सेवा आयोगों के परीक्षाफल भी यह संकलित एवं मुद्रित `कर शीघ्रता से निकालता है।

उपयोगी– मानव यदि इसका उपयोग करता रहा तो यह उपयोगी सिद्ध होगा। लेकिन यह यंत्र है। मानव मस्तिष्क का यह स्थानापन्न नहीं बन सकता। मानवीय संवेदनशीलता और सहानभूति यह नहीं प्रदान कर सकता। लेकिन रंगीन पेंटिंग निकालने में इसका जोड़ नहीं। डॉक्टर भी अब इन कंप्यूटरों का प्रयोग कर रहे हैं।

निष्कर्ष– इस तरह कंप्यूटर मानव के लिए एक अत्यंत उपयोगी संयंत्र है। इसके उपयोग से देश भी तेजी से तरक्की कर रहा है।

(घ)

आपका प्रिय पशु

पषु –पक्षी सबों को प्रिय लगते हैं। वैसे तो लोग दिल बहलाव के लिये लोग बिल्ली पालते हैं, खरगोश पालते है और पालते हैं हाथी घोड़, ऊँट और न जाने क्या–क्या! मगर हाथी पालना आसान है क्या? उसके लिए काफी धन चाहिए, स्थान चाहिए। घोड़ा और ऊँट के लिए भी दाना–पानी के लिए काफी पैसे की जरूरत है, जगह की भी। बिल्ली ठीक है। बिल्ली पालने में हर्ज नहीं है लेकिन बिल्ली की आदतें अच्छी नहीं होती। लाख पालतू हों मगर मौका पाते ही रसोई–घर में घुस जाती है, दूध पी जाती है, खीर–मलाई चट कर जाती है। झट पलंग पर चढ़ जाती है और जहाँ–तहाँ गंदा कर देती है।

इसलिये मेरा प्रिय पशु है–कुत्ता। इसको पालने के लिये बहुत जगह नहीं चाहिए। घर के बाहर किसी कोने में पड़ा रहेगा। देशी कुत्ता हो तो खिलाने–पिलाने का भी झंझट नहीं है कि उसे रोज मांस–मछली चाहिए। जो भी आप खाते हों उसी में से दे दीजिये। कुत्ता बेचारा संतुष्ट रहेगा। जूठन भी खा लेगा और इसी में खुशी के मारे अपनी दुम भी हिलाता रहेगा। वह घर में नहीं घुसता। चौखट के बाहर या चौखट पर पड़ा रहता है।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि कुत्ता वफादार जानवर हैं वह मेरे घर की हर समय रखवाली करता है। किसी बाहरी अपरिचित व्यक्ति को अपने घर में घुसने नहीं देता। किसी बाहरी आदमी के आने पर भौंक–भौंक कर हमें सूचित कर देता है कि बाहर कोई आया है। कुत्ते की स्वामी–भक्ति प्रसिद्ध है। वह अपने मालिक को पहचानता है और उस पर खतरा होते देख बचाव में भिड़ जाता है चाहे जो हो जाये, मगर वह अपने मालिक के घर की ड्योटी मरते दम तक नहीं छोड़ता। मेरा कुत्ता भी ऐसा ही है। इसी कारण मुझे कुत्ता पालना बहुत पसंद है। कुत्ता मेरा प्रिय पशु है। अपने इस प्रिय पशु का मैं खुद ही देखभाल करता हूँ। उसे समय पर खाना देता हूँ। हफ्ते में एक दिन साबुन से नहलाता हूँ। जब–तब पशु–चिकित्सक से उसे दिखाकर स्वास्थ्यबर्द्धक दवाएँ देता हूँ। सोनपुर मेले में कुत्तों का अलग बाजार लगता है। इस साल मैं फिर मेले में जाऊँगा और बढ़िया नस्ल का एक कुत्ता खरीद लाऊँगा। घर में सबों को यह पशु बेहद पसंद है ।

(ङ)

प्रदूषण

पर्यावरण मनुष्य की भौगोलिक एवं बौद्धिक उपज है। अर्थात् मानव जीवन को पर्यावरण की परिस्थितियाँ व्यापक रूप से प्रभावित करती हैं। मनुष्य को एक 'सन्तुलित पर्यावरण' की स्थापना करनी चाहिए। लेकिन आज के इस हर क्षण बदलते युग में 'असन्तुलित पर्यावरण' की स्थापना हो रही है और इसका सबसे बड़ा उदाहरण है– 'प्रदूषण'।

प्रदूषण वास्तव में जलवायु या भूमि के भौतिक रासायनिक और जैविक गुणों में कोई भी अवांछनीय परिवर्तन है जिससे मनुष्य, अन्य जीवों, औद्योगिक प्रक्रियाओं, सांस्कृतिक तत्त्वों तथा प्राकृतिक संसाधनों को हानि पहुँचती है।प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण है– विश्व की बढ़ती जनसंख्या। विश्व की बढ़ती जनसंख्या के कारण ही आज पेड़ काटे जा रहे हैं, जो प्रदूषण का सबसे मुख्य कारण है। वृक्षों का वातावरण को संतुलित बनाए रखने में बहुत बड़ा योगदान है।

प्रदूषण कई प्रकार के हो सकते हैं । जैसे–

वायू प्रदूषण, जल प्रदूषण ,ध्वनि प्रदूषण आदि।

वायु प्रदूषण सबसे अधिक व्यापक और हानिकारक है। वायुमण्डल में सभी तरह के गैसों की मात्रा निश्चित रहती है और अधिकांशतः ऑक्सीजन और नाइट्रोजन होती है। श्वसन, अपघटन और सक्रिय ज्वालामुखियों से उत्पन्न गैसों के अतिरिक्त हानिकारक गैसों की सर्वाधिक मात्रा मनुष्य के कार्य–कलाप से उत्पन्न होती हैं। इनमें लकड़ी, कोयले, खनिज तेल तथा कार्बनिक पदार्थों के ज्वलन का सर्वाधिक योगदान है।

औद्योगिक संस्थानों से निकलने वाली सल्फाइड ऑक्साइड गैस तथा हाइड्रोजन सल्फाइड गैस आकाश में जाकर वर्षा से मिल जाती हैं और 'ऐसिड रेन' का निर्माण करती हैं जो धरती पर पहुँकर बहुत हानि पहुँचाते हैं। मनुष्यों को इससे चर्म रोग होने की आशंका होती है और इन रासायनिक पदार्थों से धरती की मिट्टी को भी हानि पहुँचती है। मिट्टी में रासायनिक खाद दी जाती है। मनुष्य को वायु प्रदूषण के कारण कई तरह की एलर्जी उत्पन्न होती है। अन्य कुप्रभावों से फेफड़ों के रोग होते हैं।

जल सभी प्राणियों के लिए अनिवार्य वस्तु है। पेड़–पौधे भी आवश्यक तत्त्व जल से ही घुली अवस्था में ग्रहण करते हैं। जल में अनेक कार्बनिक, अकार्बनिक पदार्थ, खनिज तत्त्व जैसी गैसें घुली होती हैं। यदि इन तत्त्वों की मात्रा आवश्यकता से अधिक हो जाती है तो जल हानिकारक हो जाता है और इस जल को हम प्रदूषित जल कहते हैं। पीने योग्य जल का प्रदूषण रोग उत्पन्न करने वाले जीवाणु–विषाणु, कल–कारखानों से निकले हुए वर्जित पदार्थ, कीट–नाशक पदार्थ व रासायनिक खाद से हो सकता है। ऐसे जल के उपयोग से पीलिया, आँतों के रोग व अन्य संक्रामक रोग हो जाते हैं। महानगरों में भारी मात्रा में गन्दे पदार्थ नदियों के पानी में प्रवाहित किये जाते हैं, जिससे इन नदियों का जल प्रदूषित होकर हानिकारक बनता जा रहा है।

महानगरों में अनेक प्रकार के वाहन, लाउडस्पीकर, बाजे एवं औद्योगिक संस्थानों की मशीनों के शोर ने ध्वनि प्रदूषण को जन्म दिया है। ध्वनि प्रदूषण से न केवल मनुष्य श्रवणशक्ति का ह्रास होता है, वरन् उसके मस्तिष्क पर भी इसका घातक प्रभाव पड़ता है। परमाणु शक्ति उत्पादन व नाभिकीय विखण्डन ने वायु, जल व ध्वनि तीनों प्रदुषणों को काफी विस्तार दिया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आधुनिक युग में प्रदूषण की समस्या अत्यधिक भयंकर रूप धारण करती जा रही है। यदि इस समस्या का निराकरण समय रहते न किया गया, तो एक दिन ऐसा आयेगा, जब प्रदूषण की समस्या सम्पूर्ण मानव जाति को निगल जायेगी।

अतः प्रदूषण से बचने के लिए निम्नलिखित उपायों पर अमल करना आवश्यक है–

(1) वृक्षारोपण का कार्यक्रम तेजी से चलाया जाना चाहिए।

(2) वनों के विनाश पर रोक लगनी चाहिए।

(3) वर्जित पदार्थों के निष्कासन के लिए कोई दूर स्थान पर व्यवस्था करनी चाहिए।

(4) लाउडस्पीकरों का उपयोग कम होना चाहिए।

प्रदूषण से मुक्ति के लिए सभी लोगों को एक साथ होकर प्रयास करना होगा।

"ध्वनि प्रदूषण" से नुकसान होता है, यह सभी को पता है। लेकिन इसका समाधान भी होना चाहिए। नुकसान का पता उस वक्त नहीं चल पाता। यह बाद में अपना प्रतिकूल असर दिखाता है। सबसे अधिक ध्वनि प्रदूषण

से नुकसान छोटे बच्चों और बुजुर्गों को हो रहा है।

ध्वनि प्रदूषण से दो तरह के नुकसान होते हैं। एक अस्थायी और दूसरा स्थायी ।

छोटे बच्चों को तो पता भी नहीं चलता कि उन्हें ध्वनि प्रदूषण कब नुकसान कर गया। छोटे वाहनों में भी तो आजकल तेज हार्न इस्तेमाल किया जाता है। यदि संबंधित विभाग इन वाहनों की स्क्रीनिंग करना शुरू करें तो सच्चाई सामने आ जाएगी।

आजकल तो सुबह में स्कूली बच्चों या फिर अभिभावकों को बुलाने के लिए वाहनों में तेज हार्न का इस्तेमाल किया जा रहा है। यह काफी नुकसानदेह है। इससे चिड़चिड़ापन, बहरापन और ब्लड प्रेशर बढ़ने की आशंका रहती है। प्रदूषण नियंत्रण पर्षद ने इसके लिए डेसिबल भी निर्धारित कर रखा है। बावजूद ध्वनि–प्रदूषण बढ़ रहा है।

अलग–अलग इलाकों के लिए ध्वनि के लिए डेसिबल निर्धारित किया गया है। इसमें आवासीय, वाणिज्यिक, औद्योगिक और अस्पताली क्षेत्र प्रमुख हैं।

आवासीय क्षेत्र में दिन में 55 डेसिबल और रात में 45 डेसिबल, वाणिज्यिक क्षेत्र के लिए दिन में 65 डेसीबल और रात में 55 डेसिबल, औद्योगिक क्षेत्र में दिन में 75 और 70 डेसिबल वहीं दिन में शांत क्षेत्र में 50 डेसिबल जबकि रात में 40 डेसिबल निर्धारित किया गया है। नियम का उलंघन करने पर पाँच साल का सश्रम कारावास और एक लाख रूपए तक के जुर्माने का भी प्रावधान है।

3. (क) आँखे चुराना (नजरें बचाना) – मुझे देखते ही श्याम आँखे चुराकर चलता बना।

(ख) कन्नी काटना (बच निकलना)– कामचोर आदमी सदा ही कन्नी काटता है।

(ग) गोबर गणेष होना (मूर्ख होना) – वह गोबर गणेष है। उसकी मोटी बुद्धि में कुछ नहीं आता।

(घ) दम तोड़ना (मर जाना) – लंबी बीमारी के बाद उसने दम तोड़ दिया।

(ड़) रंग चढ़ना(नया परिवर्तन आना)–आज तो उन पर एक नया ही रंग चढ़ा था।

4. भवन (पु0)–भवन ऊँचा बना है।

प्राण (पु0)–पुत्र के लिए माता के प्राण व्याकुल थे।

कलम (स्त्री0)–कलम सस्ती है।

तलवार(स्त्री0)–तलवार टूट गई।

षराब (स्त्री0)–शषराब सस्ती है।

5. कपड़ा – वस्त्र, परिधान

मेघ – बादल, नीरद

हाथी – मतंग, कुंजर

पुत्री – बेटी, सुता,

धन – दौलत, सम्पदा

6. प्रस्तुत दोहे में महाकवि रहीम कहते हैं कि यह संसार बहुत ही कुटिल है, नीच हैं कवि रहीम ने इन पंक्तियों द्वारा कहा है कि लोगों को अपनी व्यथा दूसरों के सामने प्रकट नहीं करनी चाहिए क्योंकि कोई व्यक्ति दुःख बाँटता नहीं है लेकिन उसके दुख को सुनकर उसका मजाक जरूर उड़ाता है।

अथवा

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि श्री गोपाल सिंह 'नेपाली' कहते हैं कि मानव को ईश्वर ने ज्ञान, ध्यान, चेतना, साहस और सौन्दर्य प्रदान किये हैं। वह मानव कठिनाईयों में कभी पीछे नहीं हटता है। आगे बढ़ने और बढ़ते रहने का मार्ग खोज लेता है। जब वह कठिनाइयों और अंधकारों पर विजय प्राप्त करता है तो उसके मुँह पर मुस्कान झलकती है जो बहुत ही सुन्दर प्रतीत होता है।

7. *'मंगर'* बेनीपुरीजी का एक बड़ा ही विष्वासी हलवाहा था। वह था तो दरिद्र; पर दीन नहीं था। स्वाभिमान उसकी नस–नस में भरा था। वह इतना विष्वासी था और इतना डटकर काम करता था कि कहानीकार के बाबा उसे बहुत मानते थे। जहाँ दूसरे जन को एक–एक रोटी मिलती थी वहाँ मंगर को डेढ़ रोटी मिलती थी। बिना कहे सुने वह खेतों का काम बड़ी चौकसी से करता था।

'मंगर' को बेनीपुरी जी के परिवार से बड़ा स्नेह था। उसे बच्चों से बड़ा प्रेम था। वह स्वयं बेनीपुरी जी को कंधों पर ढोता था।

'मंगर' में लोभ न था। कहानीकार का उतना काम करता था, उनके सामानों की रखवाली करता था, पर कभी कुछ छूता न था। इसलिए वह न केवल कहानीकार के परिवार का विश्वासपात्र था, बल्कि सबों का विश्वासपात्र था।

मंगर देखने में काला–कलूटा था, पर था खूबसूरत। खूबसूरत इस अर्थ में कि उसके शरीर का गठन बहुत सुन्दर था–उसका स्वास्थ्य अच्छा था। और सच्चा सौन्दर्य तो अच्छे स्वास्थ्य में ही निवास करता है।

मंगर की मानवता महान थी। वह सब को प्यार करता था, किसी से वह घृणा नहीं करता था। अपनी रोटी में से आधी रोटी वह बैल को खिला देता था। बैल को वह साक्षात महादेव मानता था। कहने को तो और लोग भी बैल को महादेव कहते थे, पर मंगर उसे महादेव मानता था।

मंगर हलवाहा में हमें एक सच्चरित्र मजदूर की झाँकी मिलती है। यह सही है कि वह विद्वान नहीं है, आधुनिक सभ्यता का रंग उस पर नहीं चढ़ पाया है, पर उसमें जो गुण है, वे हमारे भारतीय ग्रामों के गुण हैं, हमारी मानवता

के गुण हैं। अतः मजदूर होने के कारण मंगर भले ही छोटा दिख पड़ता हो, पर मानवता के नाते वह महान है।

अथवा

डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य के महान उपन्यास लेखक, आलोचक और ललित निबंधकार के रूप में प्रतिष्ठित रहे। हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् 1907 ई0 में उत्तर प्रदेष के बलिया जिले के आरत दुबेका छपरा गाँव में हुआ था। सन् 1930 में काशी हिंदु विश्वविद्यालय से ज्योतिषाचार्य तथा इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद वे शांति निकेतन में अध्यापक होकर चले गए। 1940 ई0 से 1950 ई0 तक उन्होंने 'हिन्दी भवन' के निदेषक के पद पर कार्य किया। विश्व कवि रविन्द्रनाथ टैगोर के सम्पर्क ने उनके मानवतावादी दृष्टिकोण को और अधिक व्यापक आयाम प्रदान किया। क्षितिमोहन सेन, विधुशेखर भट्टाचार्य और बनारसीदास चतुर्वेदी जैसे व्यक्तित्वों की संगति में उनकी रचनात्मक सक्रियता को गति और दिशा मिली। हिंदी साहित्य की दूसरी परम्परा के प्रतिनिधि के रूप में आचार्य द्विवेदी ने हिंदी की काव्य परम्परा को कबीर से जोड़कर उसे एक प्रगतिशील मूल्य के रूप में प्रतिष्ठित किया है। भक्तिकाल को भारतीय चिंता धारा का सहज और स्वाभाविक विकास मानने वाले साहित्योतिहासकार के रूप में द्विवेदी जी की भूमिका ऐतिहासिक है। उपन्यासकार के रूप में जहाँ उन्होंने 'बाणभट्ट की आत्मकथा' के द्वारा हिंदी उपन्यास को एक नयी दिशा दी है, वहीं अपने ललित निबंधों के द्वारा हिंदी निबंध को एक नयी विधा का अवदान दिया है। उनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित है – सूर साहित्य, हिंदी साहित्य की भूमिका, प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद, कबीर; बाणभट्ट की आत्मकथा, अषोक के फूल (निबंध), विचार प्रवाह, मेघदूत, पृथ्वीराज रासो, मध्ययुगीन बोध इत्यादि।

8. प्रस्तुत कविता में कवि ने भारतमाता का चित्र उपस्थित किया है। प्रस्तुत कविता का रचना काल स्वतंत्रता के पूर्व का है। कवि ने भारत की दीन–हीन दषा का चित्र प्रस्तुत किया है।

भारत की पवित्र भूमि यानी भारत माता ग्रामवासिनी है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। हमारी माता का आँचल धूलों भरा मैला आँचल है। चूँकि यह किसानों का देष है ; हमारी माँ एक गरीबिनी माता है। गंगा और यमुना मानों इसी गरीबिनी माँ के अश्रु– रूप है। इसीलिए यह मिट्टी की प्रतिमा अपने मटमैले रूपों में आज और भी उदास हो गयी है। इसकी नीची निगाहें इसकी चिंता की सूचना दे रही है और लगता है; जैसे अभी–अभी रोते–रोते चुप हुई है। युगीन गतिविधियाँ मन को झकझोर कर चुकी है, व्यक्ति–व्यक्ति मुमूर्ष हो चुका है। लगता है, माता अपने घर में ही प्रवासिनी सी हो गई है। इसकी तीस कोटि संतानें निर्वस्त्र है, भूखी है, अल्याचारों के प्रभाव में दमित, शोषित हैं। दयनीयता यहाँ तक आ पहुँची है कि सभी निर्वस्त्र हो गए हैं। इसकी संतानों की यह स्थितिगत मार्मिकता–निर्धनता, अषिक्षा, असभ्यता और मूढ़ता देखकर भारत माता स्वयं किसी पेड़ की छाया में निवास करने लगी हैं।

इस माता के पास आभूषण के रूप में धान के पोधे हैं, लेकिन, ये भी दूसरों के अधीन हैं। परवष हुई यह अपनी वस्तु का भी उपयोग नही कर पा रही है तथा वह बिल्कुल कुंठाग्रस्त हो चुकी है। बाधा–विपदाओं की सहिष्णु शक्ति भी आज किसी काम नहीं आ सकी। शोषण, अत्याचार के आगे यह मौन है। शरद के चंद्र को ज्यों; राहु ने ग्रस लिया है। यह क्रंदन कंपित है, मुख से बोल नहीं फूट रहे।

किंतु, आज बहुत दिनों के बाद उसको सारा तप–त्याग अचानक सफल होने लगा है। वह अपने स्तन का अहिंसामय अमृत अपनी संतानों को पिलाने लगी है। इससे जगत का मन–मानस हर्षित होने लगा है, संसार

का भ्रमरूपी अंधकार मिटने लगा है और एक विकास की स्थिति निखर आयी है। इस कविता में गाँधी जी के सत्य–अहिंसा व्रत के प्रति कवि आस्थामय दिखलायी पड़ता है।

अथवा

मानव जीवन के दो पहलू है– एक भौतिक और दूसरा आध्यात्मिक। भौतिक पहलू उसके बाह्म जगह की उन्नति से संबंध रखता है और आध्यात्मिक पहलू अर्न्तजगत् की उन्नति से। भूख, प्यास, विलास, ऐश्वर्य आदि आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ही मानव भौतिक उन्नति की मंजिल की ओर अपना पैर बढ़ाता है। इसी प्रकार प्रेम, सहानुभूति, दया, संयम आदि आध्यात्मिक वस्तुएँ हैं और इन्हीं की उपयुक्त साधना से मानव अपनी आध्यात्मिक उन्नति करता है। इन्हीं भावनाओं का रहस्य कवि यहां बतलाता है और उसे कर्मक्षेत्र की ओर प्रयाग करने को प्रेरित करता है।

रचनाकार का कहना है कि यह संसार एक कर्मस्थल है। संसार के जितने जड़ और चेतन, जंगम और स्थावर पदार्थ है, सभी अपने–अपने कामों में लगे हुए हैं। कोई बेकार बैठा नहीं है इसलिए कवि कहता है – 'तुच्छ पत्र की भी स्वकर्म में कैसी तत्परता है।' इस तरह संसार के प्रत्येक प्राणी का एक–न–एक उद्देश्य होता है और वह उद्देष्य है अधिक–से–अधिक सेवा करना। इसलिए संसार में मनुष्य को वैयक्तिक सुख के लिए इतना चिंतित नही होना चाहिए, जितना कि अखिल भूमंडल के सुख के लिए।

यहां कवि कहता है कि तुम्हारे जीवन का उद्देष्य 'पीड़ितों की सेवा करना' होना चाहिए। तुम्हारी राह में कठिनाइयों के भयंकर तूफान भी आयें, तब भी तुम्हें अपनी राह से विचलित नहीं होना चाहिए।

कवि दृढ़ प्रतिज्ञ, कर्त्तव्यपरायण, आषावादी और जागरूक होने का उपदेष देता है और बतलाता है कि सद्गुण, साहस, सत्य शूरता आदि विषिष्ट गुण ईष्वर ने मानवों को इसलिए दिये हैं कि मानव अवसर पाकर संसार के कल्याणार्थ अपने इन गुणों का वितरण करें। इतना जरूर है कि यह संसार मनुष्य के लिए एक परीक्षा–स्थल है, जहाँ जीवन में कठोर प्रष्नों का सामना करना पड़ता है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है..

"किन्तु स्वात्मबल–विज्ञ पुरूष ही ठीक पहुँच अटकल से।

हल करते है प्रष्न सहज में अविरल मेधा–बल से।"

कवि पुनः कहता है कि तुम्हें दुखों से घबराकर वन का आश्रय नहीं लेना चाहिए, यह तो पलायनवादी दृष्टिकोण है। दुःख ही सुख का जनक है; सद्गुणों का पिता है। अतएव दुःखों को झेलने से आत्मबल की वृद्धि होती है। मूल रुप से यहां कवि जगत के कल्याण में निरत होने का उपदेष देता है।

.....

सेट–8

हिन्दी (50 अंक)

समयः 1 घंटा 37) मिनट पूर्णांक–50

परीक्षार्थी के लिये निर्देश :

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

2. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

3. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

प्रश्न

1.संक्षेपण करें:– 5

मोबाइल ने हमें वाचाल बनाने के साथ–साथ हमारी चितंनशीलता और ध्यान शक्ति को भी कम किया है। छात्र जीवन पर इसका व्यापक कुप्रभाव पड़ा है। पढ़ाई में व्यवधान पैदा होता हैं। छात्र चाहकर भी चिंतन मनन नहीं कर पाते, इसका कारण मोबाइल से बढ़ती निकटता है। ज्यादा देर तक मोबाइल से चिपके रहने के कारण छात्र अपना कीमती वक्त भी गँवाया करते हैं। मानसिक स्तर पर भी मोबाइल ने उस शांति को छीना है जो जीवन से सुकून के लिए आवश्यक है ।

2. किसी एक विषय पर निबंध लिखिए: 10

(क) संचार क्रांति

(ख) समय का महत्त्व

(ग) सदाचार का महत्त्व

(घ) स्वतंत्रता दिवस

(ड़) भारत–पाक सम्बन्ध

3.वाक्य प्रयोग द्वारा लिंग निर्णय कीजिएः 1×5 = 5

चादर, तीर, पहिया, खिलौना, झील।

4.दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखिएः 1×5 = 5

हाथी, समुद्र, आँख, गणेश, आकाश।

5. वाक्य द्वारा मुहावरों के अर्थ स्पष्ट कीजिएः 1×5 = 5

(क) नाक का बाल होना।

(ख) बात बढ़ाना।

(ग) पाँव पसारना।

(घ) लाल–पीला होना।

(ड़) सिर–ऊँचा होना।

6. 'कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर' पाठ का सारांश लिखिएः 7

अथवा

भकोलिया का चरित्र–चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

7. 'हिमालय का संदेश' कविता में कवि ने क्या संदेश दिया है, 7

लिखिए।

अथवा

'सुन्दर का ध्यान कहीं सुन्दर' शीर्षक कविता का भावार्थ लिखिए।

8. अर्थ स्पष्ट कीजिए– 5

माँगे घटत रहीम पद, कितौ करौ बड़ काम।

तीन पैर वसुधा करी, तउ बावनै नाम।।

अथवा

अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान बहुधा हमारे संकुचित व्यवहारों का सुधारक होता है।

सेट–8

उत्तर– 50 अंक

1. **शीर्षक– मोबाइल** (शब्द संख्या–28)

संचार क्रांति ने मोबाइल के रूप में हमें अशांति का एक खिलौना मिला है। मोबाइल ने हमारे सुख–चैन, चिंतन, मनन सब–कुछ छीन लिया है।

2.(क) **संचार क्रांति**

भारत देश में 'वसुधैव कुटुम्बकम' का विचार सदैव से ही पल्लवित होता रहा है । यह विचार अब संचार के माध्यम से और साकार हो उठा है। विश्व के उन्नत देशों ने संचार के आधुनिकतम तरीकों, खोजों और पूरे विश्व पर दबदबा स्थापित किया। आज भारत भी संचार क्रांति में अग्रणी देश बन गया है।

संचार का अर्थ है– संदेश भेजने के साधन। इन साधनों में डाक–तार, मीडिया, दूरभाष आदि साधन आ जाते हैं। 'संचार क्रांति से आशय है– ऐसे साधनों का आश्चर्यजनक तरीके से अत्यधिक संख्या में इकट्ठे हो जाना। आज देश में टेलिफोन, डाक–तार, मोबाइल, रेडियो, दूरदर्शन, कोरियर, इन्टरनेट जैसे अनगिनत साधन उपलब्ध हो गये हैं। आज अपना संदेश भेजना इतना सरल ,सस्ता और सजह हो गया है कि संचार के क्षेत्र में आश्चर्यजनक क्रांति उत्पन्न हो गयी है।

भारत एक विकासशील राष्ट्र है। यहाँ संचार के साधनों में डाक सेवा ग्रामीण क्षेत्रों का सबसे प्रचलित साधन है। इसके माध्यम से ग्रामीण जन अनेक प्रकार के लाभ उठा रहे हैं। डाक सेवा ने अनेक योजनाएँ प्रारंभ करके बेरोजगार लोगों को रोजगार भी प्रदान किया।

भारत की जनता का सबसे लोकप्रिय संचार साधन है– दूरभाष। आज देश में करोड़ों लोग का दूरभाष उपयोग करते है। गाँव–कस्बों में भी दूरभाष का प्रयोग होता है। इस साधन ने गाँव–शहर, देश–विदेश की दूरी मिटा दी है। दूरभाष में सबसे अधिक उपयोग मोबाइल फोन का हो रहा है। जिससे घर बैठे किसी की भी विडियो देखकर बातें कर सकते हैं। एक मोबाइल कंपनी ने तो अपना स्लोगन ही निकाला था –'कर लो दुनिया मुट्ठी में। वास्तव में आज मोबाइल के माध्यम से दुनिया मुट्ठी में ही है।

इण्टरनेट भी संचार का एक बड़ा साधन बन गया है। आज पढ़ाई– लिखाई से संबंधित कार्य इण्टरनेट पर हो रहे हैं । इस पर अपने संदेश बहुत कम मूल्य पर भेजे व प्राप्त किए जाते हैं। जिससे समय की बचत होती । इसके लिए कम्प्यूटर, स्मार्ट मोबाइल तथा इण्टरनेट होना आवश्यक है। इसके माध्यम से खरीद–बिक्री, मंडियो और शेयर बाजार पर नजर रख सकते हैं। अपने उत्पादन और सेवाओं का विज्ञापन कर सकते हैं।

रेडियो और दूरदर्शन समूह संचार के लोकप्रिय साधन हैं । समाज में यद्यपि पत्र–पत्रिकाओं की भूमिका कम नहीं हुई हैं , फिर आकर्षक कम अवश्य हुआ है। अब 24 घंटे समाचार चैनल चलते रहते हैं। वर्तमान में दूरदर्शन सबका प्रिय साधन है।

संचार क्रांति का सबसे बड़ा लाभ यह हुआ है कि मानव–मानव की दूरियाँ कम हो गयी है। विश्व की सभी जानकारियाँ सबको उपलब्ध होने लगी हैं। इसके कारण लोगों का जीवन स्तर उन्नत हुआ है। सबके लिए विकास के समान स्तर उपलब्ध हो गये हैं।

संचार क्रांति की बड़ी हानि है– शोर का बढ़ना। चारों ओर मोबाइल घंटियाँ, दूरदर्शन, इंटरनेट से निकल रही रेडियशन खतरे उत्पन्न कर रही हैं। इससे आदमी का आराम समाप्त हो रहा हैं। उसे संचार क्रांति की शोर–शराबों की संस्कृति से बचना होगा तभी वह इसके लाभों को भली–भाँति प्राप्त कर सकेगा।

(ख) समय का महत्त्व

बेंजामिन फ्रैंकलिन का कथन है– 'तुम्हें अपने जीवन से प्रेम है, तो समय को व्यर्थ मत गॅवाओ क्योंकि जीवन इसी से बना है'। समय को नष्ट करना जीवन को नष्ट करना है। समय ही तो जीवन है। ईश्वर एक बार एक ही क्षण देता है और दूसरा क्षण देने से पहले उसे छीन लेता है।

समय के सदुपयोग का अर्थ है–उचित अवसर पर उचित कार्य को पूरा कर लेना। जो लोग आज का काम कल पर और कल का काम परसों पर टालते रहते हैं, वे एक प्रकार से अपने लिए जंजाल खड़ा करते चले जाते हैं। जो छात्र पढ़ने के समय नहीं पढ़ते, वे परिणाम आने पर रोते ही हैं।

समय किसी के लिए रूकता नहीं है। जिसे उसका सार्थक उपयोग करने की उत्कंठा है, उसे तैयार होकर उसके आने की अग्रिम प्रतीक्षा करनी चाहिए। जो समय के निकल जाने पर उसके पीछे दौड़ते हैं, वे जिंदगी में सदा घिसटते रहते हैं।

जो लोग समय का सम्मान करना जानते हैं, वह अपनी शक्ति को कई गुना बढ़ा लेती हैं। यदि सभी गाड़ियाँ अपने निश्चित समय से चलने लगें तो देश में कितनी कार्यकुशलता बढ़ जाएगी। यदि कार्यालय के कार्य ठीक समय पर संपन्न हो जाएँ, कर्मचारी समय के पाबंद हों, तो सभी कार्य सुविधा से हो सकेंगे। यदि रोगी की ठीक समय पर इलाज न हो तो वह मौत को गले लगा लेता है। अतः हमें समय के महत्व को समझना चाहिए।

कहा भी गया है –

'काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।

पल में परलै होएगी, बहुरि करोगे कब।।'

(ड़) भारत–पाक सम्बन्ध

भारत–पाक संबंध, अपने कटु–मधु आयामों में पाकिस्तान के जन्म की कहानी से जुड़ा है। पाकिस्तान के इतिहासकारों ओर राजनेताओं के अनुसार उन्होंने स्वतंत्रता की लड़ाई न केवल ब्रिटिश सरकार से लड़ी थी, बल्कि हिन्दू बहुसंख्यक के खिलाफ भी। आजादी के समय साम्प्रदायिकता, मुस्लिम नेताओं की कट्टरता और अंग्रेजी सरकार की नीतियाँ आदि ने मिलकर भारत को दो भागों में बाँटकर रख दिया।

विभाजन से इन दोनों के बीच ज्वलंत समस्याएँ उठ खड़ी हुई। दोनों की सीमाओं से धन, कर्ज, नदी–जल, नागरिक सेवाओं आदि का बँटवारा आवश्यक था। इन समस्याओं का समय समय पर समाधान किया जा रहा है। लेकिन अल्पसंख्यक की समस्या, कश्मीर–समस्या आदि को लेकर पाकिस्तान समय–समय पर अपने वैमनस्य का परिचय देता रहा है। आजादी के समय कश्मीर पर कबायलियों के आक्रमण ने यह साबित कर दिया कि पाकिस्तान विस्तारवादी नीति अपनाता है। लेकिन तत्कालीन राजा हरि सिंह और अन्य नेताओं के प्रयास से कश्मीर को बचाया गया। लेकिन तब भी कश्मीर का एक भाग पाक के अधिकार में रह गया। 1962 में भारत–चीन युद्ध में पाकिस्तान को भारत की मदद करनी चाहिए थी, लेकिन उसने चीन के साथ समझौता कर दुखती रगो को और दुखाया।

अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर कश्मीर का मुद्दा उठाकर पाकिस्तान ने अपनी धार्मिक कट्टरता और कश्मीर के मुस्लिम–बहुल होने का लाभ उठाकर इस पर दावा किया, वहीं भारत ने इसे अपना अभिन्न अंग माना। तब से लेकर आज तक पाकिस्तान ने अपने इरादे नहीं छोड़े और समय–समय पर कश्मीर का मुद्दा हर जगह उठाता ही रहा। 1965 में पाकिस्तान का जो मान–मर्दन हुआ, उससे भी उसने अपना इरादा नहीं छोड़ा, युद्ध ने उसे बतला दिया कि भारत की क्षमता क्या है, लेकिन इसके बाद सैन्य शक्ति पर अपना खर्च बढ़ाकर वह भारत के साथ युद्ध करने में तो उसे भयानक क्षति हुई लेकिन तब भी बेहया की तरह सिर उठाता रहा। पाकिस्तान में बांगला देश का साथ देना आदि कुछ ऐसी घटनाएँ हैं जिनसे भारत और पाकिस्तान का संबंध सुधर नहीं सका।

कश्मीर की समस्या को लेकर भारत–पाकिस्तान का संबंध सामान्य नहीं हो सकता है। कश्मीर जबकि भारत का एक अभिन्न अंग है, वहीं पाकिस्तान–प्रशिक्षित आतंकवादियों का अखाड़ा हो गया है। पाकिसतान ने कश्मीर में धार्मिक कट्टरता का जहर फैलाकर वहाँ भारत विरोधी अभियान चलाया। धार्मिक कट्टरतावाद और भड़कानेवाले साहित्य का प्रसार–प्रचार कर पाकिस्तान कश्मीर में भारत विरोधी अभियान अभी तक चला रहा है। इतना ही नहीं, पाकिस्तान में आतंकवाद, तोड़फोड़ और सशस्त्र संघर्ष के प्रशिक्षण हेतु अनेक केन्द्र हैं, जहाँ कश्मीरी युवकों को प्रशिक्षण दिया जाता है। कश्मीर में जनमत संग्रह आदि की समस्या को लेकर पाकिस्तान आज भी विरोधी अभियान चला रहा है। इसके अलावे वह पंजाब में आतंकवादियों को सहायता देकर अपना संबंध सुधारने की जगह बिगाड़ ही रहा है।

भारत–पाक संबंध को सही अंजाम देने के लिए कई बार अन्तर्राष्ट्रीय पहल भी हुए, लेकिन सब बेकार हो गये। पाकिस्तान के शासकों में आज तक कोई वैसा व्यक्ति नहीं आया, जो जनप्रिय नेता हो। इसीलिए शासन के लिए सब के सब वहाँ की जनता में भय का भूत फैलाते रहते हैं और इसके लिए आवश्यक है कि वे भारत से दुश्मनी बनाये रखें। इससे कुछ तो राजनीतिक चाल और धार्मिक कट्टरता और बहुत कुछ भारतीय नेताओं की अदूरदर्शिता एवं कुर्सी–बचाव मानसिकता से पाकिस्तान और भारत का संबंध सुधर नहीं रहा है। इतने लम्बे समय की गतिविधियों ने यह बतलाया

है कि 'बिन भय होहिं न प्रीत" तथा " खीरा के मुख काट के मलियत नोन लगाय" की नीति ही सही है।

अंत में हम कह सकते हैं कि भारत–पाक संबंध के बीच इतनी बड़ी दरार है कि उसे पाटना कोई आसान कार्य नहीं है। इसे कोई दृढ़ इच्छाशक्ति ही पाट सकती है। आवश्यकता इस बात की है कि दोनों ही देषों में शांति और अमन–चैन बहाल हो सकें।

3. चादर (स्त्री0)– तुम अपनी चादर लाओ।

तीर (पु0) – तीर बड़ा था।

पहिया(पु0) – बैलगाड़ी का पहिया टूट गया।

खिलौना(पु0) – उसका खिलौना नया है।

झील (स्त्री0) – यह झील बहुत गहरी है।

4. दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखें।

हाथी– हस्ती, गज

समुद्र– जलधि, सागर

आँख– नेत्र, नयन

गणेश– लम्बोदर, गणपति

आकाश– नभ, गगन

5.(क) नाक का बाल होना (अतिशय दुलारा होना)–रमेश आजकल माँ का कहना मानकर नाक का बाल हो गया है।

(ख) बात बढ़ाना (झगड़ा बढ़ना)– राहूल ने खेल–खेल में बात बढ़ा दिया।

(ग) पाँव पसारना (अधिकार बढ़ाना) – रौशन ने अपने बड़े भाई के हक पर पाँव पसारने षुरू कर दिए।

(घ) लाल–पीला होना (क्रोधित होना) – संतोष जरा–सी बात पर लाल–पीले होने लगा।

(ड़) सिर ऊँचा होना (यश बढ़ाना) – बेटे राजकुमार के डाक्टर बन जाने से उसके पिता का सिर ऊँचा हो गया।

6. "कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर" शीर्षक निबंध में विश्व कवि, देशभक्त रवीन्द्रनाथ ठाकुर के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उन्हें महान कवि, संगीतज्ञ, समाज सुधारक, देशभक्त बहुभाषाविद एवं कलाप्रेमी बताया है। वे साहित्य में प्रथम भारतीय कवि थे जिन्हें नोबल पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। वे

मानते थे कि साहित्य सेवियों में भी आपस में प्रेम होना चाहिए, ईर्ष्या नहीं। सच कहा जाए तो इस पाठ में निबंधकार ने "कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर" के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला है।

औपचारिक स्कूल–कॉलेजों की शिक्षा उन्होंने नहीं ली थी। उन्होंने देश–विदेश का पर्यटन भी खूब किया।

अथवा

'भकोलिया' मंगर की पत्नी है। जैसा सीधा मंगर का स्वभाव है, वैसा ही सीधी भकोलिया है। वह रंग में सांवली है। वह मंगर से विशेष स्वस्थ है। वह कर्मठ स्त्री है। वह इधर–उधर फुटकर काम करती है और कुछ कमा लाती है। पहले भकोलिया भी मंगर की तरह तमकती थी, झिझकती थी। उसका भी स्वभाव मंगर के स्वभाव के समान ही था। पर बाद में उसने अपने आपमें सुधार लाने का प्रयास किया। मंगर तो ज्यों का त्यों रहा, पर उसने अपने को परिस्थिति के अनुकूल बना लिया। वह घर–घर जाकर कुटान–पिसान का कार्य करती थी, गोबर थापती थी, पानी भरती थी। इस प्रकार उसके स्वभाव में कोमलता आ गयी थी।

भकोलिया सेवा भाव से भरी थी। जब मंगर को अधकपारी उठी तो उसने बड़ी सेवा–भाव की। इस प्रकार हम देखते हैं कि भकोलिया सामान्य देहाती औरतों से विशेषकर मजदूरों की औरतों से ऊपर उठी हुई थी।

7. *"हिमालय का संदेश"* शीर्षक कविता के कवि दिनकर हैं। 'दिनकर' अतीत के गौरव गायक वर्त्तमान के सूक्ष्म द्रष्टा और भविष्य के कुशल सारथी माने जाते हैं। प्रस्तुत कविता में इन्होंने यह बतलाने का प्रयास किया है कि मानचित्र पर मिलने वाले देश भारत का नाम नहीं है। भारत को केवल भूमि पर नहीं, बल्कि मनों में स्थापित करना चाहिए। भारत तो समरसता, आनन्द, माधुर्यपूर्ण त्याग, सत्य, अहिंसा से परिपूर्ण है।

भारत एक विचार का पर्याय है जिसे पाकर मनुष्य जाग खड़ा होता है जिससे मनुष्य का उदय होता है। निस्संदेह मनुष्य की सबसे बड़ी आभा, दिव्यता,उच्चता और पवित्रता का प्रतीक भारत है। कवि कहना है कि भारत के इन्हीं स्वरूपों को हमें प्रणाम और सम्मान करना चाहिए। भारत का नाम व्यर्थ बदनाम होने से बचाने का स्तुत्य प्रयास किया है। यही इस कविता की सार्थकता और संदेश भी है।

अथवा

श्री गोपाल सिंह 'नेपाली' ने प्रस्तुत गीत में मानवीय सौन्दर्य और भावना की श्रेष्ठता का बखान किया है। वह ईश्वर के सौन्दर्य का उत्स है किन्तु वह हमारी भावनाओं के प्रति सर्दव मौन रहता है। मन्दिर, मस्जिद और चर्च में रहने वाले देवता से कहीं अधिक बड़ा मनुष्य के अंदर का वह देवता है जो मधुर स्वर में स्वयं को व्यक्त करता है।

श्री गोपाल सिंह नेपाली कहते हैं कि मानव को ईश्वर ने ज्ञान, ध्यान, चेतना, साहस और सौन्दर्य प्रदान किए हैं। वह कठिनाइयों में कभी पीछे नहीं हटता है, वह आगे बढ़ने और बढ़ते रहने का मार्ग खोज लेता है। जब वह कठिनाईयों और अंधकार पर विजय प्राप्त करता है तो उसके मुख पर मुस्कान झलकती है जो बहुत ही सुन्दर होती है।

इस पृथ्वी पर सभ्यता 'और संस्कृति' कला और कौशल के जितने चिह्न मिलते है उनमें हमे मनुष्य के ज्ञान की महिमा और उसके सुंदर विचारो और कल्पनाओं की पहचान देखने को मिलती है।

प्रकृति का सौन्दर्य मेघों के गरजने में, पपीहों की बोली में, बुलबुल की मधुर आवाज में भी मिलती है, लेकिन मानव द्वारा लिखी गई कविताओं, गीतों और भजनों में जो कल्पनाएं; स्वर, शब्द और लय का स्वाद मिलता है, वह बहुत ही सुंदर और महत्वपूर्ण होता है।

वास्तव में मानव बड़ा ही साहसी और विवेकशील प्राणी है। वह संसार के महासागरों में लघु जलयान और बड़े–बड़े जहाज बनाकर सागर की ऊँची लहरों से सफलतापूर्वक पार उतर जाता है। मानव के अरमानों की कोई सीमा निश्चित नहीं है।

8. प्रस्तुत दोहे में महाकवि रहीम कहते हैं कि माँगने से मनुष्य की महत्ता घट जाती है चाहे वह कितना ही बड़ा काम क्यों न करे? कवि रहीम ने कहा है कि विष्णु ने मात्र तीन पग चलकर पूरी पृथ्वी को नाप लिया, फिर भी वह वामन ही कहलाते हैं। अर्थात् माँगना एक घटिया काम है जो मान और मर्यादा को कम करता है।

अथवा

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'पंच परमेश्वर' कहानी से ली गयी है। इन पंक्तियों में लेखक ने बताया है कि पंचो में परमेश्वर का निवास होता है। जब मनुष्य को अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान होता है तो उसकी संकुचित मनोवृत्तियाँ समाप्त हो जाती हैं। उत्तरदायित्व आ जाने पर मनुष्य स्वार्थ, ईर्ष्या, पक्षपात, अज्ञानता आदि अवगुणों का त्याग कर देता है। वह अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करने में सक्षम हो पाता है।

.....

सेट–9

हिन्दी (50 अंक)

समयः 1 घंटा 37½ मिनट पूर्णांकः 50

परीक्षार्थी के लिये निर्देश :

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

2. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

3. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

प्रश्न

1.निम्नलिखित अवतरण का संक्षेपण करेः 5

देश भक्त अपनी मातृभूमि को सच्चे हृदय से प्यार करता हैं यदि एक ओर उसे अपने स्वर्णिम अतीत पर गर्व है, तो दूसरी ओर वह अपने भविष्य को भी उज्जवल बनाना चाहता है। वह सदैव समाज में क्रांति चाहता है। वह समाज में प्रयचित रूढ़ियों और अंधनिवश्वासों तथा उन परंपराओं और परिपाटियों के विरूद्ध क्रांति करता है, जो देश की उन्नति के पथ में बाधाएँ है। लोगों में एकता, प्रेम और सहानुभूति उत्पन्न करना, उनमें राष्ट्रीय, सामाजिक एवं नैतिक चेतना जागृति करना और उन्हे कर्त्तव्यपरायण तथा अध्यवसायी बने रहने के लिए प्रोत्साहन देना ही देश भक्ति है।

2. किसी एक पर निबंध लिखेंः 10

(क) शैक्षणिक यात्रा

(ख) मेरी प्रिय ऋतु

(ग) पंडित जवाहरलाल नेहरू

(घ) अनुशासन

3. वाक्य प्रयोग द्वारा लिंग निर्णय करें। 1×5 = 5

इनाम, परीक्षा, अकाल, अनुराग, आतंक

4. दो–दो पर्यायवाची लिखें। 1×5 = 5

पंक्षी, वृक्ष, राजा, गंगा, तालाब,

5. वाक्य द्वारा मुहावरों का अर्थ स्पष्ट कीजिए। 1×5 = 5

(क) मुँह लगाना

(ख) सिर घूमना

(ग) भींगी बिल्ली बनना

(घ) कान भरना

(घ) श्री गणेश करना

6. रामधारी सिंह दिनकर का कवि परिचय दीजिए। 7½

अथवा

'भारत माता ग्रामवासिनी' कविता का भावार्थ लिखिए।

7. रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा रचित 'मंगर' शीर्षक पाठ का सारांश लिखिए। 7½

अथवा

हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर के जीवन और व्यक्तित्व का जो परिचय प्रस्तुत किया है उस पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

8 . **अर्थ स्पष्ट कीजिए।** 5

जिनकी कठिन कमाई का फल खाकर बड़े हुए हो। .....

छोड़ उन्हें कायर बनकर तुम भाग बसे निर्जन में।।

अथवा

दुनिया देखी पर कुछ न मिला, तुझको देखा सब कुछ पाया

संसार–ज्ञान की महिमा से, प्रिय की पहचान

कहीं सुन्दर तेरी मुस्कान कहीं सुन्दर।

सेट–9

उत्तर– 50 अंक

1. शीर्षक– सच्ची देशभक्ति

देशभक्त में सच्चा देशप्रेम होता है। वह अतीत पर गर्व नहीं करता, भविष्य का निर्माण भी करना चाहता है। वह सामाजिक रूढ़ियों का विरोध करता है और लोगों में सद्भाव, बहुमुखी चेतना एवं कर्मठता का विकास करता है। सच्ची देशभक्ति यही है।,

मूल अवतरण की शब्द संख्या– 95

संक्षेपण संख्या– 44

2 (क) शैक्षणिक यात्रा

छात्रों के लिए शैक्षणिक यात्रा बहुत उपयोगी होती है। यह छात्रों को विभिन्न स्थानों को देखने में समर्थ बनाती है। जब वे विभिन्न स्थानों को देखते हैं तब वे बहुत बातें सीखते हैं। शैक्षणिक यात्रा उनके ज्ञान को बढ़ाती है और उनके दृष्टिकोण को उदार बनाती है। गत वर्ष मेरे विद्यालय के प्रधानाध्यापक ने एक शैक्षणिक यात्रा की व्यवस्था की। मेरे विद्यालय के बीस छात्रों ने भाग लेने का निश्चय किया। मैं कुछ मनोरंजक स्थानों को देखने के लिए बहुत उत्सुक था। इसलिए मैंने भी यात्रा में सम्मिलित होने का निश्चय किया।

हमलोगों ने यात्रा के लिए कुछ तैयारियाँ कीं। यात्रा के लिए हमें सरकार से कुछ रूपए मिले थे। लेकिन वे हमारे खर्च के लिए पर्याप्त नहीं थे। इसलिए हमलोगों ने यात्रा के लिए रूपए दिये। हमलोगों ने किराए की छूट के लिए रेलवे के अधिकारियों के पास आवेदन–पत्र दिया। मेरे विद्यालय के प्रधानाध्यापक हमलोगों के साथ जाने को तैयार हो गए।

निष्चित तिथि को हम सब स्टेशन पर एकत्रित हुए। हम टिकट कटाकर गाड़ी की प्रतीक्षा करने लगे। जब गाड़ी आई तो हम एक डब्बे में चढ़ गए। हमारी यात्रा बहुत आनंददायक थी। अगले दिन हम दिल्ली पहुँचे।

हम एक होटल में ठहरे। हम बहुत थक गए थे। इसलिए हमलोगों ने कुछ देर तक आराम

किया। तब हम तैयार होकर बाहर निकल गए। हम दिल्ली में चार दिनों तक रहे। हमलोगों ने लाल किला, संसद भवन, रेडियो स्टेशन , कुतुब मीनार, जंतर मंतर और बिड़ला मंदिर देखा। तब हमलोगों ने आगरा के लिए गाड़ी पकड़ी। जब हम आगरा पहुँचे तब हम रात–भर के लिए एक होटल में ठहरे। चाँदनी रात थी। हमलोगों ने चाँदनी में ताजमहल के सौंदर्य का आनंद उठाया। मैनें किताबों में ताजमहल के बारे में पढ़ा था, लेकिन उसे कभी नहीं देखा था। मैं उसके सौंदर्य पर मोहित हो गया। वह चाँदनी में चमक रहा था। हमें लगता था कि जैसे वह चाँदी का बना हुआ हो। हमारे आनंद का पारावार नहीं था। हमें लगता था कि जैसे हम सौंदर्य के संसार में खो गए हों। हम बहुत देर तक ताजमहल को एकटक देखते रहे। आधी रात को हम अपने होटल में पहुँचे। अगले दिन हम फतेहपुर सिकरी गए। इस सुनसान शहर में जाने पर हमें दुःख हुआ। यद्यपि इस शहर की बनावट महान और भव्य हैं, फिर भी वे बिलकुल खाली हैं। हमें मालूम कि अकबर ने चार सौ वर्ष पहले इस शहर का निर्माण किया था। लौटते समय हमने वाराणसी में उतरकर हिंदू विश्वविद्यालय देखने गए । उसके बाद हम सब घर लौट गए।

हमारी शैक्षणिक यात्रा बहुत आनंददायक और उपयोगी रही। हमने कुछ मनोरंजक स्थानों को देखा। यात्रा से हमारा ज्ञान बढ़ा और हमारे दृष्टिकोण उदार हुए। हमलोगों ने जिन स्थानों की यात्रा की , उनके बारे में भी बहुत–कुछ सीखा। इस यात्रा से हमें अपने देश के इतिहास के बारे में जानकारी हुई। यह यात्रा अवश्य ही हमारे लिए एक आनंददायक अनुभव थी।

प्रत्येक विद्यालय को शैक्षणिक यात्राओं की व्यवस्था करनी चाहिए। जो विद्यालय शैक्षणिक यात्रा का प्रबंध नहीं करता, वह शिक्षा का आदर्श केंद्र नहीं बन सकता। सच तो यह है कि ऐसी स्थिति में बच्चों का भरपूर मनोरंजन एवं ज्ञानार्जन भी होता है।

(ख) मेरी सबसे प्रिय ऋतु

प्रत्येक ऋतु मानव जीवन को प्रभावित करती हैं। मुख्यतः हमारे देश में चार ऋतुएँ होती हैं– ग्रीष्म, वर्षा, जाड़ा और वसंत। विभिन्न ऋतुओं का अपना विशेष सौंदर्य और आकर्षण होता हैं । ग्रीष्मऋतु में मीठे आम मिलते हैं, वर्षाऋतु जलती धरती को जीवन प्रदान करती है और जाड़ा हमें आनंदित करता है। प्रत्येक ऋतु अच्छी होती है।

विभिन्न लोग विभिन्न ऋतुओं को पसंद करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी पसंद और नापसंद होती है। मैं सभी ऋतुओं में वसंतऋतु को सबसे अधिक पसंद करता हूँ। वसंत वास्तव में वर्ष की सर्वोत्तम ऋतु है। अधिकतर लोग इस ऋतु को पसंद करते हैं। यह कवियों की प्रिय ऋतु है। इसे ऋतुओं की राजा कहा जाता है।

वसंत जाड़ा के बाद आता हैं । यह फरवरी के मध्य में प्रारभ होता है और अप्रैल के मध्य तक रहता है। जब वसंत आता है तब पृथ्वी सुंदर और आकर्षक लगने लगती है। वृक्षों में नए पत्तें

निकलते हैं। प्रकृति आकर्षक लगती हैं। इस ऋतु में अनेक प्रकार के सुंदर फूल खिलते हैं। सुंदर गुलाब हमारा मन मोह लेते हैं। जब हम फुलवारी में टहलते हैं तब हम फूलों के चमकीले रंगों पर मुग्ध हो जाते हैं।

वस्तुतः, वसंत सुंदर फूलों की ऋतु है। इस ऋतु में मधुमक्खियाँ बहुत व्यस्त रहती हैं। वे मधु की खोज में एक फूल से दूसरे फूल पर जाती हैं। हम सुंदर तितलियों को उड़ते हुए देखते हैं। वे बच्चों को आकर्षित करती हैं।

वसंतऋतु के दिन बहुत आनंददायक होते हैं। वसंत में न गर्मी रहती है, न जाड़ा। यह बहुत सुखदायक होता है। यह स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा होता है ।

वसंतऋतु में मनोरम ध्वनियाँ सुनाई पड़ती हैं। फुलवारी में भनभनाती हुई मधुमक्खियाँ हमें आनंदित कर देती हैं। कोयल आनंद से पागल हो जाती है। इसके मधुर स्वर पर हम मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। प्रातःकाल हम पेड़ों पर पक्षियों को चहचहाते हुए देखते –सुनते हैं।

वसंत में फसल के खेतों में टहलना आनंददायक होता है। हरे पौधे हमारी आँखों को प्रसन्न कर देते हैं। सरसों के पीले फूल हवा में फड़फड़ाते हैं। धरती हरा वस्त्र धारण कर लेती है। वसंत इसे स्वर्ग में बदल देता है।

मैं वसंत को सबसे अधिक पसंद करता हूँ क्योंकि यह अत्यंत आनंद देता है। जाड़े की अत्यधिक ठंढ़क के कारण मैं उससे घृणा करता हूँ। ग्रीष्म की चिलचिलाती धूप से मुझे भय लगता है। मैं वर्षा के कीचड़ और गंदगी को नापसंद करता हूँ। वसंत ही मुझे आकर्षित करता है। यह असाधारण सौंदर्य और आकर्षण लाता है। इसलिए यह मुझे बहुत आनंदित करता है।

वसंत के सौंदर्य को देखकर हम अपनी चिंताओं और कष्टों को भूल जाते हैं। यदि हमें देखने के लिए आँखें हैं, सुनने के लिए कान हैं, तो हम वसंत में बहुत आनंददायक प्राप्त कर पाएँगे।

(ग) पं0 जवाहरलाल नेहरू

. भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के रूप में पंडित जवाहरलाल नेहरू पंडित मोतीलाल नेहरू के एकमात्र पुत्र थे। वे योग्य पिता के योग्य पुत्र थे। 14 नवंबर, 1889 को इलाहाबाद में उनका जन्म हुआ था। वे एक कुलीन परिवार के थे। उन्होंने घर पर ही प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की थी।

जब उनका परिवार यूरोप–भ्रमण के लिए गया तब वे इंगलैंड के हैरो नामक स्थान के स्कूल में भरती करा दिए गए। उन्होंने हैरो और कैंब्रिज में शिक्षा प्राप्त की। 1912 ई. में वे 'बार–एट–ला' हो गए। उन्होंने हिंदुस्तान लौटकर इलाहाबाद हाईकोर्ट में वकालत आरंभ की।

यद्यपि उन्होंने वकालत आरंभ की थी, तथापि उनका मन इस पेशे में नहीं लगता था। उनके

भाग्य में बड़ा आदमी होना लिखा था। वे स्वाभाविक रूप से राजनीति की ओर आकर्षित थे।

वे जल्द ही भारतवर्ष में एक प्रमुख व्यक्ति हो गए। जनता उन्हें इतना प्यार करती और आदर देती थी कि वे 1929 ई0 में इंडियन नेशनल काँग्रेस के सभापति चुने गए। उस समय से वे कई बार इंडियन नेशनल काँग्रेस के सभापति भी चुने गए।

उनका पूरा जीवन भारतवर्ष की स्वतंत्रता के लिए लड़ी गई लड़ाई का ही इतिहास हैं । मुख्य सचिव के रूप में भी उन्होंने बहुत वर्षो तक काँग्रेस की सेवा की। बहुत–सी समितियों एवं सम्मेलनों से भी उनका संबंध था। वे अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक भारतवर्ष के प्रधानमंत्री रहे।

पंडित नेहरू सत्यनिष्ठ, ईमानदार एवं प्रतापी व्यक्ति थे। उनमें आत्मविलोपन एवं समझौता करने की अद्भुत क्षमता थी। इतिहास में उनके त्याग एवं बलिदान की कोई बराबरी नहीं कर सकता। आत्मबलिदान के वे अद्वितीय उदाहरण थे। उनमें अद्भुत शक्ति एवं योग्यता थी। बुढापे में भी वे लंबा तूफानी दौरा करते थे और घंटों अपना कार्य किया करते थे। वे बड़े विद्वान थे और उन्होंने कई विद्वत्तापूर्ण पुस्तकें भी लिखीं थीं।

हिंदुस्तान की स्वतंत्रता की ध्वजा को ऊँचा रखने एवं हिंदुस्तान को यशस्वी बनाने में उनका नाम गर्व से लिया जाएगा।

(घ) अनुशासन

अनुशासन जीवन के सभी क्षेत्रों में आवश्यक है, स्कूल में या घर में, कार्यालय में या कारखाने में, खेल के मैदान में या युद्ध–क्षेत्र में, सभी जगह अनुशासन आवश्यक है। अनुशासन आवश्यक है। अनुशासन के बिना पूर्णतः अराजकता एवं अनियमितता फैल जाएगी। यही कारण है कि आज अनुशासन के पालन पर इतना जोर दिया जाता

स्कूल में अगर लड़के अनुशासनहीन हो जाएँ तो शिक्षकों के लिए स्कूल का कार्य सँभालना कठिन हो जाएगा। स्वयं लड़के कुछ नहीं सीखेंगे और शिक्षा का उद्देश्य भी पूरा नहीं होगा। इसी तरह अधीनस्थ कर्मचारी कार्यालयों एवं कारखानों में अपने वरिष्ठ पदाधिकारियों की आज्ञा न मानें तो उत्पादन एवं व्यवसाय का कार्य करना दुष्कर हो जाएगा। जरा ख्याल करें, अगर लोकसेवक अनुशासनहीन हो जाएँ और अपने इच्छानुसार कार्य करने लगें तो देश की क्या दशा होगी? तब कोई योजना एवं संगठन नहीं रहेगा। उसी तरह अगर सेना एवं आरक्षी अपने जेनरल एवं कमांडर की आज्ञा मानना अस्वीकार कर दें तो शत्रु एवं गुंडों को देश पर अपना अधिकार स्थापित करने में कुछ देर न लगेगी। इस तरह अनुशासनहीन राष्ट्र एक भी क्षण स्वतंत्र रहने की आशा नहीं कर सकता। घर एवं खेल के मैदान जैसे छोटे स्थानों में भी लोग अनुशासन के बिना कार्य नहीं कर

सकते। अगर परिवार में अनुशासन नहीं रहे तो परिवार के सभी लोग मनमाना कार्य करने लगेंगे। तब परिवार में शांति एवं व्यवस्था न रह सकेगी। खेल के मैदान में अगर खिलाड़ी खेल के नियमों एवं रेफरी की आज्ञा का पालन न करें तो खेल हो ही नहीं सकता।

. अनुशासन अच्छी चीज है और इसमें कुछ भी बुराई नहीं है। यह चरित्र का निर्माण करता है तथा एकता एवं सहयोग की भावना का विकास करता है। इसलिए यह आवश्यक है कि लड़कों को बचपन से अनुशासन सिखाया जाए। इसकी उपेक्षा कभी नही करनी चाहिए क्योंकि जीवन की सफलता का रहस्य यही है। इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता।

3. इनाम(पु0)– गौरव को क्रिकेट में इनाम मिला

परीक्षा (स्त्री0)– मेरी इंटर की परीक्षा खत्म हो गई।

शराब (स्त्री0)–बिहार में शराब बंद हो गई।

अकाल (पु0)– अकाल पड़ गया है।

अनुराग (पु0)– उसे अनुराग हो गया ।

आतंक (पु0)– जम्मू और कश्मीर में आतंक फैल गया।

4 पंक्षी, वृक्ष, राजा, गंगा, तालाब,

पंक्षी– खग, विहग

वृक्ष– पेड, विटप

राजा– नरेश, नृप

गंगा– देवनदी, भागीरथी

तालाब– सरोवर, पुष्कर

5 (क) मुँह लगाना(ढ़ीठ बनाना)– इकलौता बेटा होने का नतीजा था कि शर्मा जी ने उसे मुँह लगा रख था।

(ख) सिर धूमना (घबड़ा जाना)– अचानक साँप को रास्ते पर देखकर मेरा तो सिर घूमने लगा।

(ग) भींगी बिल्ली बनना (डर जाना)– रौशन मास्टर साहब को देखते ही भींगी बिल्ली बन जाता हैं।

(घ) कान भरना (भड़का देना)– मेरे विरोधियों ने मेरे खिलाफ आजकल विधायक जी को कान भर दिये है।

(ड़) श्री गणेश करना (शुरू करना)– श्याम नये साल में फोटो कम्पोजिंग का श्री गणेश किया।

6. ओज और उत्साह के कवि *रामधारी सिंह दिनकर* की रचनाओं में भैरवी की हुंकार और धनुष की टंकार सुनाई पड़ती है। उनकी देश भक्ति सम्बन्धी रचनाओं में चिंतन की प्रधानता मिलती है जिसमें भारतीय गौरव गरिमा का संचार हुआ है। ऐसे कवि का जन्म बिहार राज्य के मुंगेर जिला अन्तर्गत सिमरिया नामक गाँव में सन् 1908 ई0 में हुआ। वे बचपन से ही मेधावी थे। उनकी शिक्षा में अड़चनें आती रहीं। यह कहना सत्य है कि उच्च शिक्षा की अभिलाषा लिए उन्हें रोटी की तलाश में, नौकरी करनी पड़ी। लेकिन उनकी प्रतिभा सतत् गतिशील रही और एक दिन लंगट सिंह कॉलेज में स्नातकोत्तर हिन्दी–विभाग के अध्यक्ष बनाये गये। फिर 1964 ई0 में भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति बनाए गए। लेकिन 1965 ई0 में उन्होंने त्यागपत्र दे दिया। उसी वर्ष के अंत में इन्हें केन्द्रीय सरकार की हिन्दी समिति का सचिव पद दिया गया। इनकी काव्य प्रतिभा का जयघोष हर जगह सुनाई पड़ता है।

दिनकर प्रबन्ध काव्यों के रचनाकार के रूप में विशेष रूप से याद किये जाते हैं। विषमता की समाप्ति से ही युद्ध समाप्त हो सकता है– यही दृष्टि कुरूक्षेत्र का आधार हैं। 'रश्मिरथी' में युगीन संदर्भ में उपेक्षित पात्र कर्ण की कथा के माध्यम से वंचित–वर्ग की व्यथा मूर्त्त हुई है। 'उर्वशी'' दिनकर की महत्त्वाकांक्षी कृति है, जिसमें उन्होंने नये दर्शन 'कामाध्यात्म' की व्याख्या की है।

'दिनकर' के काव्य की शक्ति जीवन–मूल्यों को व्यंजित करने वाली ऐसी उक्तियों के काव्यात्मक सृजन में है जो मध्यकाल के कवियों की कविता के समान ही लाखों पाठकों की वाणी में मुखर हो उठती है। किसी वक्तव्य को कविता में रूपान्तरित करने की जैसी अद्भुत कला दिनकर को प्राप्त है, वह दुर्लभ है। यही कारण है कि दिनकर हिन्दी के लोकप्रिय कवियों में परिगणित होते रहे है। व्यापक सामाजिक सरोकार और उसी के अनुरूप ओजपूर्ण काव्य भाषा के प्रयोक्ता दिनकरजी नये भाव–बोध और नये काव्यान्दोलनों के प्रति एक सजह और स्वाभाविक लगाव अनुभव करते थे। वे दो सत्र राज्य सभा के निर्वाचित सदस्य रहे। इस तरह उच्च पदों को गौरवान्वित करनेवाले इस कवि ने मिट्टी की ओर, काव्य की भूमिका, शुद्ध कविता की खोज जैसे निबन्ध–संग्रहों और सर्वोपरि श्रेष्ठ एवं पुरस्कृत ग्रंथ संस्कृति के अध्याय के द्वारा अपनी गद्य–कला का सुन्दर प्रमाण प्रस्तुत किया है। उनकी मृत्यु सन् 1974 ई0 में हुई।

अथवा

कवि *सुमित्रानंदन पंत जी* ने गाँव को भारत की आत्मा कहा है। वे कहते हैं कि भारतीय किसान पूरा दिन खेतों में काम करता है। फिर भी गरीब और पिछड़ा हुआ है उसका आँचल हमेशा

मैला है अर्थात् वह हमेशा अभावग्रस्त रहता है। कवि ने भारतमाता के मन की कल्पना को शब्दों में पिरोकर कहा हैं कि भारतमाता अपनी संतान को दुःखी देखकर आँसू बहाती है उसके आँसू गंगा यमुना में बहने वाले जल के समान है। भारत माता यह देखकर दुःखी और उदास है कि गाँव के निवासी आज भी निर्धन, अशिक्षित हैं। उनके पास रहने के लिए घर नहीं है। वे वृक्षों के नीचे खुले में निवास करते हैं। भारत की धरती प्राकृतिक संपदा से भरी हुई है। कवि आशावादी हैं, इसलिए आशा करता है कि अहिंसा, सत्य और तप के मार्ग पर चलकर एक दिन भारतवासी अवश्य सफल होंगे। भारतमाता का स्वरूप विराट है। अपनी संतान की पीड़ा, क्लेश, अभावग्रस्तता से वह ओत–प्रोत हैं।

अन्त में कवि ने भारतमाता के जीवंत स्वरूप का चित्रण करते हुए कहा है कि आज भारतमाता की तपस्या सफल सिद्ध हुई है। अहिंसा रूपी अमृत से जन–जन के मन के भय को दूर कर अंधकार एवं भ्रम से मुक्ति दिलाने वाली भारतमाता ने जगत के जीवन को विकास के शिखर पर पहुँचा है।

7.

रामवृक्ष बेनीपुरी कलम के जादूगर कहे जाते हैं। उनकी प्रत्येक रचनाएँ पाठकों को आकर्षित करती हैं।

पाठ्य पुस्तक में 'मंगर ' बेनीपुरी जी का एक जीता जागता शब्दचित्र है– मंगर एक कृषक मजदूर था। हट्टा–कट्टा शरीर। कमर में भगवा। कंधे पर हल। हाथ में पैना। आगे–आगे बैल का जोड़ा। अपनी आवाज के हहास से ही बैलों को भगाता। खेतों की ओर सुबह–सुबह जाता।

मंगर स्वाभिमानी था। मंगर का स्वाभिमान–गरीबों का स्वाभिमान? मंगर ने किसी की बात कभी बर्दाश्त नहीं की और शायद अपने से बड़ा किसी को, मन से माना भी नहीं।

मंगर का यह हट्टा–कट्टा शरीर और उससे भी अधिक उसमें सख्त कमाऊपन था जिसमें ईमानदारी ने चार चाँद लगा दिये थें। जितनी देन में लोगों का हल दस कट्ठा खेत जोतता, मंगर पन्द्रह कट्ठ जोत लेता और वह भी ऐसा महीन जोतता कि पहली बार में ही सिराऊ मुश्किल।

मंगर को डेढ़ रोटी खाने को मिलती। तो, आधी रोटी के दो टुकड़े कर दोनों बैलों को खिला देता। महादेव मुँह ताके; और हम खाएँ–यह कैसे होगा? मंगर के लिए यह बैल नहीं, साक्षात् महादेव थे।

मंगर का स्वभाव रूखा और बेलौस रहा है; किसी से लल्लो–चप्पो नहीं, लाई– लपटाई नहीं दो टूक बातें, चौ–टूक व्यवहार। मंगर बेनीपुरी जी को बड़ा प्यार करता था।

मंगर कपड़ा भी कम ही पहनता था। हमेशा कमर में भगवा ही लपेटे रहता। मंगर को खूबसूरत शरीर मिला था। काला–कलूटा–फिर भी खूबसूरत? एक सम्पूर्ण सुविकसित मानव–पुतले का उतकृष्ट

नमुना था। उसकी लगातार मेहनत ने उसकी मांसपेशियों की स्वाभाविक ढंग पर उभार रखा था।

'सूखी हाड़ ठाठ भई भारी– अब का लदबद हे व्यापारी। वह गरीबी को अपने अक्खड़पन से धता बताये रहता। बुढ़ापे के लिए उसने कभी बचत नहीं की। कोई सन्तान भी नहीं रही, जो बुढ़ापे में उसकी लाठी का सहारा बनता। उसकी बेलौस बोली के कारण कोई उस पर दया भी नहीं करता था।

बुढ़ापे में उसकी अर्द्धांगिनी भकोलिया ने साथ दिया। मंगर भकोलिया की आदर्श जोड़ी थी। भकोलिया का रंग जमुनिया काला था। उसका स्वभाव भी मंगर से मेल खाता था। भकोलिया मंगर की पूरी ईमानदारी से सेवा करती थी। मंगर को अर्द्धांग मार गया। फिर भी उसमें उफान था ही। एक दिन उसका निधन हो गया–एक कारूणिक निधन। अच्छे लोगों को भगवान् भी जल्दी ही उठा लेता है।

बेनीपुरी जी का यह शब्दचित्र अत्यन्त चुस्त–दुरूस्त एवं प्रभावशाली बन पड़ा है। सच है– बेनीपुरी जी कलम के जादूगर थे। उनकी भाषा सहज, सरल और प्रभावपूर्ण है।

अथवा

सुप्रसिद्ध गद्यकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने :रवीन्द्रनाथ ठाकुर' शीर्षक निबन्ध में विश्वकवि के व्यक्तित्व के उन पक्षों पर दृष्टिपात किया है जो सामान्य लोगों की दृष्टि से ओझल हो जाते हैं।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की महानता का आधार समर्पित भाव से सरस्वती की साधना है। उनकी साधना का एकमात्र उद्देश्य मनुष्यता की सेवा है। यही कारण है कि बिना किसी शैक्षणिक डिग्री के होते हुए भी वह अपने स्वाध्याय, अथक् परिश्रम और व्यापक मानवीय दृष्टि के बल पर विश्वकवि के गौरव से विभूषित हुए।

उनका जन्म सन् 1861 में हुआ था। उनके पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर थे। इस परिवार में अनेक धार्मिक, दार्शनिक, साहित्य सेवी और शिल्पीकार पुरूषों ने जन्म लिया है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर बचपन में ही माता के देहानत के बाद महर्षि देवेन्द्र नाथ ठाकुर की निगरानी में आ गए। स्कूल की साधारण शिक्षा प्राप्त करने के बाद, घर पर ही रहकर शिक्षा प्राप्त करने लगे। बचपन से ही उन्होंने विचित्र बुद्धिमान होने का परिचय देना आरम्भ कर दिया। 16 वर्ष की आयु में गद्य और पद्य दोनों में बहुत अच्छी योग्यता दिखाई। वह संगीत के प्रेमी थे।

पिता को वह गीत गाकर सुनाते थे। उनके गाने से प्रसन्न होकर पिता ने उनको 'बंग देश की बुलबुल' की उपाधि दी थी। संगीत विद्या के वह पूरे ज्ञाता थे। वह गीतों के बनाने और गाने में नये–नये सुरों का प्रयोग करते थे।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर देशभक्त कवि थे। उन्होंने मातृभूमि, देशप्रेम, देशभक्त पर आधारित बहुत–सी कविताएँ लिखी हैं। उनकी कविताओं में 'गीतांजली' विश्व प्रसिद्ध है। वह साहित्य में नोबल पुरस्कार पानेवाले पहले भारतीय थे।

ज्ञान–वृद्धि के लिए उन्होंने केवल सम्पूर्ण भारत में ही भ्रमण नहीं किया, बल्कि यूरोप, अमेरिका, जापान भी घूमें। 'शान्ति निकेतन' रवीन्द्रनाथ ठाकुर की एक उत्तम यादगार है। जो आज विश्व भारती, विश्वविद्यालय बन गया है।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने सैकड़ों पुस्तकें बंगला में लिखीं है। वह अंग्रेज भाषा में लिखने की अच्छी योग्यता रखने पर भी वह देशी भाषा में लिखना अच्छा समझते थे। वह वास्तव में मानव सेवा, प्रीति, कल्याणकारी, उपकार और सरस्वती की सेवा करने की भावना से काम करने वाले महान व्यक्ति थे। उनकी रचनाएँ आज भी हमें प्रेरित करती हैं।

8. कवि कहता है– जिनकी कठिन कमाई का फल खाकर तुम बड़े हुए हो और बाधाओं में भी इस विशाल शरीर के साथ निर्भय खड़े हो, जिनके बनाये हुए वस्त्रों से तुमने अपना शरीर ढ़ँका है और सर्दी–गर्मी–वर्षा से अपने शरीर को पीड़ित होने से बचाया है, क्या उनका कुछ भी उपकार का भार तुम पर नहीं है? उनके प्रति क्या तुम्हारा कोई कर्त्तव्य नहीं है? तुम कायर के समान उन्हें दुःख की अग्नि में जलते हुए छोड़कर निर्जन वन में भाग आये हो। तुम उनके दुःखों को सुनकर केवल विचलित होते हो, किन्तु उनके दुःखों को दूर करने का प्रयास नहीं करते–यह मनुष्य जाति के लिए घोर निन्दा तथा लज्जा का विषय है । तुम शुद्ध प्रेम के मर्म तथा उसकी महिमा से परिचित हो किन्तु प्रेम–पीड़ा से तुम्हारा चित्त क्या व्याकुल नहीं होता?

अथवा

प्रस्तुत पंक्तियों में *कवि श्री गोपाल सिंह 'नेपाली'* कहते हैं कि मानव को ईश्वर ने ज्ञान, ध्यान, चेतना, साहस और सौन्दर्य प्रदान कर दिये हैं। वह कठिनाईयों में कभी पीछे नहीं हटता हैं। आगे बढ़ने और रहने का मार्ग खोज लेता हैं, जब वह कठिनाइयों और अन्धकार पर विजय प्राप्त करता है तो उसके मुँह पर मुस्कान झलकती है जो बहुत ही सुन्दर होती है। इस कविता में कवि ने मानव के हृदय की सुन्दरता को बेहतर माना है।

सेट स० – 10

हिन्दी – 50 अंक

समय: 1 घंटा 37.5 मिनट

पुर्णांक: 50

परीक्षार्थी के लिये निर्देश :

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

2. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

3. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

प्रश्न

1. संक्षेपण करें: 5

वर्तमान युग मे जिस भीषणता के साथ जीवन-संघर्ष चल रहा है, उसमें वह व्यक्ति कभी भी विजयी नहीं हो सकता, जो चुपचाप बैठ कर अति दीर्घकाल तक सोचता-विचारता रहेगा। यहाँ तो वही टिक सकता है, जिसमें कफी स्फूर्ति है, जो दूसरों को ढकेलकर आगे बढ़ सकता है; नहीं तो जो उससे ताकतवर है वह उसे किनारे ढकेल देगा और आप आगे बढ़ जायेगा। अगर तुम इस जीवन में कुछ करना चाहते हो, अगर तुम्हें अपना जीवन सफल बनाना है तो तुम्हें प्रत्युत्पन्नमति होना चाहिए, अपने निर्णय पर दृढ़ रहना चाहिए और उस पर जमकर काम करना चाहिए। जिस व्यक्ति में ये गुण पाये जाते हैं, उसमें अन्य गुणों का समावेश भी रहता हैं।

2. किन्हीं पाँच के पर्यायवाची शब्द लिखिए- 1x5 = 5

पुस्तक, नदी, हवा, दुर्गा, पेड़े, मृत्यु, विद्यालय, रात्रि

3. किन्हीं पाँच के संधि विच्छेद बनाइए। 1x5 = 5

सूर्योदय, हितोपदेश, सदैव, चयन, सज्जन, जगदीश

4. निम्नलिखित किन्हीं पाँच शब्दों के वाक्य प्रयोग द्वारा लिंग-निर्णय कीजिए। 1×5 = 5

घी, रात, कलम, पुस्तक, परीक्षा, दाँत

5. 'जीवन-संदेश' कविता के उपदेशो का वर्णन करें। 7½

अथवा

'हिमालय का संदेश' कविता में कवि ने क्या संदेश दिया, लिखिए ।

6. कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर के व्यक्तित्व पर संक्षेप में प्रकाश डालिए। 7½

अथवा

'मंगर'कौन था,पठित पाठ के आलोक में मंगर का चरित्र-चित्रण कोजिए।

7. अर्थ स्पष्ट करें :- 5

(क) रहिमन, निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय।

सुन अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहें कोय।।

अथवा

अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान बहुधा हमारे संकुचित व्यवहारों का सुधारक होता है।

8. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखें:- 10

(क) आतंकवाद

(ख) वसन्त ऋतु

(ग़) शरद ऋतु

(घ) बेरोजगारी

(ड़) महँगाई

सेट–10

उत्तर (50)

1. **शीर्षकः जीवन संघर्ष**

आज भीषण जीवन-संघर्ष चल रहा है। स्फूर्तिवान और ताकतवर लोग ही यहाँ टिक सकते हैं। जीवन में सफल होने के लिए प्रत्युत्पन्नतित्ववान दृढ़ एवं कर्मशील होना होगा। ऐसे गुण-सम्पन्न लोगों में अन्य गुण भी आ जाते है।

अवतरण में आए कुल शब्द–112

प्रयुक्त शब्द–37

2. पुस्तक- ग्रंथ,किताब

नदी- तटिनी, सरिता

हवा- वायु, समोर

पेड़- गाछ, वृक्ष

रात्रि- रात, निशा

विद्यालय- पाठशाला, स्कूल

3. सूर्योदय- सूर्य+उदय

हितोपदेश- हित+उपदेश

सदैव- सदा+ऐव

चयन- चे+ अन

सज्जन- सत्+जन

जगदीश- जगत्-ईश

4. दाँत-(पु0)- दाँत चमकता है।

घी-(पु0) -घी पिघल गया।

रात-(स्त्रो0)- रात बीत गई।

कलम-(स्त्रो0) -कलम नई है

पुस्तक-(स्त्रो0)- पुस्तक नई है, पुस्तक मोटी है।

परीक्षा-(स्त्रो0)- मेरी परीक्षा चल रही है।

5. मानव जीवन के दो पहलू है- एक भैतिक और दूसरा आधयात्मिक। भैतिक पहलू उसके बाह्य जगह की उन्नति से संबंधा रखता है और आधयात्मिक पहलू अर्न्तजगत् की उननति से। भूख, प्यास, बिलास, ऐष्वर्य आदि आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ही मानव भौतिक उन्नति की मंजिल की ओर पैर बढ़ाता है। इसी प्रकार प्रेम, सहानुभूति, दया, संयम आदि आधयात्मिक वस्तुएं है और इन्हीं की उपयुक्त साधाना से मानव अपनी आधयात्मिक उन्नति करता है। इन्हीं भावनाओं का रहस्य कवि बतलाता है और उसे कर्मक्षेत्र की ओर प्रयाग करने को प्रेरित करता है।

कवि का कहना है कि यह संसार एक कर्मस्थल है। संसार के जितने जड़ और चेतन, जंगम और सीावर पदार्थ ह, सभी अपने-अपने काम मे लगे हुए है। कोई बेकार नही- 'तुच्छ पत्र की भी स्वकर्म में कैसी तत्परता है।' इस तरह संसार के प्रत्येक प्राणी का एक-न-एक उद्देश्य होता है और

वह उद्देष्य है अधिाक-से-अधिाक सेवा करना। इसलिए संसार में मनुष्य को वैयक्तिक सुख के लिए इतना चिंतित नहो होना चाहिए, जितना कि अखिल भूमंडल के सुख के लिए।

कवि कहता है कि तुम्हारे जीवन का उद्देष्य 'पीड़ितो की सेवा करना' होना चाहिए। तुम्हारी राह में कठिनाइयों का भयंकर तफ़ान भी आवे, तब भी तुम्हें अपनी राह से विचलित नहीं होना चाहिए।

क्वि दृढ़ प्रतिज्ञ, कर्त्तव्यपरायण, आशावादी और जागरूक होने का उपदश देता है और बतलाता है कि सद्गुण, साहस, सत्य शूरता आदि विशिष्ट गुण ईश्वर ने मानवों को इसलिए दिये है कि मानव अवसर पाकर संसार के कल्याणार्थ इन गुणों का वितरण करें। इतना जरूर है कि यह संसार मनुष्य के लिए एक परीक्षा-सील है, जहाँ जीवन में कठोर प्रश्नों का सामना करना पड़ता है-

"किन्तु स्वात्मबल–विज्ञ पुरूष ही ठीक पहुँच अटकल से।

हल करते है प्रश्न सहज में अविरल मेधा–बल से।"

कवि पुनः कहता है कि तुम्हें दुखो से घबराकर वन का आश्रय नही लेना चाहिए, यह तो पलायनवादी दृष्टिकाण है। दुःख ही सुख का जनक है; सद्गुणों का पिता है। अतएव दुःखों को झेलने से आत्मबल की वृद्धि होती है। कवि लोग-कल्याण में निरत होने का उपदेश देता ह।

अथवा

"हिमालयकासंदेश" शीर्षक कविता के कवि दिनकर ह। दिनकर अतीत के गौरव गायक वर्त्तमान के सूक्ष्म दूष्टा और भविष्य के कुशल सारथी माने जाते है। प्रस्तुत कविता में इन्होंने यह बतलाने का प्रयास किया है कि मानचित्र पर मिलने वाले देश भारत का नाम नही है। भारत को केवल भूमि पर नही बल्कि मनों में स्थापित करना चाहिए। भारत तो समरसता, आनन्द, माधुर्यपूर्ण त्याग, सत्य, अहिंसा से परिपूर्ण है।

भारत एक विचार का पर्याय है जिसे पाकर मनुष्य जाग खड़ा होता है जिससे मनुष्य का उदय होता है। निसंदेह मनुष्य की सबसे बड़ी आया और दिव्यता उच्चता पवित्रता का प्रतीक भारत है। कवि कहते है कि भारत के इन्ही स्वरूपों को हमें प्रणाम करना चाहिए। भारत का नाम व्यर्थ बदनाम होने से बचाना चाहिए। 'हिमालय का संदेश' शीर्षक कविता के माधयम से इन्होने भारत के आदर्शो को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। यही इस कविता की सार्थकता और संदेश भी है।

6. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने *रवीन्द्रनाथ ठाकुर* शीर्षक निबन्ध में विश्वकवि के व्यक्तित्व के उन पक्षों पर दृष्टिपात किया है जो सामान्य लोगों की दृष्टि से ओझल हो जाते हैं।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की महानता का आधार समर्पित भाव से सरस्वती की साधाना है। उनकी साधाना का एकमात्र उद्दश्य मनुष्यता की सेवा है। यही कारण हैं कि बिना किसी शैक्षणिक डिग्री के होते हुए भी वह अपने स्वाधयाय, अथक् परिश्रम और व्यापक मानवीय दृष्टि के बल पर विश्वकवि के गौरव से विभूषित हुए।

उनका जन्म सन् 1861 में हुआ था। उनके पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर थे। इस परिवार में अनेक धार्मिक, दार्शनिक, साहित्य सेवी और शिल्पीकार पुरूषों ने जन्म लिया है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर बचपन में ही माता के देहानत के बाद महर्षि देवेन्द्र नाथ ठाकुर की निगरानी में आ गए। स्कूल की साधारण शिक्षा प्राप्त करने के बाद, घर पर ही रहकर शिक्षा प्राप्त करने लगे। बचपन से ही उन्होंने विचित्र बुद्धिमान होने का परिचय देना आरम्भ कर दिया। 16 वर्ष की आयु में गद्य और पद्य दोनों में बहुत अच्छी योग्यता दिखाई। वह संगीत के प्रेमी थे।

पिता को वह गीत गाकर सुनाते थे। उनके गाने से प्रसन्न होकर पिता ने उनका 'बंग देश की बुलबुल' की उपाधि दी थी। संगीत विद्या के वह पूरे ज्ञाता थे। वह गीतों के बनाने और गाने में नये-नये सुरों का प्रयोग करते थे।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर देशभक्त कवि थे। उन्होंने मातृभूमि, देशप्रेम, देशभक्त पर आधारित बहुत-सी कविताएँ लिखी हैं। उनकी कविताओं में 'गीतांजली' विश्व प्रसिद्ध है। वह साहित्य में नोबल पुरस्कार पाने वाले पहले भारतीय थे।

ज्ञान-वृद्धि के लिए उन्होंने केवल सम्पूर्ण भारत में ही भ्रमण नहीं किया, बल्कि यूरोप, अमेरिका, जापान भी घूमें। 'शान्ति निकेतन' रवीन्द्रनाथ ठाकुर की एक उत्तम यादगार है। जो आज विश्व भारती, विश्वविद्यालय बन गया हैं

रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने सैकड़ों पुस्तकें बंगला में लिखीं है। वह अंग्रेज भाषा में लिखने की अच्छी योग्यता रखने पर भी वह देशी भाषा में लिखना अच्छा समझते थे। वह वास्तव में मानव सेवा, प्रीति, कल्याणकारी, उपकार और सरस्वती की सेवा करने की भावना से काम करने वाले महान व्यक्ति थे।

अथवा

मंगर' बेनीपुरीजी का एक बड़ा ही विश्वासी हलवाहा था। वह था तो दरिद्र; पर दीन नहीं था। स्वाभिमान उसकी नस-नस में भरा था। वह इतना विश्वासी था और इतना डटकर काम करता था कि कहानीकार के बाबा उसे बहुत मानते थे। जहाँ दूसरे जन का एक-एक रोटी मिलती थी वहाँ मंगर को डेढ़ रोटी मिलती थी। बिना कहे सुने वह खेतों का काम बड़ी चौकसी से करता था।

'मंगर' को बेनीपुरी जी के परिवार से बड़ा स्नेह था। उसे बच्चो से बड़ा प्रेम था। वह स्वयं बेनीपुरी जी को कंधों पर ढोता था।

'मंगर' में लोभ छू न गया था। वह कहानीकार का बहुत-सारा काम करता था, उनके सामानां की रखवाली करता था, पर कभी कुछ छूता न था। इसलिए वह न केवल कहानीकार के परिवार का विश्वासपात्र था, बल्कि सबां का विश्वासपात्र था।

मंगर देखने में काला-कलूटा था, पर था खूबसूरत। खूबसूरत इस अर्थ में कि उसके शरीर का गठन बहुत सुन्दर था-उसका स्वास्थ्य अच्छा था और सच्चा सौन्दर्य तो अच्छे स्वास्थ्य मं ही निवास करता है।

मंगर की मानवता महान थी। वह मनुष्यों को प्यार करता ही था, पशुओ को भी प्यार करता था। अपनी रोटी में से आधी रोटी वह बैल को खिला देता था। बैल को वह साक्षात महादेव मानता था। कहने को तो और लोग भी बैल को महादेव कहते थे, पर मंगर उसे महादेव मानता था।

मंगर हलवाहा में हमे एक सच्चरित्र मजदूर की झाँकी मिलती है। यह सही है कि वह विद्वान नहीं है, आधुनिक सभ्यता का रंग उस पर नही चढ़ पाया है, पर उसमे जो गुण हं, वे हमारे भारतीय ग्रामों के गुण हैं हमारी मानवता के गुण हैं। अतः मजदूर होने के कारण मंगर भले ही छोटा दिख पड़ता हो, पर मानवता के नाते वह महान है।

7. प्रस्तुत दोहे में महाकवि रहीम कहते है कि यह संसार बहुत ही कुटिल है, नीच हैं कवि रहीम ने इन पंक्तियों द्वारा कहा है कि लोगों को अपनी व्यथा दूसरों के सामने प्रकट नही करनी चाहिए क्योंकि कोई व्यक्ति दुःख बाँटता नही है लेकिन उसके दुख को सुनकर उसका मजाक जरूर उड़ाता है।

अथवा

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'पंच परमेश्वर' कहानी से ली गयी है। इन पंक्तियों में लेखक ने बताया है कि पंचो में परमेश्वर का निवास होता है। जब मनुष्य को अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान होता है तो उसकी संकुचित मनोवृत्तयों समाप्त हो जाती है। उत्तरदायित्व आ जाने पर मनुष्य स्वार्थ, ईर्ष्या, पक्षपात, अज्ञानता आदि अवगुणों का त्याग कर देता है। वह अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करने में सक्षम हो पाता है।

8. **(क)** **आतंकवाद**

प्रश्न उठता है कि आतंकवाद है क्या? वस्तुतः आतंकवाद वह विचारधारा है जिसमें देश की मुख्यधारा से अलग रहकर अपनी राजनीतिक इच्छापूर्ति के लिए, तोड़-फोड़, लूट-पाट, हत्या, नरसंहार या आगजनी के कार्य लुक-छिपकर किए जाते हैं ताकि सरकार विकास कार्य न कर पाए और अन्ततः आर्थिक परेशानी एवं कानून और व्यवस्था के मोर्चे पर लगातार असफल होने से थक कर आतंकवादियों की बात मान ले।

भारत में आतंकवाद का प्रच्छन्न रूप कश्मीर में दिखाई देता है, जहाँ के कुछ लोग कश्मीर को भारत को अलग करने के लिए आतंकवादी गतिविधियों में लिप्त हैं। इस समुदाय को पाकिस्तान सरकार की शह है जो इस्लामिक राष्ट्र है और चाहता है कि कश्मीर इस्लामिक राष्ट्र का अंग बन जाए। पाकिस्तान इस कार्य के लिए अपने यहाँ आतंकवादियों को शरण भी। यही कारण है कि आये दिन भारत में नर-संहार होता है, तोड़-फोड़ होती है। वहाँ के आतंकवादियों ने ही विमान-अपहरण किया और लोकसभा परिसर में घुसकर आतंक फैलाने की चेष्टा की। मुंबई के ताज होटल में घुसकर अनेक बेकसूर लोगों की जानें लीं, गई जगह धामाके किए।

आतंकवाद के फैलने का मुख्य कारण है- गरीबी, भूखमरी, अशिक्षा आर सबसे बढ़कर धार्मिक उन्माद। भूखमरी के कारण भोले-भाले युवक-युवतियाँ धान के लोभ में तोड़-फोड़, मार-पीट के लिए तैयार होते हैं तब उनहें धार्मिक उन्माद की शराब पिलाई जाती है, जिससे वे होश-हवाश खोकर आतंकवादी गतिविधियों में लिप्त हो जाते हैं।

भारत सरकार को आतंकवाद रोकने के लिए कठोर कदम उठाने चाहिए। जैसा कि हाल में

श्रीलंका सरकार ने किया या इजरायल सरकार करती है। सीमा की नाकेबन्दी करनी चाहिए ताकि आतंकवादी न घुस पाएँ। रोजगार के अवसर बढ़ाने चाहिए और शिक्षा की पर्याप्त व्यवसाी होनी चाहिए ताकि युवक गुमराह न हों। सबसे बढ़कर ऐसे कानुन बनाए जाने चाहिए जिसके तहत आतंकवादियों को जल्द-से-जल्द कठोर दंड दिया जा सके।

जनता को भी सहयोग करना चाहिए और आतंकवादियों के सम्बन्धा में कोई भी सूचना सरकार को तत्काल देनी चाहिए। राजनीतिक दलों को भी अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए ऐसे कार्य न करने चाहिए जिसकी ओट में आतंकवादियों को छूट मिलें। यदि समय रहते शीघ्र कार्रवाई न की गई तो देश की अखंडता के लिए सबसे बड़ा खतरा दिनोदिन बढ़ता जाएगा।

(ख) वसन्त ऋतु

ऋतुएँ तो अनेक हैं लेकिन वसंत की सज-धाज निराली है। इसीलिए वह ऋतुओं का राजा, शायरों-कवियों का लाड़ला, धारती का धन है। वस्तुतः इस ऋतु में प्रकृति पूरे निखार पर होती है।

वसन्त ऋतु का प्रारंभ वसंत पंचमी से ही मान लिया गया है, लेकिन चैत और वैशाख ही वसन्त ऋतु के महीने हैं। वसन्त ऋतु का समय समशीतोष्ण जलवायु का होता हैं चिल्ला जाड़ा और शरीर को झुलसाने वाली गर्मी के बीच वसन्त का समय होता है।

वसन्त के आगमन के साथ ही प्रकृति अपना श्रृंगार करने लगती है। लताएँ मचलने लगती हैं और वृक्ष फूलों-फलों से लद जाते हैं। दक्षिण दिशा से आती मदमाती बयार बहने लगती है। आम की मँजरिये की सुगन्धा वायुमंडल को सुगन्धित कर देती है। मस्त कोयल बागों में कूकने लगती है। सरसों के पीले फूल खिल उठते हैं और उनकी भीनी-भीनी तैलाक्त गन्धा सर्वत्र छा जाती है। तन-मन में मस्ती भर जाती है। हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेज कवियों ने वसंत का मनोरम वर्णन किया है। कालिदास, वर्ड्सवर्थ, पंत, दिनकर का वसंत-वर्णन पढ़कर किसका मन आनंदित नहीं होता?

स्वास्थ्य की दृष्टि से भी वसन्त ऋतु का महत्त्व बहुत अधिाक है। न अधिक जाड़ा पड़ता है, न गर्मी। गुलाबी जाड़ा, गुलाबी धाूप। जो मनुष्य आहार-बिहार को संयमित रखता है, उसे वर्ष-भर किसी प्रकार का रोग नहीं होता है। इस ऋतु में शरीर में नये खून का संचार होता हैं वात और पित्त का प्रकोप भी शांत हो जाता है।

सबसे बड़ी बात तो यह होती है कि इस समय फसल खेतों से कटकर खलिहानों में आ जाती

है। लोग निश्चिंत हो जाते हैं। और, यह निश्चिंतता उन्हें खुशी से भर देती है। लोग ढोल-झाल लेकर बैठ जाते हैं होली के गीत उनके गले से निकलकर हवा में तैरने लगते हैं- होली खेलत नन्दलाल, बिरज में ..... होली खेलत नन्दलाल।

वसंत उमंग, आनन्द, काव्य, संगीत और सौंदर्य की ऋतु है। यह स्नेह और सौदर्य का पाठ पढ़ता है। यही कारण है कि सारी दुनिया में वसन्त की व्याकुलता से प्रतीक्षा होती है।

(ग़) शरद ऋतु

वर्षा ऋतु के जाते ही शरद ऋतु का आगमन होता है। स्वच्छ नीले आकाश में हवा के झोंकों पर उजले धूसर बादल भागे चले आते हैं।

प्रकृति नये रंगों में रंग जाती है। कास और कमल के फूल खिल उठते हैं, हरसिंगार, कुमुद, केतकी मस्ती में झूमने लगती हैं, भौंरे गूँजनं लगते हैं। पावस की कठिनाईयों से ऊब कर भागे हुए खंजन पक्षी पुनः लौट कर शरद के आगमन की पुष्टि करत हैं। नदियों ओर तालाबों का गन्दा पानी निर्मल हो जाता हैं। मछलियाँ मग्न हो कुलेल करने लगती हैं। दूबों पर मोतो जैसे ओसकण चमकने लगते हैं, धूप सुहानी लगने लगती है। शाम सपने जगाती है। खेतों में धान की सुनहली बालियाँ अटखेलियाँ करती हैं।

शरद ऋतु मं रास्ते सूख जाते हैं और ग्रामवासियों के अनेक संकट दूर हो जाते हैं। वे वर्षा से जर्जर अपने मकानों की मरम्मत करने में जुट जाते है। रबी की बुआई शुरू हो जाती है, रूका हुआ व्यापार आवागमन की सुविधा से फिर शुरू हो जाता है, देहात तथा शहरों की मंडियों में चहल-पहल फिर बढ़ जाती है।

इस ऋतु में स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। तन और मन ठीक हो तो और क्या चाहिए? सर्वत्र हँसी-खुशी का ही आलम नजर आता हैं शहर और गाँव सजने लगते हैं। क्यों न सजें? दुर्गापूजा, लक्ष्मीपूजा, दीपावली, गोवध्रन पूजा, सूर्य व्रत (छठ व्रत) और कार्तिक पूर्तिमा जैसे पर्व-त्योहार भी तो इन्हीं दिनों पड़ते हैं।

शरद ऋतु के आगमन के साथ ही हमें जाड़े का डर सताने लगता है जो गरीबों के लिए दुःखदायी होता हैं गलीचा, गुलगुले कपड़े कहाँ से लाएँगे?

(घ) बेरोजगारी

आज भारत के सामने अनेक समस्याएँ चट्टान बनकर प्रगति का रास्ता रोके खड़ी हैं। उनमें से एक प्रमुख समस्या है- बेरोजगारी। महात्मा गाँधी ने इसे समस्याओं की समस्या कहा था।

योग्यता के अनुसार काम का न होना। भारत में मुख्यतया तीन प्रकार के बेरोजगार हैं। एक वे, जिनके पास आजीविका का कोई साधान नहीं है। वे पूरी तरह खाली हैं। दूसरे, जिनके पास कुछ समय काम होता है, परंतु मौसम या काम का समय समाप्त होते ही वे बेकार हो जाते हैं। ये आंशिक बेरोजगार कहलाते हैं। तीसरे वे, जिन्हें योग्यता के अनुसार काम नहीं मिला। जैसे कोई एम0 ए0 करके रिक्शा चला रहा ह या बी0 ए0 करके पकौड़े बेच रहा है।

इस देश में रोजगार देने की जितनी योजनाएँ बनती हैं, वे सब अत्यधिाक जनसंख्या बढ़ने के कारण बेकार हो जाती हैं। एक अनार सौ बीमार वाली कहावत यहाँ पूरी तरह चरितार्थ होती है। बेरोजगारी का दूसरा कारण है-युयवकों में बाबू गिरी की होड़। नवयुवक हाथ का काम करने में अपना अपमान समझते हैं। विशेषकर पढ़े-लिखे युवक दफ्तरी जिन्दगी पसन्द करते हैं। इस कारण वे रोजगार कार्यालय की धूल ाँकते रहते हैं।

हमारी शिक्षा-प्रणाली नित बेरोजगारी पैदा करती जा रही है। व्यावसायिक प्रशिक्षण का हमारी शिक्षा में अभाव हैं चौथा कारण है- गलत योजनाएँ सरकार को चाहिए कि वह लघु उद्योगों को प्रोत्साहन दे। मशीनीकरण को उस सीमा तक बढ़ाया जाना चाहिए। जिससे कि रोजगार के अवसर कम न हों। इसीलिए गाँधीजी ने मशीनों का विरोध किया था, क्योंकि एक मशीन कई कारीगरों के हाथों के बेकार बना डालती है। सोचिए, अगर साबुन बनाने का लाइसेंस बड़े उद्योगों को न दिया जाए तो उससे हजारों-लाखों युवक यह धंन्धा अपनाकर अपनी आजीविका कमा सकते हैं।?

बेरोजगारी के दुष्परिणाम अतीव भयंकर हैं। खाली दिमाग शैतान का घर। बेरोजगार युवक कुछ भी गलत-सलत करने पर उतारू हो जाता हैं वही शान्ति को भंग करने में सबसे आगे होता हैं शिक्षा का माहौल भी वही बिगाड़ते हैं जिन्हें अपना भविष्य अन्धाकारमय लगता हैं बेकारी का समाधाान तभी हो सकता है, जब जनसंख्या पर रोक लगाई जाए। युवक हाथ से काम करें। सरकार लघु उद्योगों को प्रोत्साहन दे। शिक्षा व्यवस्था से जुड़े तथा रोजगार के अधिाकाधिाक अवसर जुटाए जाएँ।

(ड़) महँगाई

कमरतोड़ महँगाई का सवाल आज के मानव की अनेकानेक समस्याओं में अहम् बन गया हैं पिछले कई सालों से उपभोक्ता-वस्तुओं की कीमतें आसमान छू रही है।

हमारा भारत एक विकासशील देश है और इस प्रकार की अर्थव्यवस्था वाले देशों में औद्योगीकरण या विभिन्न योजनाओं आदि के चलते मुद्रा-स्फीति तो होती ही है, किन्तु आज वस्तुओं की मूल्य सीमा में निरन्तर वृद्धि और जन-जीवन अस्त-व्यस्त होता दीख रहा हैं अब तो सरकार भी जनता का विश्वास खोती जा रही है। लोग यह कहते पाए जाते हैं कि सरकार का शासन-तंत्र भ्रष्ट हो चुका है, जिसके कारण जनता बेईमानी, नौकरशाही और मुनाफाखोरी की चक्कियों तले पिस रही हैं ।

यह मंहगाई स्वतंत्रा-प्राप्ति के बाद लगातार बढ़ी है। यह भी सत्य है कि हमारी राष्ट्रोय आय बढ़ी है ओर लोगों की आवश्यकताएँ भी बढ़ी है।

हमारी सरकार द्वारा निर्धारित कोटा-परमिट की पद्धति ने दलालों के नये वर्ग को जन्म दिया है और इसी परिपाटी ने विक्रता तथा उपभोक्ता में संचय की प्रवृत्ति उत्पन्न कर दी है। प्रशासन के अधिकारी दुकानदारों को कालाबाजारी करने देने के बदले घूस और उद्योगपतियों को अनियमितता की छूट देने हेतु राजनीतिक पाटियाँ घूस तथा चन्दा वसूलती हैं।

महँगाई ने विभिन्न वर्गों के कम्रचारियों को हड़ताल-आन्दोलन करने के लिए भी बढ़ावा दिया है जिससे काम नहीं करने पर भी कर्मचारियों को वेतन देना पड़ता है। जिससे उत्पादन में गिरावट और तेयार माल की लागत में बढ़ोत्तरी होती है।

महँगाई की समस्या का अन्त सम्भव हो तो कैसे, यह विचारणीय विषय हैं सरकार वस्तुओं की कोमतों पर अंकुश लगाए, भ्रष्ट व्यक्तियों हेतु दण्ड-व्यवस्था को कठोर बनाए एवं व्यापारी-वग का कीमतें नहीं बढ़ाने को बाध्य करे। तात्पर्य यह है कि इस कमरतोड़ महँगाई के पिशाच को जनता, पूँजीपति और सरकार के सम्मिलित प्रयास से ही नियंत्रण से ही नियंत्रण में किया जा सकता हैं